सर्वसम्मति बनाने वाले नेताओं में महान अटलजी | सांवले राम-कृष्ण के देश वर्ण को लेकर दुराग्रह ? | भारत से जुड़ने का सफल प्रयोग करती इंडिगो

जनवरी 2024 मूल्य : 10 रूपये

उत्तर प्रदेश ख़बरिया

मासिक पत्रिका

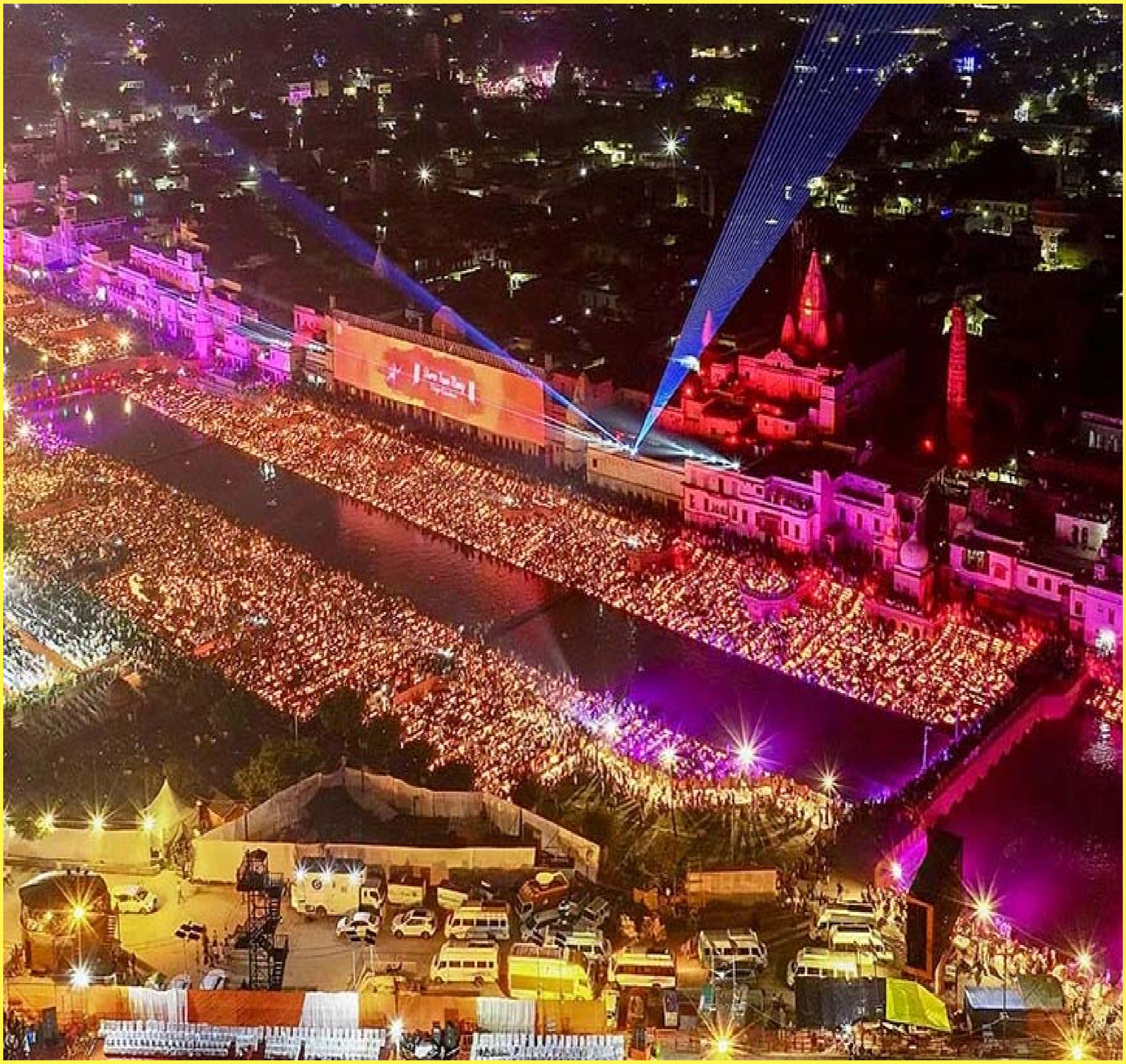

भव्य आकार लेती पुरातन अयोध्या

महाराजगंज का 'जगन्नाथ मंदिर'

जिससे जुड़ी है नेपाल के लोगों की आस्थाएं

महराजगंज (अनुराग जायसवाल)। उड़ीसा के जगन्नाथपुरी की तर्ज पर महराजगंज में भी हर साल रथ यात्रा निकलती है, जिसमें हजारों की संख्या में नेपाल से भी श्रद्धालु शामिल होते हैं। पूर्वांचल के इस मठ से भारत के साथ नेपाल के लोगों की भी आस्था जुड़ी है। यह परंपरा दस–बीस साल नहीं बल्कि दो सदी से भी ज्यादा समय से चली आ रही है।

यह मठ महराजगंज जिले में स्थित है। सिसवा क्षेत्र के बड़हरा महंथ स्थित प्राचीन भगवान जगन्नाथ मंदिर (मठ) का जगन्नाथ पुरी से सीधा संबंध है। मान्यता है कि भगवान जगन्नाथ के दर्शन मात्र से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

साल 1786 में स्थापित इस मठ के बारे में बताया जाता है कि 237 वर्ष पूर्व जगन्नाथपुरी, उड़ीसा से वैष्णव संत रामानुज दास अपने शिष्यों संग नारायण मुक्ति धाम नेपाल जाते समय यहां विश्राम के लिए रुके थे। रात्रि विश्राम के दौरान भगवान जगन्नाथ ने उन्हें स्वप्न में दर्शन देते हुए इस स्थल पर निवास करने की इच्छा जाहिर की। भगवान ने वैष्णव रामानुज दास को विग्रह (प्रतिमा) लाकर स्थापित करने का आदेश दिया। उस समय यह क्षेत्र पड़ोसी राष्ट्र नेपाल के अधीन होने के साथ दुर्गम और काफी भयावह था। भगवान के दर्शन के बाद इसे पवित्र स्थल मान जब रामानुज यहां तपस्या में लीन हो गए तो इसकी जानकारी निचलौल के राजा महादत्त सेन को हुई। राजा ने स्वयं आकर रामानुज का दर्शन किया और तपस्या का कारण जान भगवान की प्रतिमा स्थापना के लिए जमीन देते हुए मंदिर बनवाने का आदेश दिया। इसके बाद संत रामानुज दास ने जगन्नाथ पुरी की पैदल यात्रा कर वहां से विग्रह लाकर मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा की।

मंदिर के वर्तमान आठवें मठाधीश महंत संकर्षण रामानुज दास के अनुसार स्कंद पुराण में वर्णित है कि भगवान जगन्नाथ के दर्शन से मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता है। इस मंदिर में चन्दन यात्रा, स्वान यात्रा, रथ यात्रा, झूलनोत्सव, विजयादशमी, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, श्रीराम जन्मोत्सव, वामन जयंती आदि उत्सव मनाए जाते हैं। मंदिर के पूर्व मठाधीशों द्वारा प्रथम वैष्णवद्वार, द्वितीय जगन्नाथद्वार, तृतीय रामकृष्णद्वार, चतुर्थ रंगद्वार, पंचम त्रिविक्रमद्वार, षष्टम नारायण द्वार तथा सप्तम सुदर्शन द्वार का नामकरण कर भव्यता प्रदान की गई। अगला भगवान की प्रतिमा का समय–समय बदलाव कर वर्ष 1993 के दूसरी बार जुलाई 2007 में स्थापित किया गया है।

धार्मिक पर्वों के अलावा भगवान जगन्नाथ के इस मंदिर में ऐप पर पढ़ें झूलनोत्सव का विशेष महत्त्व है। श्रावण शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक झूलनोत्सव मनाया जाता है। इसमें भगवान की भव्य प्रतिमा को गर्भ गृह में रत्न जड़ित चांदी के सिंहासन पर रखा जाता है। सिर पर चांदी का मुकुट उसके ऊपर चांदी की छतरी के साथ उन्हें मखमली रेशमी वस्त्रों व विभिन्न आभूषणों से सजाया जाता है। पांच दिन तक भजन–कीर्तन, महाआरती के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। पूर्णिमा को मध्य रात्रि में विशेष आरती के उपरांत भगवान को पुनः गर्भगृह में स्थापित किया जाता है।

भगवान जगन्नाथ के प्राचीन मठ से 237 वर्षों से रथयात्रा निकालने की परंपरा चली आ रही है। आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को प्रत्येक वर लेख भगवान की रथ यात्रा निकलती है। रथयात्रा की खासियत यह है उड़ीसा के जगन्नाथपुरी की तर्ज पर यहां भी भगवान जगन्नाथ के साथ उनकी बहन सुभद्रा और भाई बलभद्र भी रथ पर आसीन रहते हैं। परंपरानुसार चौत्र शुक्ल पूर्णिमा को भगवान को सहस्त्र कराया जाता है। इसके बाद भगवान अस्वस्थ हो जाते हैं। मंदिर में गुप्त पूजा–अर्चना के अलावा कोई पूजा नहीं होती है। इसके पश्चात पुनः आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को भगवान स्वस्थ होते हैं। इसके बाद उनकी विधिवत पूजा–अर्चना, श्रृंगार कर रथ यात्रा निकाली जाती है।

उत्तर प्रदेश ख़बरिया

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 1 जनवरी 2024

मूल्य : 10 रुपये

सम्पादक

राहुल कुमार तिवारी

सम्पादकीय कार्यालय :
ग्राम व पोस्ट : जमुई पंडित, मकान नं. 191,
थाना–निचलौल, तहसील–निचलौल,
जिला–महराजगंज
पिन कोड–273207 (उ.प्र.)
मो. : 7080781772
Email ID :
upkhabariya@gmail.com

नोट–पत्रिका में जुड़े सभी पद अवैतनिक हैं। पत्रिका में प्रकाशित किसी घटना में प्रेषित स्पष्टीकरण अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र माननीय महराजगंज न्यायालय होगा।

इस अंक में

सम्पादकीय 4
इक्कीसवीं सदी में भव्य आकार लेती पुरातन अयोध्या 5
2800 साल बाद कौटिल्य को समय के मुताबिक आजमा रहा हिंदुस्तान 9
पाकिस्तान के अपने कर्मों ने ही..... 11
सर्वसम्मति बनाने वाले नेताओं में महान अटलजी 13
व्यंग्य 14
मूल निवास के सवाल 15
व्यंग्य : सुरक्षा समिति की बैठक 16
165 साल पहले निहंगों का कब्जा 17
सांवले राम-कृष्ण के देश में वर्ण को लेकर दुराग्रह क्यों ? 18
महराजगंज की राजनीति में 'बाबा' की इंट्री ने विरोधियों में हलचल ! 19
कविता : नया साल 20
बीते वर्ष में आत्मनिर्भर बनने के संकल्प.. 21
भारत से जुड़ने का सफल प्रयोग करती इंडिगो 23
सामाजिक अलगाव और आत्महत्या 25
घरेलू नुस्खे 26
कहानी : शैतान की घर 27
लघु कहानी : झुरमुट 28
कट्टरपंथी मुस्लिम शरणार्थियों से..... 29
बिना वीजा के भारतीय इन जगहों पर... 30
अब अन्य देशों की कम्पनियों का..... 31
गूगल ड्राइव से गायब हो रहे डॉक्यूमेंट्स... 32
आपकी डाक सुविधाओं को उपभोक्ता कानून का संरक्षण 33
पुस्तक समीक्षा 34

सम्पादकीय

पर्यटन संग पर्यावरण संरक्षण भी जरूरी

यह अच्छी बात है कि साल के समापन और नये साल के स्वागत से जुड़े आयोजनों व पर्यटन के लिये हिमाचल की वादियों में सैलानियों का सैलाब उमड़ा है। यह सुखद है कि मानसून की अतिवृष्टि से आहत हिमाचल में अरसे बाद पर्यटन की रंगत नजर आ रही है। होटल–गेस्ट हाउस फुल हैं। अटल टनल से लेकर सड़कों तक में कारों के काफिले ही काफिले नजर आ रहे हैं। निश्चित रूप से हिमाचल की आर्थिकी के लिये यह शुभ संकेत हैं। लेकिन इसके बावजूद हमें पहले पर्यटन के अनुरूप ढांचा भी तैयार करना है। यह अच्छी बात नहीं है कि शिमला व कुल्लू मनाली की तरफ जाने वाले हाईवे पर कारों के कई किलोमीटर लंबे जाम नजर आ रहे हैं। यह तार्किक है कि जब देश के विभिन्न भागों से लोग नया साल का जश्न मनाने पहाड़ों की तरफ आ रहे हैं तो उनकी सुख–सुविधा का ख्याल रखना भी जरूरी है। जिन स्थानों पर अक्सर जाम लगता है, वहां ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था होनी चाहिए जो पर्यटकों के लिये राहतकारी हो। आसपास जरूरी चीजों की दुकानों,पानी और प्रसाधन आदि की व्यवस्था होनी चाहिए। कहीं न कहीं वाहनों के पंजीकरण और सड़कों पर वाहनों के दबाव को नियंत्रित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। ऑनलाइन पंजीकरण के जरिये वाहनों का आगमन नियंत्रित किया जा सकता है। पर्यटन के सीजन में शासन–प्रशासन को भी पर्यटकों की सुख–सुविधा का विशेष ख्याल रखना चाहिए। प्रयास हो कि पर्यटकों से वस्तुओं के जायज दाम लिए जाएं। अक्सर देखा जाता है कि पीक सीजन में होटल मालिक पर्यटकों से मनमाने किराये वसूलते हैं। सामान के दाम भी महंगे हो जाते हैं। प्रयास हो कि बाहर से आने वाला पर्यटक राज्य से अच्छा अनुभव लेकर जाए। इसके अलावा यह भी है कि राज्य का पर्यटन विभाग राज्य के नये पर्यटक स्थलों को प्रचारित–प्रसारित करे। जिससे परंपरागत पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों का दबाव कम हो सके। साथ ही पहले ही आबादी के बोझ से चरमरा रहे हिल स्टेशनों को कुछ राहत मिल सके।

लेकिन वहीं सरकार को हाल के मानसून में अतिवृष्टि से बाढ़ व भूस्खलन की त्रासदी को याद रखना चाहिए। हमें पर्यटन को तो बढ़ावा देना चाहिए लेकिन पहाड़ के पर्यावरण को भी बचाने का प्रयास करना चाहिए। हमें तात्कालिक आर्थिक हितों के बजाय पहाड़ों के दूरगामी भविष्य को ध्यान में रखना चाहिए। पहाड़ के साथ सहजता व सामंजस्य का व्यवहार अपरिहार्य है। दरअसल, हिमालय के पहाड़ अपेक्षाकृत नये हैं,जिन पर आधुनिक विकास व निर्माण का ज्यादा बोझ नहीं डाला जा सकता। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि तमाम पर्यावरणवादी मानते रहे हैं कि ये पहाड़ फोर–लेन के लिये नहीं बने हैं। सड़कों के विस्तार के लिये जहां पहाड़ों की जड़ों को खोदा गया,वहां इस बार भूस्खलन का ज्यादा प्रकोप देखा गया। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पहाड़ हमारी विलासिता के लिये नहीं बने हैं। ये अध्यात्म के स्थल भी हैं और आस्था के केंद्र भी हैं। पर्यटक पहाड़ों पर सिर्फ मौज–मस्ती के लिये न आयें। प्रकृति के सौंदर्य का भी संरक्षण जरूरी है। वह तभी संभव है जब हमारा व्यवहार पहाड़ की संस्कृति के अनुरूप होगा। इसके लिये जरूरी है कि हम पर्यावरण व प्रकृति की गरिमा के अनुरूप व्यवहार करें। आज जब पूरा विश्व ग्लोबल वार्मिंग के घातक प्रभावों से जूझ रहा है तो देश के पर्यावरण और मौसम को प्रभावित करने वाले पहाड़ों के परिवेश का संरक्षण बेहद जरूरी है। हाल के दिनों में जोशीमठ के भूस्खलन के बाद यह बात सामने आई है कि पहाड़ जनसंख्या के बोझ से चरमरा रहे हैं। हिमाचल के कई जिले इस दृष्टि से संवेदनशील पाये गये हैं। नीति–नियंताओं को विकास व पर्यटन की दृष्टि से पहाड़ों के साथ संवेदनशील व्यवहार करना चाहिए। हमें न केवल वर्तमान को सुखदायी बनाना है बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिये पहाड़ों का पर्यावरण संरक्षित भी करना है। पहाड़ सुकून के लिये हैं, हमारी भोग– विलासिता के लिये नहीं है। यह बात सरकारों को भी ध्यान में रखनी है और पर्यटकों का आचरण भी इसके ही अनुरूप होना चाहिए।

इक्कीसवीं सदी में भव्य आकार लेती पुरातन अयोध्या

डॉ. राधेश्याम द्विवेदी

सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद साल 2020 में राम मंदिर के निर्माण की शुरुआत हुई। रामजन्म भूमि परिसर कभी 70 एकड़ का था। आज रामजन्म भूमि परिसर करीब 100 एकड़ में विस्तारित हो चुका है। विशाल परिसर की पूरी तरह सफाई कराने के बाद उसमें से दो एकड़ जमीन को मंदिर के लिए चुना गया। हजारों करोड़ की लागत से बनने वाले इस नए राम मंदिर के सज सज्जा अब अपने अंतिम चरण में है।

दो लाख श्रद्धालुओं का प्रतिदिन आना जाना संभावित : इस समय करीब 30 हजार करोड़ की परियोजनाओं पर काम चल रहा है। देश और विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं के रुकने के लिए 15 नए होटल बन रहे हैं। साथ ही 32 होटल लाइसेंस पाने की प्रकिया पूरी कर रहे हैं। इसके अलावा अन्य छोटे होटल रेस्टोरेंट गेस्ट हाउस, होम स्टे और धर्मशालाएं भी बन रही हैं। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से पहले सारे काम पूरे हो जाएंगे। राममंदिर के निर्माण के साथ जिस तरह से अयोध्या में देर भर के श्रद्धालुओं की भीड़ बढ़ी है, उससे मंदिर ट्रस्ट और प्रशासन को अनुमान है कि अगले दो सालों में रोजाना डेढ़ से दो लाख श्रद्धालु अयोध्या पहुंचने लगेंगे। बाहर से आने वाले पर्यटकों और श्रद्धालुओं को सुविधाएं मुहैया कराने को लेकर प्रयास किए जा रहे हैं।

डबल इंजन की सरकार में परिवर्तन की मुहिम : छः साल पहले योगी सरकार आने के बाद अयोध्या की तस्वीर बदलनी शुरू हुई। फैजाबाद जिला और कमिश्नरी हेडक्वार्टर का नाम हटा कर अयोध्या को यह दर्जा दे दिया गया। साथ ही अयोध्या के नाम पर निगम और विकास प्राधिकरण के नाम बदल दिए गए। यहां तक कि केंद्र सरकार के संस्थान फैजाबाद रेलवे स्टेशन और फैजाबाद डाकघर के नाम भी अयोध्या कैंट और अयोध्या डाकघर कर दिए गए। बीजेपी की डबल इंजन की सरकार के दौरान अयोध्या परिवर्तन की मुहिम यहीं नहीं रुकी।

अयोध्या की बदल रही तस्वीर : अयोध्या के भव्य राम मंदिर के निर्माण के साथ अयोध्या की तस्वीर बदल रही है। केंद्र की मोदी सरकार और यूपी की योगी सरकार दोनों के फोकस में अयोध्या है। इसके लिए केंद्र और राज्य सरकार मिलकर अयोध्या में 30,000 करोड़ से भी ज्यादा के डेवलपमेंट प्रोजेक्ट शुरू कर चुके हैं। जब से राम मंदिर के निर्माण का कार्य शुरू हुआ है और एक अस्थाई स्थान पर रामलला की मूर्ति रखी गई है, तब से दर्शन करने वालों का तांता लगा हुआ है। अयोध्या को विश्वस्तरीय नगरी बनाने के काम के साथ पूरे पूर्वांचल का भी विकास हो रहा है। कुछ व्यापारी अव्यवस्थित हुए। उनका व्यापार प्रभावित हुआ फिर भी यहां के व्यापारी और नागरिक प्रसन्न है। दिन रात काम चल रहा है। नित नित नव अयोध्या का स्वरूप निखर रहा है। शहर में स्वच्छता बढ़ा है, गलियां साफ हैं। आए दिन प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री आ रहे हैं, तो निश्चित रूप से उसका लाभ वहां के स्थानीय लोगों को मिल रहा है। हां बाहर के श्रद्धालुओं पर पाबंदियां जरूर खलती है। इक्कीसवीं सदी की नव अयोध्या रोज का रोज बदलती जा रही है।

परिवर्तन को तरस रही अयोध्या का द्रुत गति से विकास : भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 5 अगस्त, 2020 को अयोध्या में राम मंदिर की आधारशिला रखी थी। देश का राजनीतिक परिदृश्य परिवर्तित कर देने वाली अयोध्या 500 साल से परिवर्तन को तरस रही थी। पीढ़ियों

का संघर्ष अब मंदिर निर्माण के रूप में फलित हो रहा है। मात्र चार वर्ष में ही अयोध्या विकास के उस पथ पर अग्रसर है, जिसकी कल्पना मुदित करती है। संकरी गलियों के जाल से मुक्त राम लला के दरबार का विस्तार हो चुका है। कभी जेल नुमा रास्तों से राम लला के दरबार में पहुंचना पड़ता था। वर्तमान में 90 फीट चौड़ा आधुनिक सुविधाओं से युक्त पथ आस्था की राह सुगम कर रहा है। रामनगरी हर उस सुविधा से सुसज्जित हो रही है जो उसकी गरिमा के अनुकूल है। यहां के संत तो यहां तक कहते हैं कि अयोध्या का सुंदरीकरण या तो महाराज विक्रमादित्य ने कराया था, या फिर अब मोदी और योगी के युग में हो रहा है।

राम के आगमन जैसा उल्लास : रामचरित मानस की यह पंक्ति यहां साकार रूप ले रही है–''अवधपुरी प्रभु आवत जानी, भई सकल सोभा कै खानी।''

लंका विजय के बाद भगवान श्रीराम जब अयोध्या लौट रहे थे, तब उनके आगमन की खुशी में रामनगरी इस तरह सजाई गई कि शोभा की खान हो गई थी। 22 जनवरी को राम लला की नए मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा है। अयोध्या में इसका उल्लास भगवान राम के आगमन जैसा ही है।

जिस अयोध्या को कभी श्रीराम ने वैकुंठ से भी प्रिय बताया था, उसने विकास की वैसी प्रतीक्षा की है, जैसी उसने त्रेता में वनवास पर गए अपने राम के लिए की थी। सरकार के प्रयासों से रामनगरी को इस तरह सजाया और संवारा जा रहा है, जो निकट भविष्य में पूरी दुनिया को आकर्षित करेगी।

राम की भव्य पैड़ी : गंदे नाले में तब्दील हो चुकी राम की पैड़ी को करीब 50 करोड़ रुपये की लागत से सजाया गया है। यह अब आस्था के साथ पर्यटन का केंद्र बन चुकी है। यहां के पंपिंग स्टेशनों की क्षमता बढ़ाई गई है। हर शाम लेजर शो व लाइट एंड साउंड सिस्टम शो के जरिये रामकथा की प्रस्तुति आकर्षण का केंद्र होती है। रोज की शाम कुछ नया लुक दे रही है।

मठ–मंदिरों की भी आभा लौट रही है : रामनगरी की समृद्ध स्थापत्यकला व प्राचीनता के गवाह मठ–मंदिरों की भी आभा लौट रही है। करीब 65 करोड़ की लागत से रामनगरी के 37 प्राचीन मंदिरों का सुंदरीकरण कराया जा रहा है। अगले कुछ ही महीनों में ये मंदिर भक्तों को आकर्षित करते नजर आएंगे।

सौर ऊर्जा और पार्किंग में वृद्धि : बदलती अयोध्या में रामनगरी की गलियों को भी चमकाया जा रहा है। 73 करोड़ की लागत से अयोध्या धाम के 15 वार्डों की गलियों को सौर ऊर्जा से जगमग करने की योजना पर काम शुरू हो चुका है। अयोध्या में कौशलेश कुंज पर एक, टेढ़ी बाजार में दो मल्टीलेवल पार्किंग का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। यहां भक्त अपने चारपहिया व दो पहिया वाहन पार्क कर सकेंगे।

लता मंगेशकर चौक नए रूप मेंरू–

रामनगरी का नयाघाट चौराहा अब लता मंगेशकर चौक के नाम से प्रसिद्ध है। नयाघाट चौराहा पहले मात्र 30 फीट चौड़ा हुआ करता था। मेलों के दौरान यहां भीड़ नियंत्रण में पसीना छूट जाता था। वर्तमान में यह चौराहा 100 फीट चौड़ा हो चुका है। लता मंगेश्कर की स्मृति में चौक पर स्थापित 40 फीट लंबी वीणा भक्तों को आकर्षित करती है। यहां हमेशा लता मंगेशकर के भजन गूंजते रहते हैं। हर कोई इसे अपने कैमरे में कैद कर रहा है।

रामकथा संग्रहालय की उपयोगिता बढ़ी : नयाघाट स्थित रामकथा संग्रहालय वर्षों से निष्प्रयोज्य पड़ा था। अब इसे श्रीरामजन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को समर्पित कर दिया गया है। ट्रस्ट इसका नए सिरे से सुंदरीकरण कराने जा रहा है। यहां मंदिर आंदोलन का इतिहास दर्शाया जाएगा। अन्य सांस्कृतिक व धार्मिक गतिविधियां संचालित होंगी।

अंतरराष्ट्रीय रामायण वैदिक शोध संस्थान की रिमॉडलिंग : अयोध्या शोध संस्थान का नाम भी सरकार ने बदल दिया है। अब अंतरराष्ट्रीय रामायण एवं वैदिक शोध संस्थान के नाम से इसे जाना जाएगा। 17 करोड़ की लागत से इसकी रिमॉडलिंग का काम चल रहा है। यहां भगवान राम से जुड़े साहित्य पर अध्ययन होंगे। रामलीला से जुड़े लोगों को रोजगार दिया जाएगा। संस्थान में विश्व के विभिन्न भाषाओं में रचित रामायण पर आधारित ग्रंथों, पुरातन परंपरा के वैदिक मंत्रों व इन पर लिखे गए विभिन्न टीकाओं पर अनुसंधान होगा। देश व विदेश के शोध छात्रों को जोड़ा जाएगा।

प्राचीन कुंडों की लौट रही गरिमा : रामनगरी की पौराणिकता के गवाह प्राचीन कुंडों का सुंदरीकरण कराया जा रहा है। इनमें से गणेश कुंड, हनुमानकुंड, स्वर्णखनि कुंड का अस्तित्व मिटने के कगार पर था। अब ये कुंड पर्यटन का केंद्र बन चुके हैं। सूर्यकुंड पर हर शाम लेजर शो देखने के लिए भीड़ उमड़ती है। इसी तरह दंतधावन कुंड, अग्निकुंड, खर्जुकुंड, विद्याकुंड की भी गरिमा लौट रही है। ये पर्यटन का केंद्र बन चुके हैं।

श्रीरामजन्म भूमि का श्रद्धा पथ सजा : बिरला धर्मशाला वा सुग्रीव किले से श्रीराम जन्म भूमि मंदिर मार्ग तक .566 किमी का फोर लेन तैयार किया जा रहा है, जिसका नाम जन्म भूमि पथ रखा गया है। इसके निर्माण में जमीन खरीदने से लेकर अन्य निर्माण में 83.33 करोड़ का खर्च आ रहा है। राम भक्त अब अपने आराध्‍य का दर्शन जन्मभूमि पथ से कर सकेंगे। 90 फीट चौड़ा यह मार्ग आधुनिक सुविधाओं से सज्जित हो रहा है। मार्ग पर भव्य प्रवेश द्वार बन रहा है। यहां आधुनिक लाइटें लग रही हैं। मार्ग पर केनोपी का निर्माण हो रहा है। समस्त मूलभूत सुविधाएं भी विकसित की जा रही हैं। पथ के दोनों किनारों पर रामकथा के प्रसंगों से सजी दीवारें आकर्षित करेंगी।

रामपथ पर फर्राटा भरती गाडियां : सहादतगंज से नयाघाट तक 13 किलोमीटर के मार्ग को रामपथ के रूप में विकसित किया जा रहा है। यह मार्ग कभी 40 फीट चौड़ा हुआ करता था। अब 80 फीट हो गया है। इस मार्ग पर सोलर लाइट व सूर्य स्तंभ लगाए जा रहे हैं। मार्ग के डिवाइडर पर हरियाली विकसित की जा रही है। इलेक्ट्रिक बसों के लिए बस स्टॉप और पांच स्थानों पर ई–चार्जिंग स्टेशन बनाए जा रहे हैं।

धर्मपथ का कुछ अलग ही लुक : लखनऊ–गोरखपुर हाईवे से अयोध्या में प्रवेश करते ही रामजन्मभूमि का अहसास होने लगता है। साकेत पेट्रोल पंप से लता मंगेशकर चौक तक करीब दो किलोमीटर के रास्ते को धर्मपथ के रूप में विकसित किया जा रहा है। पहले यह मार्ग टूलेन था। अब फोरलेन हो चुका है। यहां 30 स्थानों पर सूर्य स्तंभ लगाए जा रहे हैं। धर्मपथ के दोनों ओर आठ–आठ मीटर पर दीवारों पर लिखे रामकथा के प्रसंग अयोध्या की महत्ता दर्शायेंगे।

सरयू नदी से लगा हुआ लक्ष्मण पथ : लक्ष्मण पथ गुप्तारघाट से राजघाट 12 किमी की दूरी तक को जोड़ने के लिए भगवान राम के छोटे भाई और शेषावतार लक्ष्मण जी के नाम पर बनने वाले इस नये वैकल्पिक मार्ग निर्माण की भी पूरी कार्ययोजना तैयार है। यह पथ फोरलेन होगा। यह पथ उदया हरिश्चंद्र घाट तटबंध के समानांतर प्रस्तावित है। तटबंधा की चौड़ाई पहले छह मीटर थी जिसे एक मीटर बढ़ाकर सात मीटर कर दिया गया है। इधर लक्ष्मण पथ की चौड़ाई 18 मीटर तय की गयी है। इसके निर्माण पर लगभग 200 करोड़ की लागत आएगी।

अंदरूनी मंदिरों को जोड़ने वाला भक्ति

पथ : श्रृंगारहाट से राममंदिर (500 मीटर) श्रृंगार हाट बैरियर से लेकर राम जन्मभूमि तक भक्ति पथ का निर्माण हो रहा है। श्रृंगारहाट से राम जन्मभूमि पर भक्तिपथ मार्ग पर निर्माण कार्य तेजी से पूरा होने वाला है। श्रृंगार हाट से श्री राम जन्म भूमि मंदिर मार्ग तक .742 किमी का फोर लेन तैयार किया जा रहा है। इसका मार्ग का नाम भक्ति पथ रखा गया है। इसके चौड़ीकरण के लिए जमीन खरीदने समेत अन्य निर्माण कार्य के लिए 62.79 करोड़ की धनराशि स्वीकृत की गई है, जिसके सापेक्ष 32.10 करोड़ रुपये की धनराशि जारी की जा चुकी है। यह मार्ग 13 मीटर चौड़ा किया जा रहा है, जिसमें 5.50 मीटर चौड़ाई सीसी रोड की भी शामिल है। इसी मार्ग पर हनुमान गढ़ी, दशरथ महल, कनक भवन, अमावा मंदिर तथा अनेक प्राचीन मंदिर बने हुए हैं।

प्रस्तावित यात्रा/भ्रमण पथ : उत्तर प्रदेश सरकार ने अयोध्या में एक सड़क परियोजना, यात्रा पथ के निर्माण को मंजूरी दे दी है जो सरयू को राम मंदिर से जोड़ेगी। यह सड़क भक्तों को राम मंदिर तक पहुंचने के लिए अधिक प्रतीकात्मक मार्ग प्रदान करता है। भ्रमण पथ राम की पैड़ी, राजघाट से गुजरेगा और राम मंदिर तक पहुंचेगा। सरयू में शामिल होने के बाद, भक्त सड़क के इस हिस्से का उपयोग करके सीधे राम मंदिर तक पहुंचेंगे ।

इंटरनेशनल एयरपोर्ट का काम आखिरी चरण में : मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम इंटरनेशनल एयरपोर्ट का निर्माण भी शुरू करवाया गया जो अब पूरा होने जा रहा है। एयरपोर्ट के डायरेक्टर के मुताबिक, दिसंबर 2023 से यहां से डोमेस्टिक उड़ानें शुरू हो रही हैं। कुछ के सिड्यूल भी आ गए हैं। कुछ की उड़ाने भी शुरू हो गई है। इसके अलावा अयोध्या से अन्य प्रदेशों और नगरों की कनेक्टिविटी बनाने के प्लान पर भी काम तेजी से चल रहा है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम इंटरनेशनल एयरपोर्ट बनाने के लिए भी राज्य सरकार ने 351 एकड़ जमीन का अधिग्रहण किया है, जिसके निर्माण के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जल्द ही (दिसंबर के अंतिम सप्ताह या जनवरी के पहले सप्ताह में) आधारशिला रखने वाले हैं।

अयोध्या का भव्य रेलवे स्टेशन : श्रीराम की नगरी अयोध्या का भव्य रेलवे स्टेशन देश का सबसे खूबसूरत और आधुनिक सुविधाओं से संपन्न रेलवे स्टेशनों में से एक हो गया है। अयोध्या रेलवे स्टेशन के विस्तार का काम 2018 में शुरू हुआ है। इसकी बिल्डिंग 10 हजार वर्गमीटर में फैली है। नया रेलवे स्टेशन भी आकार ले रहा है। पहले चरण में अयोध्या स्टेशन के विस्तार को लेकर रेलवे 240 करोड़ रुपये खर्च किया जा रहा है। इसमें खूबसूरत भवन, पार्किंग, कर्मचारियों के लिए आवास, रेलवे पुलिस के लिए कार्यालय, तीन नए प्लेटफार्मों का निर्माण, रोड निर्माण, ड्रेनेज संबंधी कार्य हो हो रहे हैं. अयोध्या रेलवे स्टेशन का काम 31 दिसंबर 2023 तक पूरा कर लिया जाएगा। नए भवन में फिनिशिंग का काम चल रहा है। यहां बुजुर्गों और महिलाओं की सुविधा के लिए लिफ्ट व एस्केलेटर, एसी वेटिंग रूम, वॉशरूम, पेयजल बूथ, फूड प्लाजा समेत अन्य सुविधाएं तैयार हो चुकी हैं। पूरे भवन को एसी बनाया गया है। दिव्यांगों के लिए रैंप की व्यवस्था होगी। स्टेशन करीब तीन किलोमीटर लंबा होगा। रेलवे स्टेशन के नए भवन का काम लगभग पूरा हो गया है। यहां लगी टाइल्स, पत्थर, शीशे, दरवाजे, लाइटिंग आदि इसकी भव्यता का एहसास कराते हैं। भवन के बीच में लगा भारी भरकम पंखा व ठीक उसके नीचे बनी फर्श की डिजाइन का आकर्षण यात्रियों का मन मोहने को तैयार है। स्टेशन का विशाल परिसर भी इसकी भव्यता का गवाह है। वंदे भारत ट्रेन अयोध्या से होकर लखनऊ तक चली है। इसके अलावा करीब आधा दर्जन नई ट्रेनें अयोध्या से होकर जाने लगी हैं। अयोध्या से रामेश्वरम के लिए भी ट्रेन चलाई गई है।

हाईवे पर बनेंगे भव्य गेट और नागरिक सुविधाएं : अयोध्या की बदली तस्वीर दिखे, इसे ध्यान में रखकर पर्यटन विभाग अयोध्या को जोड़ने वाले सुल्तानपुर, बस्ती, गोंडा, अंबेडकरनगर और रायबरेली हाईवे गेट का निर्माण कर रहा है। जहां पर्यटकों पहुंचते ही प्रभु राम के वंशज और सेवकों के नाम के बने गेट स्वागत करेंगे। जिन पाइंट पर ये गेट बन रहे हैं उसे यात्रियों के सुविधा केंद्र के तौर विकसित करने की योजना है। मसलन सस्ते होटल धर्मशाला गेस्ट हाउस के अलावा पार्किंग, चार्जिग स्टेशन और पेट्रोल पंप सब कुछ रहेगा वहां।

पर्यटकों को और लुभाने की योजना : अयोध्या में बाहर से आने वाले टूरिस्ट केवल रामलला और अयोध्या के मंदिरों में दर्शन तक ही सीमित न रह कर यहां कई दिनों तक रूकने का टूर पैकेज बनाएं। इसे ध्यान में रखकर भी कई प्राजेक्ट लांच किए जा रहे हैं। इसमें 84 कोसी परिक्रमा मार्ग पर स्थित 150से ज्यादा धार्मिक स्थलों को विकसित करने के साथ 37 कुंड और सरोवरों को टूरिस्ट सेंटर के तौर पर विकसित करने के प्लान पर काम चल रहा है। इसमें आधा दर्जन पर काम भी पूरा हो गया है। इसके साथ सरयू नदी में विहार के साथ मंदिरों के दर्शन के लिए क्रूज सेवा और रोमांचक वाटर स्पोर्ट्स सेवा भी शुरू हो गई है। अयोध्या में आइस पार्क और वैक्स म्यूजियम का प्राजेक्ट भी प्रस्तावित है जिस पर भी काम शुरू होने वाला है।

अंतरराष्ट्रीय रामकथा म्यूजियम : अयोध्या में पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र, अंतरराष्ट्रीय रामकथा म्यूजियम और मंदिर म्यूजियम भी बनने जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय अब राम मंदिर ट्रस्ट के अधीन हो गया है जिसे ट्रस्ट विकसित करने की योजना बना रहा है।

विश्व स्तर का बनेगा टेंपल म्यूजियम : राम मंदिर से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर टेंपल म्यूजियम भी बनाने की तैयारी है. इसके लिए 25 एकड़ भूमि राम मंदिर के इर्द–गिर्द के चार स्थानों पर चिह्नित की गई है। यह टेंपल म्यूजियम निर्माण की अलग–अलग शैली समेत देशभर के विख्यात मंदिरों की शैली पर अध्ययन करने में मदद करेगा। इस संग्रहालय में अलग–अलग शैली के मंदिरों से जुड़े पहलुओं को प्रदर्शित किया जाएगा। जैसे– मंदिर का डिजाइन, विशिष्टता, वास्तुकला, निर्माण प्रक्रिया आदि को अलग–अलग माध्यमों से समझने के लिए दीर्घा बनाई जाएगी।

चौड़ी सड़कें, रामायण काल की मूर्तियां : जो लोग कई साल बाद अयोध्या आ रहे हैं उनको इसमें प्रवेश करते ही इसका बदला स्वरूप दिखाई दे रहा है। राम मंदिर को जोड़ने वाले राम पथ भक्ति पथ और रामजन्म भूमि फोरलेन की तरह चौड़े हो गए हैं। इनके किनारे रामकथा से जुड़े म्युरल लग रहे हैं। लखनऊ गोरखपुर हाईवे पर अयोध्या बाई पास में प्रवेश करने पर डिवाइडर पर रामायण काल के पात्रों की खूबसूरत मूर्तियों के दर्शन मिलेगा। फ्लाईओवर की दीवारों पर राम कथा की पेंटिंग मिलेगी। फ्लाईओवर बनने से यहां पहुंचने पर ट्रैफिक जाम का सामना नहीं करना पड़ेगा। मेडिकल कॉलेज में 4 साल

से एमबीबीएस की पढ़ाई चल रही है। यहां अब पीजी कोर्स भी शुरू हुआ हो जो एम डी के समकक्ष है। अगले सत्र से एमडी के कोर्स भी शुरू होने जा रहे हैं। कभी उपेक्षित पड़ी अयोध्या अब विश्व स्तरीय पर्यटन नगरी के रूप में बदलती दिख रही है।

नव्य अयोध्या योजना शुरू : अयोध्या में एक और बड़ा प्राजेक्ट तैयार हुआ है नाम है ग्रीन सिटी अयोध्या जिसको सीएम योगी आदित्यनाथ दीपोत्सव के अवसर पर लांच करेंगे। यह प्रोजेक्ष्ट आधुनिक धार्मिक अयोध्या के रूप में विकसित हो रहा है। इसमें मठ—मंदिरों के साथ आवासीय भवन स्कूल कालेज विजनेस संस्थान व देश विदेश के गेस्ट हाउस भी बनेंगे। यह योजना 1400 एकड़ भूखंड पर प्रस्तावित है। जमीन का अधिग्रहण हो चुका है।

पूरे विश्व में है चर्चा का विषय : अयोध्या में कुछ ऐसे भी प्लान चल रहे हैं जिनकी चर्चा विश्व भर में है। ये हैं दीपोत्सव, फिल्मी कलाकारों की रामलीला और कोरियाई रानी हो का पार्क। अयोध्या आगे के दिनों में कैसी दिखेगी, इसका अनुमान बखूबी लगाया जा सकता है

अवध में गंगा—जमुनी तहजीब : सरयू के साथ ही अवध में गंगा—जमुनी तहजीब की धारा भी बहती है. मंदिर—मस्जिद के सदियों तक चले झगड़े के बाद अब बाबरी मस्जिद के पक्षकार रहे लोग भी चाहते हैं कि भव्य राम मंदिर जल्द बनकर तैयार हो, जिससे अयोध्या एक महत्वपूर्ण टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन सके। लगभग 5 वर्षों के अंतराल के बाद अयोध्या धाम पहुंचे हमारी टीम ने क्या देखा इसका ब्योरा आपके सामने है।

कई नए घाट बने : कई जगहों पर कूड़े—कचरे के बोझ तले दबी सरयू को अब कई नए घाट मिल गए हैं. पहले जहां प्रभु की लीला समापन की स्थली रहा गुप्तार घाट भी 'गुप्त' था वहां अब नया घाट बन गया है। लोगों के स्नान और सौंदर्यीकरण के लिए बनाई गई राम की पैड़ी नगर का प्रमुख पिकनिक स्पॉट है, जहां पर कहीं चटाई बिछाकर धूप सेंकने वाले नजर आते हैं, तो कहीं कड़ाही में पूड़ी भी तली जाती है।

कमल के फूल की आकृति वाला लोटस फाउंटेन परियोजना : विश्व पर्यटन मानचित्र पर अयोध्या को चमकाने के लिए डेढ़ सौ करोड़ की लागत से कमल के फूल की आकृति वाला मेगा फाउंटेन पार्क बनेगा. इस फाउंटेन पार्क की वास्तुकला (आकृति) भारत के राष्ट्रीय पुष्प कमल के फूल के जैसी होगी। जो भारतीय संस्कृति हिन्दू धर्म की सात प्रतिष्ठित पवित्र नदियों के रूप में फूल की सात पंखुड़िया बनती है। इस पार्क की लागत राजस्व शेयरिंग मॉडल के तहत स्वयं एजेंसी द्वारा वहन किया जाएगा। इस प्रस्तावित मेगा फाउंटेन पार्क में पानी, प्रकाश और ध्वनि के मनोरम मिश्रण के माध्यम से आगंतुकों का आध्यात्मिक अनुभव बढ़ाया जाएगा. उन्होंने आगे बताया कि यह मेगा फाउंटेन पार्क नवीनता, भव्यता, श्रद्धा, आध्यत्मिकता और आधुनिकता का एक विशिष्ट प्रतीक होगा जो शहर के समग्र मूल्य को समृद्ध करेगा। अयोध्या के लिए एक कमल फाउंटेन प्रोजेक्ट की भी योजना है, जो अगले साल के अंत तक पूरा हो जाएगा। राज्य सरकार ने इस प्रोजेक्ट के लिए ₹ 24 करोड़ की मंजूरी दी है, जिसके लिए ₹ 5 करोड़ जारी किए हैं। अयोध्या में चल रही परियोजनाओं में, कमल का फव्वारा मंदिर शहर में एक और अतिरिक्त परियोजना होगी। यह फव्वारा सरयू नदी के पास नया घाट और गुप्तार घाट के बीच 20 एकड़ भूमि पर लगाया जाएगा। प्रस्तावित फव्वारे में कमल के फूल की तरह सात पत्तियां होंगी और यह 50 मीटर तक पानी फेंकेगा। यह प्रोजेक्ट अगले साल के अंत तक पूरा हो जाएगा।जर्मन कंपनी ओसे ने फव्वारे का डिजाइन तैयार किया है।

राजर्षि दशरथ स्वायत्त राज्य मेडिकल कॉलेज : राजर्षि दशरथ स्वायत्त राज्य मेडिकल कॉलेज, अयोध्या जिले के दर्शन नगर में स्थित है। कॉलेज बैचलर ऑफ मेडिसिन एंड सर्जरी (एमबीबीएस) की डिग्री प्रदान करता है। मेडिकल कालेज में 200 बेड सुविधा इसी साल के अंत से मिलेगीस इसके लिए 21 करोड़ से नया भवन बनकर पूरी तरह तैयार है। यहां एक ही छत के नीचे मरीजों को सभी आधुनिक चिकित्सीय सुविधाएं मिलेगी और उन्हें भटकना नहीं पड़ेगास मेडिकल कॉलेज 17 एकड़ भूमि में फैला हुआ है और जिला अस्पताल अयोध्या से जुड़ा हुआ है।

राजर्षि दशरथ मेडिकल कॉलेज, दर्शन नगर के केंद्रीयकृत प्रयोगशाला में अब खून की कई आधुनिक जांचें आसानी से हो सकेंगी। इसके लिए सीएसआर फंड (कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी) के जरिए करीब 30 लाख की लागत से तीन आधुनिक मशीनें प्राप्त हुई हैं। इनका शुक्रवार को उदघाटन एमपी अयोध्या श्री लल्लू सिंह द्वारा कर दिया गया। मेडिकल कॉलेज में तेजी से बढ़ रहे मरीजों के दबाव को देखते हुए कम समय में गुणवत्तापूर्ण खून की जांच रिपोर्ट उपलब्ध कराने के लिए बायोकेमेस्ट्री एनॉलाइजर समेत कई आधुनिक मशीनों की आवश्यकता थी। इसके लिए मेडिकल कॉलेज प्रशासन ने सीएसआर फंड के जरिए कई निजी कंपनियों से संपर्क साधा था। इन महत्वपूर्ण सेवाओं के लिए कुछ कंपनियों ने हाथ बढ़ाया था। इसी कड़ी में सभी प्रक्रिया पूरी करते हुए तीन मशीन स्वीकृत हुई। प्राचार्य डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार ने बताया कि इन तीन मशीनों को शुक्रवार से क्रियाशील किया जाएगा। इन मशीनों से मरीजों के खून की जांच में सहूलियत मिलेगी।

सबसे बड़ी भगवान श्रीराम की प्रतिमा प्रस्तावित : दुनिया की सबसे बड़ी भगवान श्रीराम की प्रतिमा अयोध्या में सरयू तट किनारे बनेगी। यह प्रतिमा दुनिया की सबसे ऊंची (251 मीटर) और गुजरात में लगी सरदार पटेल की प्रतिमा से बड़ी होगी। इसमें 181 मीटर ऊंची मूर्ति, उसके ऊपर 20 मीटर छत्र व 50 मीटर का बेस होगा। इस प्रकार मूर्ति की कुल ऊंचाई 251 मीटर है। यह मूर्ति पूरी तरह से स्वदेशी होगी और इसका निर्माण उत्तर प्रदेश में ही होगी, जो सबसे भव्य मूर्ति बनेगी। निर्माण कार्य प्रारम्भ होने के बाद उसके निर्माण में करीब साढ़े तीन साल का समय लगेगा। उम्मीद है कि अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के भूमि पूजन के बाद ही मूर्ति निर्माण का काम भी शीघ्र प्रारम्भ हो जाएगा। मूर्ति 50 मीटर ऊंचे जिस बेस पर खड़ी होगी। उसके नीचे ही भव्य म्यूजियम होगा। जहां टेक्नोलॉजी के जरिये भगवान विष्णु के सभी अवतारों को दिखाया जाएगा। यहां डिजिटल म्यूजियम, फूड प्लाजा, लैंड स्केपिंग, लाइब्रेरी, रामायण काल की गैलरी आदि भी बनायी जायेंगी। इस मूर्ति के निर्माण के लिए अयोध्या में जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया भी चल रही है। अयोध्या के गांव मांझा बरहटा में ही श्रीराम की यह भव्य प्रतिमा लगेगी। जहां की 80 हेक्टेयर जमीन के अधिग्रहण की कार्रवाई वर्तमान में चल रही है। इसके लिए प्रदेश सरकार पैसा भी जारी कर चुकी है। ○

2023 रहा भारत का वर्ष, कैसे बदलते रहे अंतर्राष्ट्रीय संबंध

2800 साल बाद कौटिल्य को समय के मुताबिक आजमा रहा हिंदुस्तान

अभिनय आकाश

चाणक्य की साम, दाम, दंड, भेद वाली नीति से तो आप सभी वाकिफ हैं। लेकिन अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के सिद्धांत भी बड़े काम के हैं। इसमें निम्नलिखित रणनीतियाँ शामिल हैंरू संधि (ट्रीटी), विग्रह (संधि तोड़ना और युद्ध शुरू करना), आसन (तटस्थता), यना (युद्ध के लिए मार्च की तैयारी), सामश्रय (समान लक्ष्य रखने वालों के साथ हाथ मिलाना) और अंत में द्वैदभाव (दोहरी नीति यानी एक दुश्मन से कुछ समय के लिए दोस्ती और दूसरे से दुश्मनी)। जी20 की ऐतिहासिक सफलता के बाद भारत का डंका दुनियाभर की चौपालों पर बज रहा है। यह भारत के बढ़ते कद को दिखाता है। यह दिखाता है कि विश्व को साथ लाने में भारत की भूमिका काफी अहम है। हाल के वर्षों में दुनिया में भारत का प्रभाव काफी बढ़ा है। मोदी सरकार की अब वैश्विक खिलाड़ी बनने की बड़ी महत्वाकांक्षाएं हैं। इसके अधिक महत्व का मुख्य कारण इसकी अभूतपूर्व आर्थिक वृद्धि है, जो कुछ उतार–चढ़ाव के साथ, 2000 के दशक के अंत से सालाना औसतन 7 प्रतिशत से अधिक रही है। 2021 में 8.7 प्रतिशत की वृद्धि के साथ, भारत अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी के बाद दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बन गया है। बड़ी लीगों में खेलने या उनके एजेंडे को प्रभावित करने के भारत सरकार के महत्वाकांक्षी लक्ष्य नए नहीं हैं। वैश्विक मामलों में, राजनीतिक अभिजात वर्ग ने हमेशा भारत को शीर्ष समूह के रूप में देखा है। लेकिन अतीत में, देश अक्सर दक्षिण एशिया के क्षेत्रीय संघर्षों में फंसता रहा है।

चाणक्य के नक्शे कदम पर तलाशी राह : जवाहर लाल नेहरू ने कौटिल्य की आसन नीति अपनाई जिसका परिणाम थी गुटनिरपेक्षता और मोदी ने कौटिल्य की संधि, आसन और सामरस्य नीति का कॉकटेल तैयार किया। भारत ने 2023 में जी20 की अध्यक्षता संभाली, जिससे उसे ळ20 एजेंडा को आकार देने का अवसर भी मिला। दिल्ली में इसे एक ऐतिहासिक अवसर के रूप में देखा गया और शायद यह इस तथ्य के लिए कुछ मुआवजा सरीखा रहा जबकि दशकों से देश को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट से वंचित रखा गया है। भारत ने पिछले साल 1 दिसंबर को ळ20 की अध्यक्षता संभाली थी और देश भर के 60 शहरों में जी20 से संबंधित लगभग 200 बैठकें आयोजित की गईं थीं। जी0 समिट में सभी देशों की सहमति से घोषणापत्र भी

जारी किया गया। इसे भारत की बड़ी कूटनीतिक और राजनयिक जीत माना जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि आम सहमति की संभावना जब न के बराबर लग रही थी तब भारत की कोशिशें रंग अफ्रीका का आना लाई। इस वर्ष 1.4 अरब से अधिक की आबादी के साथ, भारत चीन को पछाड़कर दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश भी बन गया है। दिल्ली ने लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय संस्थानों (जैसे विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद) के सुधार के लिए तर्क दिया है क्योंकि वे आज की विश्व स्थिति की तुलना में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सत्ता के वितरण के अधिक अनुरूप हैं।

गुटनिरपेक्षता की परंपरा : भारत के विदेश मंत्री सुब्रह्मण्यम जयशंकर ने अपने बीते दिनों अपने बयान में कहा था कि अभी भी विश्व व्यवस्था को बहुत अधिक पश्चिमी प्रभुत्व वाला मानते हैं। उन्होंने यूरोपीय लोगों पर अपने स्वयं के मामलों को प्राथमिकता देने और इस तरह वैश्विक मुद्दों पर ध्यान न देने का आरोप लगाया। उदाहरण के लिए, गरीब देशों में रूस के खिलाफ पश्चिमी प्रतिबंधों ने ऊर्जा, भोजन और उर्वरक की कीमतों को बढ़ा दिया है और गंभीर आर्थिक समस्याएं पैदा की हैं। भारत सरकार इस प्रकार के ग्रुप के गठन का विरोध कर रही है जिसे हम शीत युद्ध के युग से जानते हैं और जो वर्तमान में एक अलग रूप में सामने आ रहा है। भारत स्वाभाविक रूप से पश्चिम का पक्ष लेने से इनकार करता है। बल्कि, दिल्ली में सरकार के मन में कई गठबंधन हैं। एक अवधारणा जो भारत की गुटनिरपेक्षता की परंपरा के साथ बिल्कुल फिट बैठती है। देश पूरी तरह से अमेरिकी खेमे में शामिल नहीं होना चाहता, उदाहरण के लिए एशिया या वैश्विक स्तर पर चीन पर सीमाएं तय करना। हालाँकि यह अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान के साथ चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड) का सदस्य है, लेकिन भारत ने संयुक्त राष्ट्र में रूसी आक्रामकता के युद्ध की निंदा करते हुए अमेरिकी और यूरोपीय दबाव के आगे घुटने नहीं टेके, बल्कि मतदान से अनुपस्थित रहे। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन यह व्यक्त करने के प्रयास में भारत सरकार के साथ अच्छे संबंध बनाए रखते हैं कि मॉस्को उतना अलग–थलग होने से बहुत दूर है जैसा कि पश्चिम अक्सर दावा करता है। वहीं, सितंबर 2022 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक में रूसी राष्ट्रपति से दो टूक शब्दों में कहा था कि 'आज का युग युद्ध का युग नहीं है।' रूस के साथ भारत के अच्छे आर्थिक संबंध न तो गुप्त रूप से और न ही पछतावे के साथ कायम हैं। देश दशकों से रूस से हथियार प्रौद्योगिकी का आयात कर रहा है और मास्को के सहयोग पर निर्भर है। यूक्रेन युद्ध के दौरान, भारत ने रूस से कम कीमतों पर तेल आयात बढ़ा दिया।

मजबूत विकल्प : भारत कई कारणों से चीन की नीतियों के बारे में वर्तमान में व्यापक संदेह से भी लाभान्वित हो सकता है। महामारी ने भारत के बढ़ते प्रभाव में योगदान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने कई लोगों को यह एहसास कराया है कि चीन पर इसकी आर्थिक निर्भरता कितनी गहरी और विविध है। चीन की आक्रामक विदेश नीति, कोरोना वायरस के संबंध में पारदर्शिता की कमी और आपूर्ति श्रृंखलाओं में गिरावट के खतरे से होने वाली उथल–पुथल के साथ–साथ प्रमुख आर्थिक क्षेत्रों में तकनीकी निर्भरता ने एक निश्चित पुनर्विचार को जन्म दिया है। विशेष रूप से कई सरकारें निर्भरता को कम करने और अपने स्वयं के समाज की लचीलापन बढ़ाने के लिए आपूर्ति श्रृंखलाओं के विविधीकरण को एक अपरिहार्य उपाय के रूप में मानती हैं। यह मिश्रित स्थिति भारत के लिए अपार अवसर प्रदान करती है। देश में अच्छी तरह से प्रशिक्षित, अंग्रेजी बोलने वाले पेशेवरों की अपनी श्रेणी में काफी संभावनाएं हैं। यह संसाधन और बढ़ते मध्यम वर्ग के साथ बड़ा भारतीय बाजार कई विदेशी निवेशकों के लिए आकर्षक है। वर्तमान आर्थिक ताकत और राजनीतिक दृढ़ संकल्प 2023 को भारत का वैश्विक वर्ष बना सकता है। लेकिन बाधाएं भी बनी रहती हैं. अपने तकनीकी रूप से उन्नत क्षेत्रों के बावजूद, भारत अभी भी एक गरीब देश है। हर साल श्रम बाजार में प्रवेश करने वाले 10 से 12 मिलियन युवाओं को पर्याप्त नौकरियां प्रदान करने और गरीबी कम करने के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था को 7 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि की आवश्यकता है। इसे कई दशकों तक चलने वाले उछाल के चरण की आवश्यकता है, जैसा कि चीन ने अनुभव किया था। यह अनुमान लगाना कठिन नहीं है कि जलवायु परिवर्तन के लिए इसका क्या अर्थ है।

ग्लोबल साउथ का लीडर भारत : विदेश नीति के मामले में मोदी सरकार अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और यूरोपीय देशों के साथ रिश्ते प्रगाढ़ करने में सफल रही। आसपास के देशों के बीच भारत की छवि जो हमेशा सकारात्मक नहीं रही थी, उसमें भी सुधार हुआ है। हालाँकि, दक्षिण पूर्व एशिया में भारत की भूमिका और स्थिति जटिल है। ग्लोबल साउथ शब्द का प्रयोग एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के विकासशील देशों के लिए किया जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, यूरोप, रूस, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे आर्थिक रूप से विकसित देशों को ग्लोबल नॉर्थ कहा जाता है। भारत ने वर्षों से संयुक्त राष्ट्र की बैठकों और सम्मेलनों सहित अंतरराष्ट्रीय मंचों पर वैश्विक दक्षिण देशों को परेशान करने वाले मुद्दों को उठाया है। अपनी स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में भारत ने तीसरी दुनिया की एकजुटता का समर्थन करते हुए, उस समय की महान शक्ति की राजनीति में उलझने से बचने के लिए विकासशील देशों के लिए पैंतरेबाजी के लिए अधिक जगह और व्यापक विकल्प सुनिश्चित करने के लिए गुटनिरपेक्ष आंदोलन का नेतृत्व किया।

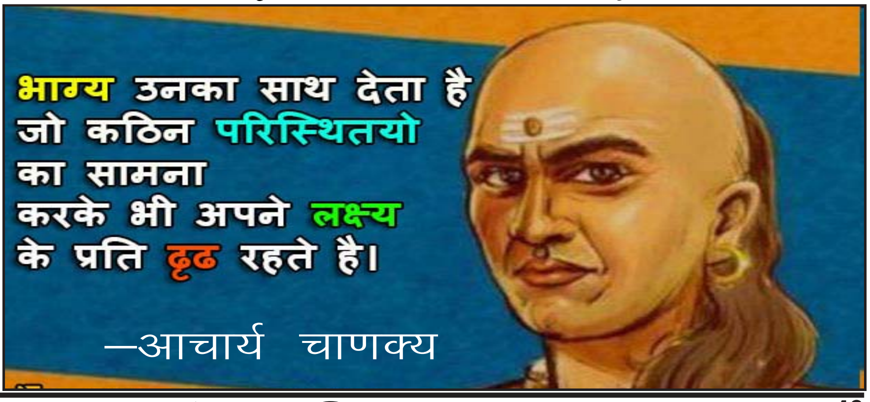

पाकिस्तान के अपने कर्मों ने ही

तालिबान को बना दिया है उसका दुश्मन

मनीष राय

हाल ही में एक नाटकीय खुलासा हुआ कि कुख्यात हक्कानी नेटवर्क के प्रमुख और तालिबान की अंतरिम सरकार में गृह मंत्री सिराजुद्दीन हक्कानी के पास पाकिस्तानी पासपोर्ट था और उसे रद्द कर दिया गया है। यह घटनाक्रम थोड़ा अजीब था क्योंकि हक्कानी नेटवर्क को पाकिस्तान का पुराना सहयोगी माना जाता है। लेकिन पिछले कुछ समय देखने में आया है की पाकिस्तान और उसके चहेते हक्कानी नेटवर्क के बीच सबकुछ ठीक नहीं है। सिराजुद्दीन हक्कानी ने पाकिस्तान की अफगान नीतियों की आलोचना की जैसे–उन्होंने अफगान शरणार्थियों को पाकिस्तान से निष्कासित करने के पाकिस्तान सरकार के फैसले को 'गैर इस्लामिक' बताया। कई विश्लेषकों का मानना है कि हक्कानी का पाकिस्तानी पासपोर्ट रद्द कर के तालिबान शासन को कड़ा संदेश देने की कोशिश की गयी। पिछले महीने अफगानिस्तान के लिए पाकिस्तान के विशेष प्रतिनिधि आसिफ दुर्रानी ने अपनी चेतावनी दोहराते हुए कहा था कि अफगानों को ष्पाकिस्तान या टीटीपी को चुनना होगाष। पिछले कुछ समय से इस्लामाबाद और काबुल के बीच तापमान बढ़ रहा है। टीटीपी पर लगाम लगाने से इंकार करके, पाकिस्तान का मानना है कि मौजूदा अफगान शासन ने पहले ही अपनी पसंद बना ली है। और अब इस्लामाबाद पाकिस्तान से लाखों अफगान शरणार्थियों को बाहर निकाल कर, प्रमुख सीमा मार्ग बंद करके और हाल के महीनों में अफगान पारगमन माल को अस्थायी रूप से रोककर अफगान तालिबान को मजबूर करने की कोशिश कर रहा है। अफगान–पाक क्षेत्र पर नजर रखने वाले कई विशेषज्ञों का मानना है कि पाकिस्तान और तालिबान के बीच संबंध, जो दशकों से करीबी सहयोगी के रहे हैं, संकट के बिंदु पर पहुंच गए हैं तनाव के और बढ़ने से दोनों देशों के सुरक्षा और आर्थिक हितों को नुकसान हो सकता है।

पाकिस्तानी सेना के अनुरोध पर अफगान तालिबान ने टीटीपी और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थ के रूप में काम किया और काबुल में शांति वार्ता की मेजबानी की। हालाँकि, टीटीपी के साथ बातचीत के दौरान पाकिस्तान ने जो दोहरी भूमिका निभाई, उससे अफगान तालिबान नाराज हो गया।

वर्तमान में, पाकिस्तान और अफगान तालिबान के बीच विवाद का मुख्य कारण तहरीक–ए–तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) है जिसे पाकिस्तानी तालिबान के नाम से अधिक जाना जाता है, लेकिन अन्य कारण भी हैं जो द्विपक्षीय संबंधों को खराब करने में योगदान दे रहे हैं। आइए इन पर एक नजर डालें।

गहरा अविश्वास : तालिबान पाकिस्तान के प्रतिनिधि के रूप में काम करना या दिखना भी नहीं चाहता। उन्हें अब पाकिस्तानी सरकार विशेषकर उसके सैन्य प्रतिष्ठान पर भरोसा नहीं है, क्योंकि अमेरिकी दबाव के कारण वह जल्द ही दुश्मन बन गया और तालिबान नेताओं को संयुक्त राज्य अमेरिका को सौंपने की हद तक चला गया। पाकिस्तान के इस विश्वासघात को तालिबान ने हमेशा याद रखा और नाराजगी जताई। जब अमेरिकी सेनाएं अफगानिस्तान में थीं, तब तालिबान ने राजनीतिक सुविधा और पनाहगाहों की आवश्यकता के कारण पाकिस्तान के साथ संबंध बहाल किए और बनाए रखे। लेकिन अब पनाहगाहों की जरूरत नहीं है, इसलिए तालिबान को अपने अस्तित्व के लिए पाकिस्तान पर निर्भर रहने की कोई जरूरत नहीं है।

सीमा विवाद– पाकिस्तान और अफगान तालिबान के बीच तनाव का एक और महत्वपूर्ण कारण अफ–पाक सीमा है जिसे आमतौर पर डूरंड रेखा के रूप में जाना जाता है। तालिबान, सभी पूर्ववर्ती अफगान सरकारों की तरह, डूरंड रेखा को दोनों देशों के बीच की सीमा के रूप में मान्यता देने के लिए तैयार नहीं है। वास्तव में, पाकिस्तानी सेना और तालिबान बलों के बीच सीमा पर झड़पों की एक श्रृंखला हुई है, एक ऐसा घटनाक्रम जिसने शुरू में कई लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया था।

पाकिस्तान द्वारा शांति वार्ता का शोषण : पाकिस्तानी सेना के अनुरोध पर अफगान तालिबान ने टीटीपी और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थ के रूप में काम किया और काबुल में शांति वार्ता की मेजबानी की। हालाँकि, टीटीपी के साथ बातचीत के दौरान पाकिस्तान ने जो दोहरी भूमिका निभाई, उससे अफगान तालिबान नाराज हो गया। पाकिस्तान ने टीटीपी के वरिष्ठ कमांडरों को बातचीत की मेज पर लाने के लिए बातचीत का इस्तेमाल एक जाल के रूप में किया और अफगानिस्तान के अंदर उनमें से कई को निशाना बना के मारा गया।

पाकिस्तान का आर्थिक ब्लैकमेल : पाकिस्तान हमेशा से चाहता है कि अफगानिस्तान आर्थिक रूप से उस पर निर्भर रहे। अफगानिस्तान एक जमीन से घिरा देश है और इसका अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पाकिस्तान के कराची बंदरगाह के माध्यम से होता है। अफगानों की इस निर्भरता को पाकिस्तान पहले भी कई बार ब्लैकमेलिंग और दबाव बनाने के लिए एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल कर चुका है। हाल ही में पाकिस्तानियों ने अफगानिस्तान जाने वाले आयात से भरे हजारों कंटेनरों के पारगमन को अस्थायी रूप से रोक दिया था, जो महीनों से कराची के बंदरगाह शहर में फंसे हुए थे। वैकल्पिक अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्ग खोलने के लिए तालिबान ने देश के दक्षिण–पूर्व में स्थित ईरान के रणनीतिक चाबहार बंदरगाह तक पहुंच के लिए ईरानियों से संपर्क किया है।

रणनीतिक विविधता : तालिबान शासन क्षेत्र के सभी महत्वपूर्ण प्रमुख शक्तियों के साथ कामकाजी संबंध स्थापित करके अपने भूराजनीतिक पोर्टफोलियो में विविधता लाना चाहता है। यही कारण है कि तालिबान ने पारंपरिक रूप से अपेक्षाकृत मधुर भारत–अफगानिस्तान संबंधों को फिर से स्थापित करने की कोशिश की है। तालिबान अधिकारियों (जिनमें कभी भारतीय ठिकानों पर हमलों में शामिल लोग भी शामिल थे) ने भारतीय कंपनियों से रुकी हुई बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर काम फिर से शुरू करने का अनुरोध किया है, जिस पर नई दिल्ली सक्रिय रूप से विचार कर रही है। इससे पाकिस्तानी नीति निर्माताओं में चिंता बढ़ रही है।

काबुल में अत्यधिक निर्भर सरकार बनाने का इस्लामाबाद का दीर्घकालिक उद्देश्य अब अंततः धराशायी हो गया है। जैसा कि वर्तमान में सत्तारुढ़ तालिबान शासन के साथ है, जो पाकिस्तान को कोई रणनीतिक लाभ प्रदान करने या सुरक्षा में योगदान देने के बजाय, इस्लामाबाद के लिए एक चिंताजनक राह का कांटा बन गया है। अफगान तालिबान को मजबूर करने के लिए पाकिस्तान अफगान शरणार्थियों को बाहर निकालने जैसे एकतरफा फैसले ले रहा है, लेकिन इन कदमों से काबुल में पाकिस्तान के लिए अभी भी बची हुई थोड़ी–सी राजनयिक सद्भावना खत्म हो जाएगी। दूसरी ओर, यह अफगानिस्तान में पहले से ही व्याप्त पाकिस्तान विरोधी जनमत को और भी प्रबल करेगा। इस्लामाबाद में नीति निर्माताओं को यह स्वीकार करना चाहिए कि उनकी अफगान नीति बुरी तरह विफल रही है और इसमें सुधार की आवश्यकता है।

चिकित्सक एक से अधिक जगह नहीं कर सकेंगे काम

प्रयागराज। अब कोई भी चिकित्सक एक से अधिक संस्थानों में काम नहीं कर पाएगा। नए नियम के अनुसार सभी निजी चिकित्सालयों के गेट पर साइनेज लगाकर अपने यहां कार्यरत डॉक्टर सहित अन्य स्टॉफ की जानकारी देनी होगी। इस निर्देश को जल्द से जल्द तामील में लाना अनिवार्य होगा। ऐसे में उन चिकित्सकों को ज्यादा परेशानी होने वाली है, जो सरकारी वेतन के अलावा प्राइवेट अस्पताल खोलकर दोहरा मजा लूट रहे हैं। शासन की तरफ से हाल ही में प्रदेश के सभी मुख्य चिकित्साधिकारियों को पत्र जारी करके प्राइवेट अस्पतालों में साइनेज लगाने का निर्देश जारी किया है। जिसके बाद सीएमओ की तरफ से यह पत्र सभी निजी चिकित्सालयों के संचालकों को भेजा गया है। इस नियम के अनुसार जनपद के सभी चिकित्सालयों, जिनमें 50 से अधिक बेड हैं और पंजीकरण नेशनल क्लीनिकल स्टैब्लिशमेंट पोर्टल पर एवं 50 बेड से कम हैं और पंजीकरण जनहित गारंटी पोर्टल पर है। उन्हें यूपी क्लीनिक स्टैब्लिशमेंट (रजिस्ट्रेशन एंड रेगुलेशन) नियम के आधार पर हेल्थ फैकेल्टी का रजिस्ट्रेशन नंबर, संचालक का नाम, बेड की संख्या, औषधि की पद्धति एवं चिकित्सालय द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं तथा चिकित्सा कर्मचारीवृद (चिकित्सक, नर्स आदि) का विवरण 15 वर्गफुट का एक डिस्प्ले बोर्ड जिसका बैकग्राउंड पीला एवं फारमेट हिन्दी अक्षर रंग काला के अनुसार (प्रारूप संलग्न) स्पष्ट अक्षरों में चिकित्सालय के मुख्य द्वार के पास लगाना होगा। इसकी जानकारी चिकित्सालयों की तरफ से जिले के एनआईसी पोर्टल पर अपलोड अनिवार्य रूप से किया जायेगा। इन सभी साइनेज को जल्द से जल्द अस्पतालों के मुख्य द्वार पर लगाने का निर्देश जारी किया गया है।

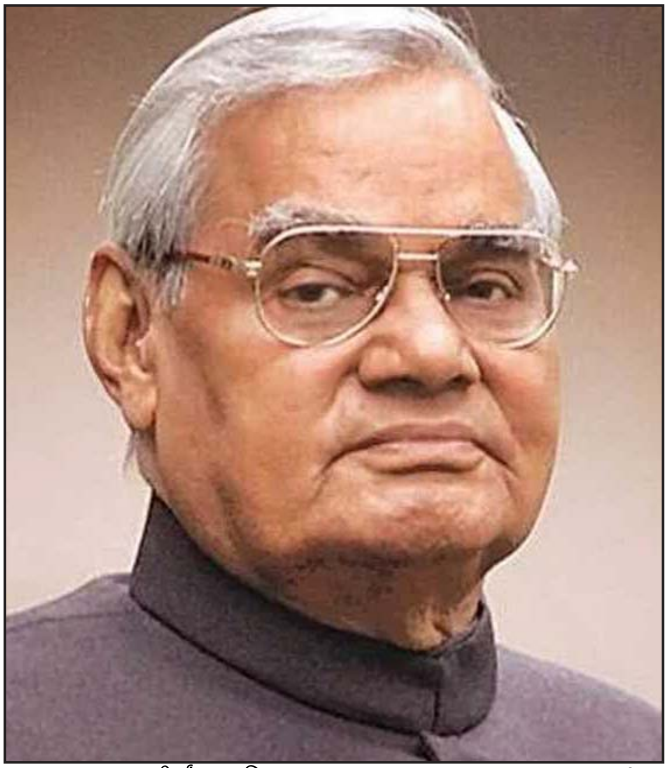

सर्वसम्मति बनाने वाले नेताओं में महान थे

अटल बिहारी वाजपेयी

तीर्थंकर मित्र

संभवतः बहुत कम नेताओं ने यह समझा कि लोकतंत्र मतभेदों के साथ–साथ चलता है, हालांकि इस प्रक्रिया में, लोगों के प्रतिनिधियों के बीच किसी भी तरह की मित्रता को खोने की जरूरत नहीं है। केवल कुछ मुठ्ठी भर लोग ही ऐसे थे जो विविधता का बहुत सम्मान करते थे। वाजपेयी समझते थे कि भारत बेजोड़ विविधता का देश है। यह उसके भूगोल, सामाजिक संरचना, राजनीतिक परिदृश्य और उसके सांस्कृतिक जीवन में परिलक्षित होता है।

ऐसे बहुत से नेता नहीं हैं जिन्हें उनके अनुयायी और राजनीतिक विरोधी तब भी आदर की दृष्टि से देखते हों, जब वे नहीं रहे हों। दिवंगत प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी इसी प्रतिष्ठित समूह से हैं। एक महान सर्वसम्मति निर्माता, जिनकी 99वीं जयंती 25 दिसंबर है, ने अलग–अलग राजनीतिक विचार– धाराओं के गठबंधन को एक विजयी संयोजन में बदल दिया था। इससे कोई फक+ ंनहीं पड़ता कि वह कार्यालय की मुहर लगा रहे थे या विपक्षी बेंच में बैठे थे, जब भी वाजपेयी बोलने के लिए खड़े होते थे, राजनीतिक विभाजन से ऊपर उठकर सांसद उन्हें सुनते थे।

एक महान वक्ता, यदि कभी कोई था, तो उसने संसदीय लोकतंत्र के उच्च मानकों से जरा भी विचलित हुए बिना उस राजनीतिक विचारधारा के बारे में बात की थी जिसका वह समर्थन करते थे। यह चीन नीति पर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू पर कटाक्ष कर सकते थे या दिवंगत प्रधानमंत्री के परपोते राहुल गांधी को संसद की पुरानी बातें याद दिला सकते थे, जिसके दौरान वह एक जनसंघ नेता और भाजपा के अग्रणी नेता थे। संसदीय लोकतंत्र को नुकसान पहुंचाये बिना नेहरू–गांधी परिवार की चार पीढ़ियों के सदस्यों के साथ कई बार उनका वाकयुद्ध हुआ।

संभवतः बहुत कम नेताओं ने यह समझा कि लोकतंत्र मतभेदों के साथ–साथ चलता है, हालांकि इस प्रक्रिया में, लोगों के प्रतिनिधियों के बीच किसी भी तरह की मित्रता को खोने की जरूरत नहीं है। केवल कुछ मुत्र्ठी भर लोग ही ऐसे थे जो विविधता का बहुत सम्मान करते थे। वाजपेयी समझते थे कि भारत बेजोड़ विविधता का देश है। यह उसके भूगोल, सामाजिक संरचना, राजनीतिक परिदृश्य और उसके सांस्कृतिक जीवन में परिलक्षित होता है।

इसी सराहना ने वाजपेयी को एक उत्कृष्ट राजनीतिज्ञ और महान प्रधानमंत्री बनाया। यह वही व्यक्ति थे, जिन्होंने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और उनके नेतृत्व वाली सरकार की कुछ नीतियों के प्रति अपने विरोध को दरकिनार करते हुए, 1971 के भारत–पाक युद्ध में भारत की शानदार जीत के बाद इंदिरा गांधी को 'देवी दुर्गा' के रूप में संदर्भित किया था।

उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री पर इस टिप्पणी के लिए पार्टी के अंदर की आलोचना को दरकिनार कर दिया। यह वही व्यक्ति थे जिन्होंने पहली गैर–कांग्रेसी व्यवस्था के हिस्से के रूप में उस कार्यालय के नये अधिकारी के रूप में अपना स्थान लेने के बाद विदेश मंत्री के कार्यालय की शोभा बढ़ाने वाले नेहरू के चित्र को हटाने से इनकार कर दिया था।

वाजपेयी कभी भी ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो अपने वर्तमान उत्तराधिकारी की तरह श्कांग्रेस मुक्त भारतश की बात करते हों। यह उसके लिए अहंकारपूर्ण, अनुचित और अदूरदर्शी होता। दूसरों पर पूर्ण प्रभुत्व स्थापित करना कभी भी वाजपेयीजी का गुण नहीं था। कोई भी समुदाय या संगठन ऐसा करने में कभी सफल नहीं हुआ है। प्रधानमंत्री के रूप में वाजपेयीजी का पहला कार्यकाल 13 दिनों का था। वह इस कार्यालय में 13 महीने तक बने रहने के लिए लौटे और फिर उनका एक पूर्ण कार्यकाल सभी को साथ लेकर चलने की उनकी नीति का सूचक है। यदि उनमें से कुछ, जैसे कि तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी जो बाद में अलग हो गयीं, का झगड़ा कभी भी वाजपेयी के साथ नहीं था। चाहे अपने मंत्रिमंडल में उनका स्वागत करना हो या कालीघाट में उनके खपरैल की छत वाले घर में कदम रखना हो, उनका व्यक्तित्व हमेशा आकर्षक रहा।

वाजपेयी धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखते

व्यंग्य : दुकान अच्छी चली, बस ग्राहकों की क्वालिटी गिरी

आलोक पुराणिक

साल 2023 निकल ही गया, साल कमाल रहा है, एनिमल और डंकी की खूब चर्चा रही, प्याज पर हल्ला रहा, इंसानों की चर्चा खास ना हो पायी। वो ही इंसान चर्चा में रहे, जो इंसान होने के साथ साथ नेता भी थे, यू नेताओं से इंसानियत की उम्मीद बेकार है फिर भी चर्चा में नेता ही रहे।

राजस्थान में गहलोत की पार्टी हार गयी, मध्यप्रदेश में कमलनाथ की पार्टी हार गयी, राजस्थान और मध्यप्रदेश में कांग्रेस हार गयी, यह बात चुनाव आयोग ने कही। पर यह बात मानने से इनकार कर दिया कई बुद्धिजीवियों ने, कई एक्सपर्ट ने। इन्होने बताया कि कांग्रेस हारी नहीं है कांग्रेस तो मजबूती से जमी हुई है। इस तर्क से 2014 से अब तक कांग्रेस हारी ही नहीं है। राजनीति मजे का धंधा है, कुछ भी कोई भी साबित कर सकता है। कोई दुकान हो, वहां ग्राहक कम आयें, तो कारोबारी समझ सकता है कि धंधा मंदा जा रहा है। पर पालिटिक्स के एक्सपर्ट अलग हैं। दुकान का धंधा मंदा हो जाये, कस्टमर कम हो जायें, तो एक्सपर्ट दुकान के मालिक को बता सकते हैं—सर हमारी क्वालिटी बहुत शानदार हो गयी है। दरअसल, अच्छी क्वालिटी को समझने वाले लोग तो बहुत कम होते हैं। आप समझिये न टॉप क्लास क्लासिकल म्यूजिक सुनने वाले कितने कम होते हैं। अब हमारा आइटम इतनी क्वालिटी वाला है कि लोगों की समझ में नहीं आ रहा है। तो इसका मतलब यह है कि हमारी क्वालिटी तो वैसे ही वैसी है, बस यूं समझिये कि ग्राहकों की क्वालिटी डाउन हुई है। ग्राहकों की क्वालिटी गिरी है।

समझदार दुकानदार होगा तो ऐसे एक्सपर्ट को लात मारकर भगा देगा कि भाई तू क्या कर रहा है दुकान बंद हो रही है और तू मेरे ईगो को सहला रहा है कि ग्राहकों की क्वालिटी डाऊन है, हम तो टापमटाप हैं। भाई हम आइटम बेच रहे हैं,अगर हमारे ग्राहक भी क्लासिक सुननेवाले जितने रह गये, हमारी तो दुकान बंद हो लेगी।

पर राजनीति की दुकान में सारे समझदार न होते। सच्चा

दुकानदार जानता है कि कस्टमर कभी घटिया न होता, कस्टमर की दो ही वैरायटी होती है—एक वो जो आपकी दुकान पर आता है, दूसरा वह जो आपकी दुकान नहीं आता। समझदार दुकानदार की कोशिश होती कि जो कस्टमर दुकान में नहीं आ रहा है, वैसे कैसे आये। पर यह बात हर नेता नहीं जानता। इसलिए ऐसे नेताओं की दुकान बंद हो जाती है। जिन नेताओं की दुकान बंद हो जाती है, वो दूसरे राजनीतिक दलों के एडवाइजर बन जाते हैं।

2023 में हिंदी साहित्य की गति वैसी ही रही, जैसी 2022 में थी—पाठक उतने ही रहे, जितने पहले थे। कवि एक दूसरे को कविता सुना कर खुश होते रहे और आम पाठक के बारे में वही बात करते रहे जो कई बंद राजनीतिक दुकानों के मालिक करते थे— पाठक घटिया है।

थे। और यह अल्पसंख्यक वोटों को हथियाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली धर्मनिरपेक्षता से भिन्न था। न ही यह धर्मनिरपेक्षता का कोई ब्रांड था जो किसी धार्मिक समुदाय को बदनाम करता हो। यह अपने आप में सहज था जो लोकतंत्र और विविधता का स्वाभाविक परिणाम था। वाजपेयी ने कभी भी अपने हिंदू होने को स्वीकार करने से इनकार नहीं किया।

फिर भी उनके कुछ राजनीतिक विरोधियों ने इसे नजरअंदाज कर दिया, जिन्होंने भाजपा पर सांप्रदायिक पार्टी के रूप में हमला करना कभी नहीं छोड़ा। वे इस बात से अनभिज्ञ थे कि उनके भाषण से भाजपा को अधिक से अधिक हिंदू वोट जुटाने में मदद मिली। यह वाजपेयीजी की दूरदर्शिता का प्रतीक है कि उन्होंने 1980 में भाजपा की स्थापना के समय उसकी वैचारिक प्रतिबद्धताओं में से एक के रूप में 'सकारात्मक धर्मनिरपेक्षता' को शामिल करने पर जोर दिया था। किसी भी सच्चे हिंदू की तरह वह कभी भी इस्लाम विरोधी नहीं थे।

1998 के परमाणु परीक्षण ने वाजपेयीजी का सख्त पक्ष दिखाया। फिर कारगिल युद्ध आया जब अपनी सरकार के मुखिया के रूप में उन्होंने दुश्मन को हराने और वापस खदेड़ने में पूरी तरह से सेना का समर्थन किया।

युद्ध के महज एक साल पहले वह लाहौर जाने वाली बस में थे। वाजपेयी ने कहा था कि कोई भूगोल नहीं बदल सकताय उसने एक दुश्मन से दोस्ती करने की कोशिश में इतिहास बदलने की कोशिश की। यह वही व्यक्ति थे, जो कुछ साल पहले नरसिम्हा राव सरकार के साथ थे, जब भारत को पाकिस्तान की साजिशों को हराने के लिए संयुक्त राष्ट्र में एक मजबूत और एकजुट आवाज की जरूरत थी।

शब्दों के विशेषज्ञ, वाजपेयीजी इस काम के लिए सही व्यक्ति थे, जो अपनी भाषा को संगठित कर सकते थे और अपने देश के लिए स्थितियों को लाभप्रद मोड़ दे सकते थे। उन्हें विपक्ष में बैठने और प्रधानमंत्री कार्यालय को सुशोभित करने वाले सबसे रहस्यमय नेताओं में से एक के रूप में याद किया जायेगा।

मूल निवास का सवाल

संवैधानिक प्रावधान और अस्मिता के प्रश्न

जयसिंह रावत

वर्षान्त में मूल निवास व मजबूत भूमि कानून की मांग को लेकर देहरादून में आहूत महारैली में जिस तरह जनसैलाब उमड़ा उसे उत्तराखण्ड की जनता की भावनाओं का उद्वेग ही कहा जा सकता है। कहीं–न–कहीं जनभावनाओं का यह उफान फिलहाल लोगों की सांस्कृतिक पहचान के लिये ज्यादा लगता है। जमीनों की खरीद–फरोख्त पर मजबूत भू–कानून के जरिये रोक लगाने की मांग भी पहाड़ी लोगों की सांस्कृतिक पहचान अक्षुण रखने के लिये ही है। लेकिन मूल निवास का मुद्दा अन्ततः नौकरियों और अन्य सरकारी सुविधाओं तक ही पहुंचेगा, जिसे संवैधानिक रुकावटों से गुजरना होगा। संविधान अपने नागरिकों को समानता के मौलिक अधिकार के साथ राज्य के अधीन किसी भी पद के संबंध में धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्मस्थान, निवास या इसमें से किसी आधार पर भेदभाव की स्पष्ट मनाही करता है।

सवाल केवल उत्तराखण्ड के मूल निवास आन्दोलन तक सीमित नहीं है। मध्य प्रदेश की पूर्ववर्ती शिवराज सिंह चौहान सरकार द्वारा जन्म के आधार पर राज्यवासियों को सरकारी नौकरियों में आरक्षण की घोषणा की जा चुकी थी। मूल निवास के आधार पर विरोध और समर्थन की बहसों के बावजूद कुछ राज्यों में जन्म के आधार पर और कुछ में भाषा के आधार पर आरक्षण की व्यवस्था लागू हो चुकी है। आरक्षण का मुद्दा एक संवैधानिक विषय है, विभेद विहीन समान अवसरों की गारंटी देने वाले अनुच्छेद 16 के उपखण्डों में संशोधन संसद ही कर सकती है।

मूल निवास या जन्म के आधार पर आरक्षण की बात उठती है तो संविधान के अनुच्छेद 16के उपखण्डों का जिक्र आवश्यक है। संविधान में अनुच्छेद–16 सरकारी नौकरियों में अवसर की समानता को संदर्भित करता है जबकि अनुच्छेद 16(1) राज्य के अधीन किसी भी पद पर रोजगार या नियुक्ति से संबंधित मामलों में सभी नागरिकों के लिए अवसरों की समानता की गारंटी देता है। अनुच्छेद 16(2) स्पष्ट करता है कि कोई भी नागरिक केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, वंश, जन्म स्थान, निवास के आधार पर राज्य के तहत किसी भी रोजगार या कार्यालय के लिए अयोग्य नहीं होगा या उसके साथ भेदभाव नहीं किया जाएगा। लेकिन अनुच्छेद 16(3) इन कानूनों को अपवाद प्रदान करता है। इसमें कहा गया है कि संसद उस राज्य या केंद्र शासित प्रदेश के भीतर निवास के किसी विशेष स्थान की आवश्यकता निर्धारित करने वाला कोई भी कानून बना सकती है जिसमें सार्वजनिक पद या रोजगार हो। इसका मतलब यह है कि जन्म स्थान के आधार पर सार्वजनिक रोजगार में आरक्षण के बारे में निर्णय केवल भारत की संसद ही ले सकती है, किसी राज्य की कोई विधायिका नहीं। संसद अब तक इस प्रावधान का लाभ आंध्र प्रदेश, मणिपुर, त्रिपुरा और हिमाचल प्रदेश को दे चुकी है। कुछ राज्यों को छूट और कुछ को छूट से वंचित रखना भी राज्यों के समानता के अधिकार का हनन है।

महाराष्ट्र में, जो कोई भी 15 साल या उससे अधिक समय से राज्य में रह रहा है, वह सरकारी नौकरियों के लिए तभी पात्र है, जब वह मराठी में पारंगत हो। तमिलनाडु भी ऐसी परीक्षा आयोजित करता है। पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों ने मूल निवास के बजाय भाषा को राज्य की सेवाओं में नियुक्ति का आधार बनाया है। इसके अतिरिक्त, संवि–

व्यंग्य : सुरक्षा समिति की बैठक

संतोष उत्सुक

यह सच बताया गया कि सर्दी के मौसम में चोरी व सेंध की घटनाएं बढ़ जाती हैं। सूचित किया कि पिछले चोरी के कितने दर्जन मामले दर्ज हुए। उन्होंने माना कि शातिर चोर दिन दहाड़े सेंध लगा लेने में माहिर होते जा रहे हैं।

नागरिक सुरक्षा समिति ने ठंड के मौसम वाली वार्षिक बैठक की। हालांकि बैठक पिछले महीने होनी चाहिए थी लेकिन निरंतर सोए जा रहे नागरिकों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता तभी ठंड और फैलते डर के कारण कम लोग आए। हाल में मंच सजाया गया और बढ़िया बैनर भी लगाया गया ताकि फोटो अच्छा आए और अगले दिन अखबारों में खबर के साथ छपे। बिना लाल बत्ती वाली गाड़ी में पधारे असली वीआईपी ने उदघाटन किया। बैठक में पधारे नागरिकों से सहयोग मांगते हुए समझाया गया यदि छुट्टियों में कहीं जा रहे हैं तो घरों में इस बार सेंसर लॉक जरूर लगवा कर जाएं। सीसीटीवी कैमरे भी लगवा लें। एंटी थैफ्ट अलार्म भी लगवा लें। आपका घर चोरों से बेहद सुरक्षित रहेगा।

यह सच बताया गया कि सर्दी के मौसम में चोरी व सेंध की घटनाएं बढ़ जाती हैं। सूचित किया कि पिछले चोरी के कितने दर्जन मामले दर्ज हुए। उन्होंने माना कि शातिर चोर दिन दहाड़े सेंध लगा लेने में माहिर होते जा रहे हैं। बरसों पहले घरों से चुराए गहने आज तक नहीं मिले हैं और न ही इनको उड़ाने वालों के बारे में पता चल सका है हालांकि तप्तीश जारी है। इसलिए उन्होंने समझाया कि जेवरात बैंक लाकर में ही रखा करें। वैसे नकली गहने पहनना ज्यादा सुरक्षित है या फिर पुरातन काल की तरह फूल पत्तियां पहनना शुरू कर देना चाहिए।

उन्होंने यह प्रशंसनीय सलाह भी दी कि कीमती सामान का बीमा भी करवा लें। लिस्ट भी बनाकर रखें ताकि यदि चोरी हो जाए तो लिस्ट अविलंब दी जा सके। उन्होंने यह बताकर जिम्मेदारी बखूबी निभाई कि इस तरह की घटनाएं सामने न आएं इसलिए आजकल गश्त लगाने के दौरान जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को सतर्क किया जा रहा है। वैसे इस बहाने व्यायाम भी तो हो रहा है। उनका कहना है कि लोग अगर सुरक्षा सुझावों पर अमल करेंगे तो पछताना नहीं पड़ेगा। उनके अनुसार बाहर जाते समय पड़ोसी को उचित तरीके से जरूर बताकर जाएं। उन्हें बता कर नहीं जाएंगे तो चोर घुसने की बुरी स्थिति में उन्हें पता नहीं चल पाएगा।

पड़ोसी को कभी कभार चाय, बिस्किट और नमकीन की सादा दावत देने में फायदा है, इस बहाने पड़ोसी से अच्छे रिश्तों का विकास भी होगा। व्यक्तिगत सुरक्षा बारे, सड़क पर चलते हुए, फुटपाथ न होने, दोपहिया वाहनों की दहशत बारे पूछा तो बता दिया गया, यह बैठक सिर्फ सर्दियों के मौसम में होने वाली संभावित चोरियों बारे है। अलग अलग अनुभाग हैं जो जरूरत पड़ने पर बैठक कर प्रेस विज्ञप्ति देते हैं। वैसे भी काम करने का सही तरीका यही है। नागरिक सुरक्षा विभाग के पास और भी बहुत से काम हैं। कर्मचारी भी कम हैं।

अधिकांश सुरक्षा कर्मियों को राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक नेता, अफसर, चोर, उच्चके, असामाजिक तत्त्वों की सुरक्षा में लगे रहना पड़ता है। इस महत्त्वपूर्ण बैठक से शिक्षा मिली कि आम लोगों को सर्दी में भी अपनी सुरक्षा आप करनी चाहिए।

धान के अनुच्छेद 371 में कुछ राज्यों के लिए विशेष प्रावधान भी हैं। संविधान के अनुच्छेद 371डी के तहत, आंध्र प्रदेश को निर्दिष्ट क्षेत्रों में स्थानीय कैडरों की सीधे भर्ती करने की अनुमति है।

संविधान के अनुच्छेद 19 (ई) के तहत, प्रत्येक नागरिक को भारत के किसी भी हिस्से में निवास करने और बसने का अधि ाकार है। इसके अलावा किसी भी राज्य में किसी भी सार्वजनिक पद पर भर्ती होने पर व्यक्ति के साथ उनके जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता है। संविधान कुछ प्रतिबंधों के बावजूद शैक्षिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े असमान लोगों को समानता के स्तर तक लाने के लिये अनुच्छेद 15 (4) और 16(4) के जैसे सकारात्मक प्रावधान भी करता है। जो राज्य को उन समुदायों के लिए उच्च शैक्षणिक स्थानों और नियुक्तियों में प्रवेश के आरक्षण के लिए विशेष प्रावध ाान करने की अनुमति देते हैं।

दरअसल, देश के सुप्रीम कोर्ट ने भी प्रदीप जैन बनाम भारत संघ के मामले में भूमिपुत्रों के लिए नौकरियां आरक्षित करने की नीतियों को संविधान का उल्लंघन माना था। सन् 1995 में भी सुप्रीम कोर्ट ने सुनंदा रेड्डी बनाम आंध्र प्रदेश राज्य के मामले में, प्रदीप जैन वाले मामले के फैसले को बरकरार रखा और उस नीति को रद्द कर दिया, जिसमें शिक्षा के माध्यम के रूप में तेलुगु वाले उम्मीदवारों के लिए अंकों में 5 प्रतिशत अतिरिक्त वेटेज की अनुमति दी गई थी। लेकिन जब संसद कुछ राज्यों को जन्म या निवास के आधार पर आरक्षण देने की छूट दे चुकी है तो उसे अब समानता के अधिकार को समान बनाने की पहल भी करनी चाहिए।

165 साल पहले निहंगों ने किया था कब्जा

अब उनके वंशज लगाएंगे लंगर, वो कहानी जब सिखों ने बाबरी पर लिख दिया था राम–राम

पवन वर्मा

निहंग सिखों को ऐसा लड़ाका बनाने का श्रेय सिखों के दसवें गुरु गुरु गोविंद सिंह को जाता है। गुरु गोविंद सिंह के चार बेटे थे। अजित सिंह, जुझार सिंह, जोरावर सिंह और फतेह सिंह। माना जाता है कि एक बार तीन बड़े भाई आपस में युद्ध का अभ्यास कर रहे थे और इसी दौरान सबसे छोटे फतेह सिंह वहां पहुंचे।

17 दिसंबर को एक निहंग सिख बाबा हरजीत सिंह रसूलपुर ने घोषणा करते हुए कहा कि 22 जनवरी को अयोध्या के राम मंदिर में भगवान राम की मूर्ति के अभिषेक के लिए दुनिया भर से आने वाले भक्तों की सेवा के लिए श्लंगर सेवाश (सिख सामुदायिक रसोई) का आयोजन करेंगे। बाबा हरजीत सिंह के अनुसार, वो अपने पूर्वज बाबा फकीर सिंह खालसा की विरासत को आगे बढ़ाने के लिए ऐसा करेंगे, जिन्होंने 165 साल पहले निहंग सिखों के एक दल के साथ बाबरी मस्जिद में घुसकर श्श्री भगवानश का प्रतीक स्थापित किया था। इस घटना को राम मंदिर आंदोलन में दर्ज होने वाली पहली एफआईआर के रूप में दर्ज किया गया था और 2019 में सुप्रीम कोर्ट के 1,045 पेज के फैसले में मुख्य सबूत के रूप में काम किया गया था।

निहंग सिख कौन हैं? निहंग सिखों को ऐसा लड़ाका बनाने का श्रेय सिखों के दसवें गुरु गुरु गोविंद सिंह को जाता है। गुरु गोविंद सिंह के चार बेटे थे। अजित सिंह, जुझार सिंह, जोरावर सिंह और फतेह सिंह। माना जाता है कि एक बार तीन बड़े भाई आपस में युद्ध का अभ्यास कर रहे थे और इसी दौरान सबसे छोटे फतेह सिंह वहां पहुंचे। उन्होंने युद्ध की कला सीखने की इच्छा जताई। इस पर बड़े भाइयों ने उनसे कहा कि अभी आप छोटे हैं और जब बड़े हो जाओगे तब ये सीख लेना। कहा जाता है कि अपने तीनों बड़े भाइयों की इस बात पर फतेह सिंह नाराज हो गए। वो घर के अंदर गए और नीले रंग का लिबास पहन, सिर पर एक बड़ी सी पगड़ी बांधी और हाथों में तलवार और भाला लेकर पहुंच गए। उन्होंने अपने भाइयों से कहा कि वो लंबाई में तीनों के बराबर हो गए हैं। गुरु गोविंद सिंह ये सब देख रहे थे। वो फतेह सिंह की बहादुरी से बहुत प्रभावित हुए। फतेह सिंह ने अपने बड़े भाइयों की बराबरी करने के लिए जो चोला पहना था, वहीं आज के निहंग सिख पहनते हैं। फतेह सिंह ने जो हथियार उठाया था, आज भी निहंग सिख उसी हथियार के साथ दिखते हैं।

गुरु नानक देव की अयोध्या यात्रा : रिपोर्टों के अनुसार, सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव ने 1510–11 ईस्वी में अयोध्या में राम जन्मभूमि स्थल का दौरा किया था। उस वक्त बाबरी मस्जिद का निर्माण नहीं हुआ था। नवंबर 2019 में उत्तर प्रदेश शहर में विवादित धार्मिक स्थल पर अपने फैसले में, सुप्रीम कोर्ट ने गुरु नानक देव की यात्रा पर ध्यान दिया था, जिसमें कहा गया था कि तीर्थयात्री 1528 ईस्वी से पहले भी इस स्थल को देखने गए थे। टाइम्स ऑफ इंडिया के अनुसार, शीर्ष अदालत ने अपने फैसले में कहा कि यह पाया गया है कि 1528 ईस्वी से पहले की अवधि में, पर्याप्त धार्मिक ग्रंथ थे, जिसके कारण हिंदू राम जन्मभूमि के वर्तमान स्थल को भगवान राम का जन्मस्थान मानते थे।

निहंग सिख और राम मंदिर : सुप्रीम कोर्ट में राम जन्मभूमि मामले की सुनवाई के दौरान, हिंदू पक्ष ने 28 नवंबर, 1858 की एक रिपोर्ट पेश की, जो अवध के थानेदार शीतल दुबे द्वारा प्रस्तुत की गई थी। तब अयोध्या और आस–पास के क्षेत्रों को संदर्भित किया गया था। रिपोर्ट में उस घटना के बारे में बताया गया जब निहंग सिख बाबा फकीर सिंह खालसा द्वारा बाबरी मस्जिद के अंदर हवन (एक हिंदू अनुष्ठान) और पूजा आयोजित की गई थी। रिपोर्ट के मुताबिक, बाबा फकीर सिंह 10वें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह की शान में नारे लगाते हुए मस्जिद के अंदर घुस गए और श्श्री भगवानश (भगवान राम) का प्रतीक खड़ा कर दिया। उन्होंने मस्जिद की दीवारों पर श्राम–रामश भी लिखा था। बाबा फकीर सिंह ने अनुष्ठान किया और उनके साथी निहंग सिख, जिनकी संख्या 25 थी, मस्जिद के बाहर खड़े थे और किसी भी बाहरी व्यक्ति को परिसर में प्रवेश करने से रोक रहे थे। उन्होंने मस्जिद के अंदर एक मंच भी बनवाया जिस पर भगवान राम की मूर्ति रखी गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि 1 दिसंबर, 1858 को अवध के थानेदार द्वारा मस्जिद जन्म स्थान के भीतर रहने वाले बाबा फकीर सिंह को बुलाने के लिए एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी। रिपोर्ट में कहा गया है कि वह बाबा फकीर सिंह के पास एक सम्मन लेकर गए थे और उन्हें चेतावनी दी थी। इसके बावजूद, बाबा इस बात पर अड़े रहे कि हर स्थान निरंकार (निराकार परमात्मा) का है।

सैयद मोहम्मद खतीब ने अपनी रिपोर्ट में लिखा : बाबरी मस्जिद के मुअज्जिन (जो मस्जिद में अजान देता है) सैयद मोहम्मद खतीब द्वारा अवध प्रशासन को दायर की गई शिकायत के अनुसार यह मुसलमानों पर हिंदुओं का खुला अत्याचार था। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में इस घटना का जिक्र करते हुए कहा कि निहंग सिंह मस्जिद में दंगा पैदा कर रहे थे। उन्होंने मस्जिद के अंदर जबरन चबूतरा बनाया था, मस्जिद के अंदर मूर्ति रखी, आग जलाई और पूजा की। उन्होंने मस्जिद की दीवारों पर कोयले के साथ राम राम शब्द लिखे। मस्जिद मुसलमानों की पूजा का स्थान है, न कि हिंदुओं का। अगर कोई इसके अंदर जबरन किसी चीज का निर्माण करता है, तो उसे दंडित किया जाना चाहिए। इससे पहले भी बैरागियों ने लगभग 22.83 सेंटीमीटर के रामचबूतरा का निर्माण रातोंरात किया था, जब तक कि निषेधाज्ञा आदेश जारी नहीं किए गए थे।

सांवले राम–कृष्ण के देश में श्याम वर्ण को लेकर दुराग्रह क्यों ?

मुकेश भूषण

सौंदर्य के प्रतिमान भौगोलिक और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर बदलते रहते हैं। किसी एक फॉर्मूले से यह तय नहीं किया जा सकता कि कौन सुंदर या असुंदर है। ज्यादातर संदर्भों में तो यह समझ पाना भी कठिन होता है कि किन कारणों से कोई सुंदर या असुंदर लगने लगता है। यदि कारणों की पड़ताल करें तो यही पाएंगे कि सुंदर या असुंदर महसूस होने के पीछे पूर्वाग्रह है, जो हमारी परवरिश का नतीजा होता है। हमारे सौंदर्यबोध पर परिवार और समाज की गहरी छाप होती है। वैसे तो पसंद–नापसंद निजी मामला है लेकिन, तभी तक जब तक इससे दूसरों पर कोई असर न हो। यदि पसंद–नापसंद मानवीय संकट (ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, हिकारत इत्यादि) पैदा करने लगे या किसी को हीनभावना से ग्रस्त बनाने लगे तो निश्चित रूप से पसंद या नापसंद के बोध का परिमार्जन होना चाहिए। परिमार्जन की इसी प्रक्रिया को सुसंस्कारित होना भी कहते हैं। धर्म, जाति या रंग के बारे में हमारी पसंद या नापंसद जब निजता का दायरा पार करने लगे तो समझ जाना चाहिए कि अभी हमें सुसंस्कृत होना बाकी है।

छत्तीसगढ़ हाई कोर्ट ने हाल में तलाक की एक अर्जी को खारिज किया है जिसमें पति सांवले रंग के कारण पत्नी से अलग होना चाहता था। पत्नी का गहरा रंग उसे पसंद नहीं था। इस मामले ने एक बार फिर देश में व्याप्त रंगभेद के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया है। वैसे तो रंगभेद की जब भी चर्चा होती है, पश्चिम के देशों में हुए या हो रहे भेदभावपूर्ण बर्ताव ही याद आते हैं। अमरीका या दक्षिण अफ्रीका में चले आंदोलन का अक्सर जिक्र होता है। भारत में सामान्य तौर पर मान लिया गया है कि यहां रंग के आधार पर भेदभाव नहीं है। इसकी एक वजह यह भी हो सकती है कि यहां जाति के आधार पर भेदभाव की जड़ें ज्यादा गहरी हैं, जो रंगभेद को अक्सर ओवरलैप कर लेती है। दूसरी वजह यह कि भारत में रंगभेद डिफॉल्ट सौंदर्यबोध का नतीजा ज्यादा लगता है न कि नस्लवादी दुराग्रह का। जातीय भेदभाव से मुक्ति हमारी प्राथमिकता रही है और उसके खिलाफ आंदोलन भी होते रहे हैं। यहां कभी काले–सांवले–गोरे में भेदभाव के खिलाफ आंदोलन नहीं हुआ। गुलामी के दौर में हर रंग–रूप, जाति–धर्म और वंश–नस्ल के देशवासी अंग्रेजों के भेदभाव के शिकार थे। स्वतंत्रता आंदोलन ने हमारे समाज में व्याप्त अन्य भेदभावों को तो संबोधित किया पर रंगभेद को नहीं, क्योंकि गोरे तब सिर्फ अंग्रेज के रूप में ही सामने थे। अंग्रेजों के जाने के बाद भारतीय संविधान में हर तरह के भेदभाव रोकने के प्रावधान पहले ही कर दिए गए। दक्षिण अफ्रीका या अमरीका की तरह इसके लिए अलग से सत्ता प्रतिष्ठानों से लड़ना नहीं पड़ा। इसीलिए समाज में व्याप्त रंगभेद के खिलाफ जैसी जागरूकता आनी चाहिए थी, नहीं आ सकी। रंग के आधार पर परिवार और समाज में अनायास भेदभाव होता रहा। अंग्रेज चले गए पर श्गोरेश विभिन्न रूपों में स्थापित हो गए और किसी को इसकी चिंता नहीं रही।

हमारा देश आर्य, द्रविड़, मंगोल व अन्य कई मूल के निवासियों का घर है। जाहिर है, रहन–सहन और भाषा ही नहीं, रंग–रूप में भी काफी विविधताएं हैं। समय की शिला पर कई तरह के आग्रह–दुराग्रह भी दर्ज हैं और इसी आधार पर सौंदर्य के प्रतिमान भी गढ़ लिए गए हैं। उन्हीं प्रतिमानों के कारण अक्सर रंग को लेकर हमारा पूर्वाग्रह सामने आ ही जाता है। गौर करने वाली बात यह भी है कि विदेशों में स्त्री और पुरुष दोनों समान रूप से रंगभेद के शिकार होते हैं, लेकिन भारत में इसका शिकार अक्सर सिर्फ स्त्रियों को ही बनना पड़ता है। परिवारों में होने वाले संवाद से लेकर सौंदर्य प्रसाधन के प्रमोशन तक इस भेदभाव को बढ़ावा दे रहे हैं। खतरनाक बात यह है कि इसे रोकने की छटपटाहट कहीं नहीं दिखती। महिलाएं मौन रहकर इसे झेलती हैं और पुरुषों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जाहिर है इस भेद को मिटाने के लिए भी किसी बड़े आंदोलन की जरूरत है। घर और बाहर हर जगह के संवादों–व्यवहारों को परिष्कृत करना होगा। सौंदर्य के प्रतिमानों को बदलना होगा, तभी सौंदर्यबोध परिष्कृत होगा और हमारा समाज सुसंस्कृत हो सकेगा।

सौंदर्यशास्त्रों की मिमांसा से पता चलता है कि हमारा मन–मस्तिष्क जिसे श्रेष्ठ समझने लगता है, उसकी सापेक्ष नकल को ही तुलनात्मक रूप से सुंदर भी मानने लगता है। उदाहरण के लिए घर–घर में नियमित संवाद का हिस्सा श्राजकुमार जैसा बेटाश या श्राजकुमारी जैसी बेटीश को ही लें। जैसे सुंदर होने का मतलब राजकुमार जैसा होना ही है। जब हम राजकुमार की काल्पनिक छवि बनाते हैं तो किसी काले व्यक्ति की तस्वीर सामने नहीं आती, वह गोरा ही होता है। राजकुमारी भी हमेशा गोरी–चिट्टी ही दिखती है। क्या यह सोचा गया कि ऐसा क्यों होता है?

प्राचीन काल से राजा शक्ति का प्रतीक है। राजपरिवार को हर तरह से श्रेष्ठ मानना शक्ति की उपासना करने वाले समाज का एक निर्विवाद सहज विकल्प है। इसीलिए 'डिफॉल्ट सौंदर्यबोध' का अभिशाप श्निर्बल नारीश को ही झेलना पड़ता है। जन्म के बाद बच्चे समाज में उसी तरह पलते–बढ़ते हैं, जैसे कुम्हार की चाक पर चिकनी मिट्टी के लोंदे। हमारी परवरिश जाने– अनजाने, सायास–अनायास बच्चों के विकसित होते सौंदर्यबोध में अनाम शासकों के (काल्पनिक) वर्ण के प्रति अनजाना आकर्षण भर रहा है। इसे लंबी गुलामी का अभिशाप भी कह सकते हैं। किस्सा–कहानी, गीत–संगीत, नाटक–सिनेमा और यहां तक कि वैवाहिक विज्ञापण से भी रंगभेद से युक्त डिफॉल्ट सौंदर्यबोध दिन–प्रतिदिन और मजबूत होता जा रहा है। सांवले राम–कृष्ण के इस देश में श्यामवर्ण के प्रति ऐसा दुराग्रहपूर्ण सौंदर्यबोध आखिर कब तक चलेगा?

महराजगंज की राजनीति में 'बाबा' की इंट्री से विरोधियों में हलचल!

यूपी खबरिया ने की खास बातचीत

महराजगंज, ब्यूरो। राज्यों की विधानसभा चुनाव सम्पन्न्न होने के बाद लोकसभा चुनाव की सरगर्मियां बढ़ गई हैं। ऐसे में लोकसभा के भावी प्रत्याशी क्षेत्रों में जनता से मिलना भी शुरू कर दिए हैं। जगह जगह होर्डिंग्स– बैनर भी दिखाई देने शुरू हो गए हैं। ऐसे में इस बार किसका होगा महराजगंज?, किसे मिलेगा महराजगंज जनता का आशीर्वाद? ये देखना बड़ा ही दिलचस्पय होगा। छः बार के सांसद व केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी भी जोर–शोर से क्षेत्रों में जनसम्पर्क में जुटे हुए हैं। इन्ही सब विषयों पर चर्चा करने के लिए बल्लो धाम के पीठाधीश्वर और तेज–तर्रार युवा नेता विजय कुमार मिश्र ने उत्तर प्रदेश खबरिया से खास बातचीत की। इस दौरान उन्होंने कई सवालों के बेबाकी से जवाब दिया।

सवाल – महाराज जी, आप माँ के इतने बड़े उपासक हैं फिर आपके दिमाग में राजनीती कैसे आ गई?

जवाब – देखिए। आप इतिहास पढ़े होंगे और वेद पुराणों में लिखा है कि 'यदा–यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ए अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम सृज्याहम।।' जब कोई जनता द्वारा चुना हुआ प्रतिनिधि भ्रष्टाचारी हो जाता है। पापी हो जाता है। अताताई हो जाता है। निरंकुश हो जाता है। सही से कार्य पर ध्यान नहीं देता है तब एक मठ का महंथ मठ से निकल कर उन आतताइयों,पापियों का जो जनप्रतिनिधि होते हैं उनका मान–मर्दन करते हुए धर्म का ध्वजा फहराता है। जिस प्रकार परम पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने मुलायम सरकार को लोकतंत्र के द्वारा हटा कर आज गद्दी पर बैठे हैं सुशासन दे रहे हैं। और उत्तर प्रदेश की जनता खुशहाल है। उसी तरह महराजगंज में उन भ्रष्टाचारियों का मान–मर्दन करने के लिए ही हम लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं।

सवाल – महाराज जी, महराहगंज में एक से बढ़कर एक दिग्गज मौजूद हैं, ऐसे में आप खुद को कैसे स्थापित करेंगे?

जवाब – देखिए। परिवर्तन संसार का नियम है इस पद्धति पर आगे चल रहा हूँ, जब मैं गोरक्षनाथ मंदिर से आया, मेरी शिक्षा–दीक्षा वही से हुई हैं। महराजगंज में जब मैं आया तब मैंने देखा महराजगंज का युवा। मैं भी एक युवा हूँ कहीं न कहीं एक युवा का दर्द एक युवा ही समझ सकता है। महराजगंज का युवा कहीं न कहीं अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है।

साढ़े चार लाख युवा रोजगार न होने के कारण दिल्ली, मुंबई ट्रेनों में ठूस–ठूस के जाते है। तीन–तीन दिन तक कष्टकारी यात्रा करते हैं फिर वहां कॉन्ट्रैक्टरों की गालियां सुनते हैं। तरह–तरह का कष्ट झेलने के बाद अपने परिवार पालन–पोषण करता है। महराजगंज से पलायन रोकने के लिए महराजगंज के बच्चों को महराजगंज में ही रोजगार दूं अधिक से अधिक फैक्ट्रियों का निर्णाण करके। इस वजह से मैं लोकसभा चुनाव लड़ रहा हूं।

सवाल – महराज जी, महराजगंज की जनता आप पर भरोसा क्यों करें?

जवाब – देखिए। जनता जो है भष्ट्राचार से कराह रही है। युवा के पास रोजगार नहीं है। और जिले में एम्स नहीं है। दुर्घटनाएं हो जाती हैं तो महराजगंज से तुरंत गोरखपुर रेफर कर दिया जाता है। तीसरा जो युवा है पढ़ना चाहता है, लेकिन विश्वविद्यालय न होने के कारण व टेक्निकल विद्यालय न होने के कारण 50 प्रतीशत युवाओं की शिक्षा–दीक्षा अधूरी रह जाती है। तो मुझे जो महराजगंज की कमी है पलायन रोकते हुए अधिक से अधिक फैक्ट्रियों का निर्माण कराकर रोजगार

दिलाना। साथ ही जो बच्चे पढ़ना चाहते हैं आगे बढ़ना चाहते हैं...महराजगंज तराई है। और यहां पर धन का अभाव है गरीबी है। तो अपने बच्चों को जिले से बाहर पढ़ा नहीं पाते हैं। तो मैं चाहता हूं। एक विश्वविद्यालय का महराजगंज में निर्माण हो। ताकी महराजगंज के बच्चे अपने घर से नमक रोटी...जो भी है उनके पास खाकर एक अच्छी शिक्षा अर्जित कर लें। और डॉक्टर, इंजिनियर बनकर देश में कहीं भी सेवा करें। तो मैं इस सब मुद्दों को लेकर चुनाव लड़ रहा हूं।

सवाल – महराजगंज के ऐसे तीन मुद्दे जिन्हें आप चुनाव में भुनाना चाहेगें??

जवाब – देखिए। सबसे बड़ा मुद्दा है शिक्षा, स्वास्थ व रोजगार और चौथा एक और मुद्दा है, जो पीएसएल, सहारा इत्यादी में गरीबों का पैसा फंसा है। मैं चाहता हूं जब मैं सांसद बनूं तो संसद भवन में इस मुद्दों को उठाऊं। और गरीबों का पैसा उन्हें मिले। इस पद्धति पर मैं कार्य करूंगा, क्योंकि गरीबों की गाढ़ी कमाई उन्हें वापस दिलाने का काम करूंगा।

सवाल – महराज जी, एक आखिरी सवाल। उत्तर प्रदेश खबरिया के माध्यम से महराजगंज के जनता को क्या संदेश देना चाहेगें?

जवाब – आपके चौनल के माध्यम से महराजगंज के समस्त सम्मानित जनता को और विशेष कर युवा–नौजवान साथियों को इस बार लोकसभा चुनाव में परिवर्तन करिए। नया सांसद भवन बना है तो सांसद बनाकर भेजिए। और तीसरा ये भी कहूंगा कि अगला जितेगा तो वह भी योगी–मोदी के पास जाएगा। मैं भी जीतूंगा तो योगी–मोदी के पास ही जाऊंगा। क्योंकि मेरी शिक्षा–दिक्षा गोरक्षनाथ मठ से हुई है। और योगी जी के लिए मैं ष्एक वोट एक नोटष के तहत घर–घर जाकर वोंट भी मांगा हूं तो मैं जीतूंगा तो वहीं जाऊंगा अगला जितेगा तो भी वहीं जाएगा। तीस वर्षों से अगला (वर्तमान सांसद पंकज चौधरी) कुछ नहीं किया। मुझे एक बार अवसर दें और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं। अगर महराजगंज कि जनता मुझे अवसर देती है तो शिक्षा–स्वास्थ–रोजगार और पीएसएल इत्यादी का पैसा दिलाऊंगा। इसके साथ–साथ विकास का यहां पंख लगेगा और ज्यादा से ज्यादा रोजगार आएगी। जिससे जनता खुशहाल रहेगी। इस पद्धति पर मैं कार्य करूंगा।

नया साल

जशन ऐसा मनाओं नये साल में।
रास्तों को सजाओ नये साल में।।
हो न नफरत कहीं प्रेम ही प्रेम हो।
सबको दिल से लगाओ नये साल में।।
गम जदा हो कोई या परेशान हो।
मिल के उसको हंसाओं नये साल में।।
भूल कर आज अपनों से शिकवे गिले।
कसमे वादे निभाओं नये साल में।।
जो मजा प्यार में नफरतों में नहीं।
पाठ यही पढ़ाओ नये साल में।।
लब पे आजाद के आ रही है दुआ।
तुम हंसो मुस्कुराओ नये साल में।।

डा. महताब अहमद आजाद

दिसंबर से जनवरी का सफर

साल बीत रहा, वक्त आया दिसंबर करूं विदाई।
जब जब चमन में फूल खिलेंगे,तेरी याद आयेगी ।
जीवन को नव मोड़ दे,अकेलेपन की उलझन को,
सृजन की कर्मभूमि पर,अपनी निशानी छोड़ चले।
बीते बरस तुम्हारी तन–मन में याद सतायेगी।
ताज खुशी का पहना चले,भाव भीनी है तेरी विदाई।
नव चेतना,नव किरण से ,तुम जोड़ कर चले।
सेकेंड में नव वर्ष जनवरी माह का आगमन हुआ।
नया जोश, नया उल्लास,खुशियॉ भरती उजियारा।
आत्म बल विश्वास बढ़ा के,नई चेतना भी जागे।
नैतिकता का मूल्य बढ़े,अच्छी अच्छी बातें पढ़ें।
शिक्षा का उजियारा हम,घर– घर पहुंचाद्दं।
पर्यावरण की चिंता करें ,पेड़ फिर लगायें।
देश प्रेम का जज्बा सभी ,जन–मन में लाएं।
हो घर–घर बिजली,शौचालयऔशघर–घर जल निर्मल ,
सबके चेहरे खिले–खिले हों, सबकी ऑखें नीलकमल हों।

डॉ. सुमन मेहरोत्रा

बीते वर्ष में आत्मनिर्भर बनने के संकल्प के पथ पर भारत ने नई रेखाएं खींची

ललित गर्ग

बीते वर्ष में सकारात्मकता की नयी तस्वीरें सामने आयी। ज्यादातर बड़ी सकारात्मक खबरें आर्थिक उपलब्धियों और नये राजनीतिक समीकरणों से जुड़ी हैं। साल के अंत में हुए विधानसभा चुनावों, महिला सशक्तीकरण, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, नए संसद भवन के उद्घाटन, हर क्षेत्र में स्वदेशी की शक्ति और संसदीय–राजनीति, सुप्रीम कोर्ट के कुछ बड़े फैसलों, चंद्रयान–3 और आदित्य एल–1 मिशन जैसी वैज्ञानिक उपलब्धियां निराशा से ज्यादा आशाभरी खबरों ने आजादी के अमृतकाल में वास्तविक रूप में अमृतमय होने के संकेत दिये हैं। भारत की दिशा एवं दशा बदल रही है। बीते वर्ष में राजनीति से लेकर सामाजिक, आर्थिक से लेकर खेल तक, सुरक्षा से लेकर सौहार्द तक अनेक सकारात्मक दृष्टिकोण ने सबका साथ–सबका विकास–सबका विश्वास को बल दिया

> *आत्मनिर्भर बनने के संकल्प के पथ पर दौड़ रहे भारत ने हर क्षेत्र में स्वदेशी का लोहा मनवाया है। हमने युद्धपोत और हल्के लड़ाकू विमान से लेकर घातक ड्रोन तक बनाया है। देश में इस्तेमाल होने वाले 99 प्रतिशत मोबाइल हम खुद बना रहे हैं।*

है। चीन के हैंगजाऊ में हुए एशियाई खेलों में कई प्रकार के रिकॉर्ड तोड़ते हुए भारतीय खिलाड़ियों ने खेल की दुनिया में बड़ा कदम रखा। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है पदक तालिका में 'सौ से अधिक पदक' प्राप्त करना करना। यह उपलब्धि देश के आकार को देखते हुए पर्याप्त नहीं है, पर पिछले प्रदर्शनों से इसकी तुलना करें, तो बहुत बड़ी है। यह भारत के विकसित होते बदलते सामाजिक–आर्थिक स्तर को भी रेखांकित कर रही है। शेयर मार्केट तमाम कयासों को झुठलाते हुए उच्चस्तर पर बना हुआ है। जीडीपी में बढ़ोतरी हो रही है, साथ ही जीएसटी कलेक्शन भी बढ़ा हुआ है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 15 दिसंबर को समाप्त हुए सप्ताह में 20 माह के उच्चतम स्तर 616 अरब डॉलर हो गया है। 25 मार्च, 2022 के बाद का यह उच्चतम स्तर है।

आत्मनिर्भर बनने के संकल्प के पथ पर दौड़ रहे भारत ने हर क्षेत्र में स्वदेशी का लोहा मनवाया है। हमने युद्धपोत और हल्के लड़ाकू विमान से लेकर घातक

ड्रोन तक बनाया है। देश में इस्तेमाल होने वाले 99 प्रतिशत मोबाइल हम खुद बना रहे हैं। अपने बूत चांद के दक्षिणी ध्रुव पर उतरकर भारत ने पूरी दुनिया को चौंकाया है। 85 से अधिक देशों को भारत स्वदेशी हथियार, उपकरण, ड्रोन, कलपुर्जे निर्यात कर रहा है। रक्षा उत्पादों में हम आत्मनिर्भर बन रहे हैं। रक्षा उत्पादों के निर्यात में वर्ष 2013–14 की तुलना में 23 प्रतिशत बढ़ोतरी दर्ज की गयी है। प्रसिद्ध लोकोक्ति है कि अपनी बुद्धि से साधु होना अच्छा, पराई बुद्धि से राजा होना अच्छा नहीं। लेकिन हम अपनी बुद्धि, कौशल एवं तकनीक से राजा बन रहे हैं।

वर्ष 2023 महिलाओं की दृष्टि से ऐतिहासिक रहा। खेल, राजनीति, विज्ञान, व्यापार जैसे क्षेत्रों में महिलाओं ने खूब नाम कमाए हैं। देश में सावित्री जिन्दल का नाम सबसे धनाढ्य महिलाओं में सामने आया, इसी तरह अनेक महिलाएं आर्थिक क्षेत्र में नये कीर्तिमान गढ़ रही है। इस वर्ष में महिला सशक्तीकरण का बिगुल तब बजा जब सितंबर माह में 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' का उद्घोष हुआ। संसद में केंद्र सरकार ने लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित करने की घोषणा की, यह ऐतिहासिक निर्णय नारी–भविष्य की तस्वीर बदल देगा। वर्तमान में लोकसभा के कुल 543 सदस्य हैं। वर्तमान में मौजूद सदन में महिलाएं 82 हैं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम के प्रभावी होने के बाद 181 महिला सांसद होगी। यह अंतर आंकड़ों भर का नहीं होगा अपितु यह अंतर एक सशक्त देश की तस्वीर उकेरेगा। घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न के दाग 2023 के अध्याय को कलंकित करते हैं, परंतु राहत की बात यह है कि केंद्रीय गृहमंत्री ने हाल ही में न्याय प्रणाली में सुधार के लिए 'भारतीय न्याय संहिता 2023' सहित तीन विधेयक पेश किए। भारतीय न्याय संहिता 2023 सन् 1860 की पुरानी दंड संहिता की जगह लेगी। भारतीय न्याय संहिता 2023 की प्रमुख शक्तियों में से एक महिला के विरुद्ध अपराधों से संबंधित प्रावधानों को दी गई प्राथमिकता में निहित है। महिला उत्पीड़न पर कड़ी सजा का प्रावधान विश्वास दिलाता है कि महिलाओं के विरुद्ध हो रहे अपराधों पर लगाम लगेगी। पिछले साल का अंत राहुल गांधी की 'भारत–जोड़ो यात्रा' के दिल्ली पड़ाव के साथ हुआ था और इस साल उस यात्रा का फलितार्थ था 26 प्रमुख विरोधी दलों ने 18 जुलाई को बेंगलुरु में 'नए गठबंधन इंडिया' की बुनियाद रखते हुए 2024 के लोकसभा चुनाव का बिगुल बजाना। राहुल गांधी के लोकसभा से अयोग्य घोषित होने और उनकी बहाली और संसद के शीत सत्र में 146 सांसदों के निलंबन ने संसदीय राजनीति से जुड़े कुछ गंभीर सवालों की ओर इशारा किया है।

हिंसा, आतंक एवं युद्ध की स्थितियों के बीच भारत ने सांस्कृतिक एवं धार्मिक उत्थान एवं उन्नयन की अपूर्व परिवेश भी निर्मित किया गया, भारत के गौरव को पुनःस्थापित करने की अनूठी पहल हुई है। पांच सौ वर्षों के बाद अयोध्या में श्रीराम नये वर्ष के प्रारंभ में टेंट से मंदिर में स्थापित होंगे। वाराणसी में विश्वनाथ धाम परिसर का लोकार्पण भारत की राजनीतिक सोच को एक नया आयाम एवं दृष्टि देने का विशिष्ट उपक्रम कहा जा सकता है। हमारे देश की धार्मिक–सांस्कृतिक परंपराएँ और आदर्श जीवन–मूल्य समृद्ध एवं सुदृढ़ रहे हैं, लेकिन पूर्व सरकारों ने उनके गौरव को राजनीतिक नजरिया देते हुए धूमिल किया है। लेकिन नये राजनीतिक सोच एवं सत्ता ने भारत को अपने सांस्कृतिक एवं धार्मिक वैभव से दुनिया को आकर्षित किया है, जो बीत वर्ष की सुखद घटनाएं कही जा सकती हैं। निश्चित रूप से काशी एवं अयोध्या राष्ट्रीयता का प्रतीक बनकर ये सशक्त भारत का आधार बनेगे। इससे न सिर्फ वहां जाने वाले श्रद्धालुओं को काफी सुविधा मिलेगी, बल्कि संकीर्ण दायरों में सिकुड़ते गए एक आस्था और सभ्यता के प्रतीक को भी गरिमा प्राप्त होगी। सुप्रीम कोर्ट ने 11 दिसंबर को एक अहम फैसला सुनाते हुए कहा कि अनुच्छेद 370 एक अस्थायी व्यवस्था थी, जिसे हटाए जाने का फैसला पूरी तरह संवैधानिक है। इस निर्णय ने अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी बनाए जाने के 5 अगस्त, 2019 के फैसले पर कानूनी मुहर लगा दी। वैश्विक राजनीति में भारत के हस्तक्षेप की दृष्टि से दिल्ली में हुए जी–20 और शंघाई सहयोग संगठन के शिखर सम्मेलनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

काशी परिसर का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भव्य एवं शालीन तरीके से करते हुए प्रत्येक भारत को स्व–आस्था, स्व–संस्कृति एवं स्व–अस्तित्व का अहसास कराया है। भारत का सांस्कृतिक वैभव दुनिया में बेजोड़ रहा है, लेकिन तथाकथित राजनीतिक स्वार्थों एवं संकीर्णताओं के चलते इस वैभव को दुनिया के सामने लाने की बजाय उसे विस्मृत करने की कुचेष्टाएं एवं षड़यंत्र लगातार होते रहे हैं। सुखद स्थिति है कि अब हमारी जागती आंखो से देखे गये स्वप्नों को आकार देने का विश्वास जागा है तो इससे जीवन मूल्यों एवं सांस्कृतिक धरोहरों को सुरक्षित करने एवं नया भारत निर्मित करने का माहौल एवं मंशा देखने को मिल रही है, जो नये वर्ष के लिये शुभ है, नये एवं समृद्ध भारत के अभ्युदय का द्योतक है।

बीते साल ने दुःख एवं निराशा के दृश्य भी दिये हैं। हिमाचल प्रदेश की बाढ़, सिलक्यारा सुरंग, बालेश्वर (बालासोर) ट्रेन–दुर्घटना, मणिपुर की हिंसा और उसके दौरान वायरल हुए शर्मनाक वीडियो से जुड़ी निराशाओं को भी भुलाना नहीं चाहिए। गत 13 दिसंबर को संसद भवन हमले की सालगिरह पर शीतकालीन सत्र के दौरान कुछ लोग अंदर कूद गए और उन्होंने एक कैन से पीले रंग का धुआं छोड़ा। उत्तर प्रदेश में गैंगस्टर से नेता बने अतीक अहमद और उसके भाई अशरफ की सरेआम गोली मारकर हत्या की खबर ने इस साल काफी सुर्खियां बटोरी। अप्रैल के महीने में खालिस्तानी समर्थक अमृतपाल को एक महीने तक लगातार पीछा करने के बाद गिरफ्तार कर लिया गया था।

बीता वर्ष का हर दिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के करिश्माई एवं जुझारू व्यक्तित्व एवं नीतियों के नाम रहा। उन्ही के कारण विश्व में भारत के लिये एक नया नजरिया विकसित हुआ। उनके नाम पर लड़े गये विधानसभा चुनावों में शानदार जीत हुई। तीनों राज्यों में भाजपा की सफलता के पीछे अनेक कारण हैं। मजबूत नेतृत्व, संगठन–क्षमता, संसाधन, सांस्कृतिक आधार और कल्याणकारी योजनाएं वगैरह–वगैरह। 'जो आज तक नहीं हुआ वह आगे कभी नहीं होगा' इस बूढ़े तर्क से बचकर भारत में नया प्रण जगायें। बिना किसी को मिटाये निर्माण की नई रेखाएं खींचें। यही साहसी सफर शक्ति, समय और श्रम को नये वर्ष में सार्थकता देगा।

भारत से जुड़ने का सफल प्रयोग करती इंडिगो

रमा बिजापुरकर

छुट्टियों के इस मौसम में भारत के एक–तिहाई उपभोक्ता इन दिनों विमान से यात्रा कर रहे हैं। संभव है कि 10 यात्रियों में से सात इंडिगो विमान से ही उड़ान भर रहे हों। यह स्तंभ एक नामी भारतीय ब्रांड पर केंद्रित है जिसका प्रदर्शन कई स्तरों पर काफी बेहतर रहा है।

इंडिगो गैर–अनुशासित लोगों को अनुशासित बनाने, बहस करने वाले, कतार तोड़ कर आगे बढ़ने वाले लोगों को नियमों का पालन करने वाली भीड़ में बदलने में कामयाब रही है। इसने किसी ताकत या बलपूर्वक तरीके से नहीं बल्कि विनम्र, युवा कर्मचारियों के बलबूते यह सब करने में सफलता पाई है जिनमें महिला कर्मचारियों की अहम भूमिका है।

अब कतारें व्यवस्थित होती हैं और लोग नियमों को मानते हैं। अगर आप ज्यादा सामान ले जा रहे हैं तो इसके लिए लगने वाले अतिरिक्त शुल्क को माफ करने के लिए कोई भी विनती काम नहीं आ सकती है। अब इस तरह की बातों की परवाह कोई भी नहीं करता है कि 'जानते हैं, हम कौन हैं।'

आपातकालीन निकास वाली जगह पर बैठने वाले यात्रियों को युवा चालक दल के एक सदस्य बड़े धैर्य से नियमों को समझाते हैं और इस दौरान उन्हें अपने गैजेट देखने के लिए कहा जाता है। इसके अलावा आपातकालीन स्थिति में मदद देने की बात भी कही जाती है और कोई बात न समझ आए तो विस्तार से समझाया जाता है।

आखिर इंडिगो को इतनी ताकत किस तरह हासिल हुई है? इसे इस तरह भी समझा जा सकता है कि यह एक तरह का यात्रियों द्वारा इंडिगो के साथ किया गया एक 'सक्षमता करार' जिसके तहत उपयोगकर्ता अपनी मर्जी से अच्छा बरताव कराने की ताकत सौंप देते हैं और बदले में इंडिगो उन्हें बेहतर सेवाएं समय पर देती है। इन दिनों जब लॉजिस्टिक से जुड़ी चुनौतियां बेहद थकाने लायक होती हैं, ऐसे दौर में भी इंडिगो कुशलता के साथ इस क्षेत्र में अपना दबदबा बनाए हुए हैं।

यातायात भीड़ को झेलते हुए हवाईअड्डे तक पहुंचना, प्रवेश और सुरक्षा जांच की कतारों में लगना, यह सब थका देने वाली प्रक्रिया है। हालांकि इस लिहाज से डिजियात्रा तभी तक बेहतर साबित होता है जब तक कि यह अचानक आपको पहचानने से इनकार न करे। हालांकि इंडिगो की जिस कुशलता और बेहतर प्रबंधन के हम कायल हैं क्या यह भरोसा तब भी बरकरार रहेगा जब कंपनी के विमान उड़ान भरने में देरी करने लगेंगे या आधे घंटे के स्लॉट (जैसा कि हाल ही में अनुभव किया गया) में अंतहीन देरी की घोषणा करने लगेंगे और यह संकेत देंगे जैसे उन्हें कुछ नहीं पता है? ऐसे में पूरी संभावना यह है कि हम इससे आजिज आने लगेंगे।

इंडिगो भी भारतीयों के मनोविज्ञान को अच्छी तरह से समझती है और इसने दिखाया है कि चंद पैसे में चांद पाने की चाहत रखने वाली भारतीय मानसिकता से किस तरह निपटा जा सकता है। इंडिगो और भारतीय उपभोक्ता दोनों के ही रग–रग में, किसी तरह सौदा निपटाने का माद्दा कूट–कूट कर भरा है।

हम सौदा निपटाने के लिए मोलतोल की ताकत दिखाते हैं। अतिरिक्त सामान के लिए पहले से की गई बुकिंग की दर चेक–इन काउंटर की तुलना में बहुत कम होती है। वे मूल्य–लाभ (प्रदर्शन) से जुड़े कई विकल्प देते हैं और हम इन विकल्पों के साथ अच्छा और खराब दोनों ही महसूस

कर सकते हैं।

पैर रखने की बड़ी जगह, छोटी कतारें, अलग से बोर्डिंग और गारंटी के साथ भोजन पाने जैसे विकल्पों के लिए अलग–अलग कीमत चुकानी पड़ती है। यह एक किफायती विमानन कंपनी है लेकिन जो लोग अपने लिए अतिरिक्त सेवाएं या सुविधाएं चाहते हैं वे अतिरिक्त शुल्क देकर अधिक सामान, भोजन, सीट चयन जैसे विकल्प अपने मनमुताबिक जोड़ सकते हैं।

लेकिन इंडिगो की विशेषता यही है कि उसे पता है कि इस तरह के तामझाम का क्या मतलब है और इसका प्रबंधन किस तरह किया जा सकता है जबकि इसके उलट कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों को इसके चक्कर में काफी नुकसान उठाना पड़ा है।

हाल ही में हमने देखा कि एक यात्री ने अपने बैग पर एक स्टिकर लगाने की गुजारिश की जिसका मतलब था कि उनके बैग में कोई नाजुक सामान है जिसे पूरी एहतियात के साथ रखा जाना चाहिए। काउंटर के पीछे बैठी युवती ने उन्हें देखा और पूरी गंभीरता से समझाया कि कंपनी अब इस तरह के स्टिकर का इस्तेमाल नहीं करती है क्योंकि 'कंपनी हर बैग को नाजुक मानती है और उसे अच्छी तरह संभालकर रखती है।'

हालांकि एक सहयात्री ने व्यंग्य के अंदाज में बताने की कोशिश की कि इस तरह के स्टिकर प्रिंट नहीं करना वास्तव में कंपनी की लागत–बचत करने की नई तरकीब है। यह सच भी हो सकता है लेकिन कंपनी को अपने कर्मचारियों को इन बातों को बेहद चतुराई से कहने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए बड़ा खिताब मिलना चाहिए।

इंडिगो हर समय प्रयोग करती रहती है और इसने अनूठी सेवाओं की पेशकश करने की हमेशा कोशिश की है जैसे कि यह सब एक विशाल प्रयोगशाला के प्रयोग का हिस्सा हो। उदाहरण के तौर पर हाल तक, 'फास्ट फॉरवर्ड' शुल्क देने पर आपका सामान सबसे पहले आने की सुविधा मिल जाती थी। लेकिन विभिन्न हवाईअड्डों पर कई तरह के कुप्रबंधन के चलते इसे 'किसी भी समय बोर्डिंग करने' जैसे लाभ में बदल दिया गया।

पुराने दिनों में उपभोक्ता किसी कंपनी के संदर्भ में स्थिरता की सराहना करते थे और लगातार बदलाव को एक बाधा के रूप में देखा जाता था लेकिन अब हम एक ऐसे दौर में हैं जब सक्रियता दिखाने के चलन को ही सराहा जाता है और इसे आगे बढ़ने के बेहतर प्रयास के रूप में देखा जाता है।

हाल के दिनों में उड़ान में देरी हुई तब इंडिगो ने प्रत्येक यात्री को उस जगह भोजन की थाली परोस कर प्रयोग किया जहां वे बैठे थे। इंडिगो ने मुफ्त भोजन की पेशकश पहली बार की थी। जब इसके कर्मचारियों से पूछा गया कि ऐसा क्यों हुआ तब इसके कर्मचारियों ने कहा, 'मुंबई हवाई यातायात के कारण आपको बहुत देरी हुई, ऐसे में हमें आपको यह सेवा देनी ही थी।' इसे क्रिसमस के दौर में ब्रांड छवि को बेहतर बनाने की रणनीति भी कहा जा सकता है।

हम एमबीए के छात्रों को ब्रांड लैडरिंग फ्रेमवर्क के बारे में सिखाते हैं, जिसमें 'विशेषता से परिणाम तक और फिर इससे तैयार होने वाले ब्रांड मूल्य' के बारे में बताते हुए ब्रांड का विश्लेषण किया जाता है। निचले क्रम वाले ब्रांड विशेषताओं या परिणामों तक ही सिमट जाते हैं।

इसका एक पुराना उदाहरण निरमा ब्रांड से लिया जा सकता है जो किफायती होने के साथ ही कपड़े की अच्छी सफाई का दावा करता (विशेषता) था और इससे लोगों का बजट भी संतुलित रहता था और इसका इस्तेमाल करने वाली गृहिणी के समझदार होने (परिणाम) की बात कही जाती थी। इसने खुद को आम जनता के एक मसीहा ब्रांड (मूल्य) के तौर पर खुद को स्थापित किया था।

इस संदर्भ में आज इंडिगो का उदाहरण लिया जा सकता है। आप किसी छोटी जगह से भी इस कंपनी की किफायती विमानन सेवाएं (विशेषता) ले सकते हैं। इसके किफायती होने की वजह से ही उपभोक्ता अधिक कमाने के मकसद से कई जगहों पर जाने के लिए अधिक उड़ान भरने का फैसला करते हैं (संबंधित परिणाम) और यह भारत के महत्त्वाकांक्षी लोगों के लिए मसीहा ब्रांड (मूल्य) के तौर पर खुद को स्थापित कर चुका है। उम्मीद है कि कई भारतीय ब्रांडों की तरह इंडिगो अपने दायरे को बढ़ाने की जटिलता और जिस रफ्तार से इसे किया जाना है उसको पूरा करते हुए अपने ब्रांड के बुनियादी उद्देश्य को नहीं खोएगा। (लेखिका ग्राहकों से जुड़ी व्यापार रणनीति के क्षेत्र में कारोबार सलाहकार और भारत की उपभोक्ता अर्थव्यवस्था विषय की शोधकर्ता हैं)

सामाजिक अलगाव और आत्महत्या

आत्महत्या घरेलू हिंसा पर केंद्रित है। गरीबी, बेरोजगारी, कर्ज और शैक्षणिक समस्याएँ भी आत्महत्या से जुड़ी हैं। भारत में किसानों की आत्महत्या की हालिया घटनाओं ने इस बढ़ती त्रासदी से निपटने के लिए सामाजिक और सरकारी चिंता बढ़ा दी है। जाहिर है, किसी समाज की आत्महत्या के बारे में धारणा और उसकी सांस्तिक परंपराएं आत्महत्या की दर को प्रभावित कर सकती हैं। आत्महत्या के प्रति अधिक सामाजिक कलंक को आत्महत्या से बचाने वाला माना जाता है, जबकि कम कलंक आत्महत्या को बढ़ा सकता है। समाजशास्त्री एमिल दुर्खीम ने प्रसि) परिकल्पना की थी कि 'आत्महत्याएं न केवल मनोवैज्ञानिक या भावनात्मक कारकों बल्कि सामाजिक कारकों का भी परिणाम होती हैं।' हर 40 सेकंड में, दुनिया में कहीं न कहीं कोई न कोई व्यक्ति अपनी जान ले लेता है। आत्महत्या के आँकड़ेरू दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र में भारत में आत्महत्या की दर सबसे अधिक है। इंडिया स्पेंड के अनुसार, भारत ने 2021 में अपने इतिहास में सबसे अधिक आत्महत्या दर दर्ज की, जिसमें प्रत्येक 100,000 लोगों पर 12 आत्महत्याएं हुईं। और आत्महत्या से होने वाली प्रत्येक मृत्यु में, लगभग 60 लोग ऐसे होते हैं जो किसी प्रियजन के खोने के कारण प्रभावित होते हैं, और 20 से अधिक लोग आत्महत्या का प्रयास करते हैं।

प्रियंका सौरभ

महिलाएं विषम सामाजिक–आर्थिक बोझ से जूझ रही हैं। पुरुषों की तुलना में उनका उच्च एसडीआर विभिन्न कारकों में निहित है, जैसे महिलाओं और पुरुषों के लिए तनाव और संघर्ष से निपटने के सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीकों में अंतर, घरेलू हिंसा और विभिन्न तरीके जिनसे गरीबी लिंग को प्रभावित करती है। सामान्य तौर पर महिलाओं में आत्महत्या से होने वाली मौतों का सबसे बड़ा शिकार विवाहित महिलाएं हैं। यह समूह व्यवस्थित और कम उम्र में विवाह, कम उम्र में मातृत्व और आर्थिक निर्भरता के कारण अधिक असुरक्षित हो जाता है। सामाजिक कलंकरू भारत में मानसिक स्वास्थ्य विकारों से जुड़ा सामाजिक कलंक उन्हें संबोधित करने में एक बड़ी बाधा है। जब मानसिक स्वास्थ्य विकारों की बात आती है तो कलंक और ज्ञान और समझ की सामान्य कमी समय पर हस्तक्षेप को रोकती है। मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों के समाधान के लिए राज्य की क्षमताएं न के बराबर हैं। देश में लगभग 5,000 मनोचिकित्सक और 2,000 से कम नैदानिक मनोवैज्ञानिक हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर व्यय कुल सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय का एक छोटा सा हिस्सा है। भारत की अर्थव्यवस्था काफी हद तक कृषि पर निर्भर है और लगभग 60 प्रतिशत लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस पर निर्भर हैं। सूखा, कम उपज की कीमतें, बिचौलियों द्वारा शोषण और ऋण चुकाने में असमर्थता जैसे विभिन्न कारण भारतीय किसानों को आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करते हैं। इतनी अधिक संख्या का कारण आर्थिक, सामाजिक और भावनात्मक संसाधनों की कमी को माना जा सकता है। अधिक विशेष रूप से, शैक्षणिक दबाव, कार्यस्थल तनाव, सामाजिक दबाव, शहरी केंद्रों का आधुनिकीकरण, रिश्ते की चिंताएं, और समर्थन प्रणालियों का टूटना।

कुछ शोधकर्ताओं ने युवाओं की आत्महत्या में वृद्धि के लिए शहरीकरण और पारंपरिक बड़े परिवार सहायता प्रणाली के टूटने को जिम्मेदार ठहराया है। परिवारों के भीतर मूल्यों का टकराव युवाओं के जीवन में एक महत्वपूर्ण कारक है। जैसे–जैसे युवा भारतीय अधिक प्रगतिशील होते जा रहे हैं, उनके परंपरावादी परिवार वित्तीय स्वतंत्रता, शादी की उम्र, पुनर्वास, बुजुर्गों की देखभाल आदि से संबंधित उनके विकल्पों में कम सहायक होते जा रहे हैं। डब्ल्यूएचओ का कहना है कि अवसाद और आत्महत्या आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं और, सबसे खराब स्थिति में, अवसाद 2015 में वैश्विक स्तर पर अवसाद से पीड़ित लोगों की कुल संख्या में से 18 प्रतिशत भारत में थे। एसटी समुदाय से होने और एससीरुएसटी कोटा के माध्यम से कॉलेज में प्रवेश पाने के कारण भेदभाव और अपमान किया गया। नस्लीय टिप्पणियां, लैंगिक भेदभाव आदि के कारण व्यक्तियों का अत्यधिक उत्पीड़न होता है। उच्च जाति के छात्रों और शिक्षकों से जाति–आधारित भेदभाव और नाराजगी मेडिकल कॉलेजों के साथ–साथ देश के अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों के उच्च दबाव वाले माहौल में आम है। थोराट समिति की 2007 की रिपोर्ट से पता चला है कि देश के प्रमुख मेडिकल कॉलेज एम्स में जाति–आधारित भेदभाव प्रथाएं कितनी

व्यापक और विविध थीं।

आत्महत्या को अपराध की श्रेणी से बाहर करना लंबे समय से अपेक्षित और स्वागतयोग्य था। यही बात भारतीय बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण के आदेश पर भी लागू होती है कि बीमा कंपनियों को अपनी पॉलिसियों में शारीरिक बीमारियों के साथ–साथ मानसिक बीमारियों को भी कवर करने का प्रावधान करना होगा। भारतीय कॉलेजों में आत्महत्याओं की बढ़ती घटनाओं से चिंतित मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने देश के उच्च शिक्षा संस्थानों में एक मैनुअल प्रसारित किया है, जिसमें अधिकारियों से छात्रों को चरम कदम उठाने से रोकने के लिए उपाय अपनाने को कहा गया है। मैनुअल में आत्मघाती प्रवृत्ति की शीघ्र पहचान, एक मित्र कार्यक्रम और एक डबलब्लाइंड हेल्पलाइन जैसे उपाय सूचीबद्ध हैं, जहां कॉल करने वाले और परामर्शदाता दोनों एक–दूसरे की पहचान से अनजान हैं। अन्य विशेषज्ञों ने स्कूली पाठ्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य को शामिल करने के साथ किशोरावस्था में ही सक्रिय कदम उठाने का सुझाव दिया है। मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम 2016 यह सुनिश्चित करेगा कि इन लोगों को सम्मान के साथ जीवन जीने का अधिकार है और अधिकारियों द्वारा उनके साथ भेदभाव या उत्पीड़न नहीं किया जाएगा। . सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा है कि आईपीसी की धारा 309 भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत दिए गए जीवन के अधिकार का भी उल्लंघन करती है। सबसे पहले, स्कूलों में विशेषज्ञ समितियों और परामर्शदाताओं की स्थापना के स्टॉप–गैप समाधान समस्या का समाधान करने में सक्षम नहीं हैं। गहरे जड़ वाले कारणों का समाधान किया जाना चाहिए। सरकार को इन आत्महत्याओं के पीछे के कारणों पर व्यापक अध्ययन करना चाहिए

दूसरा, पाठ्यक्रम को इस तरह से डिजाइन किया जाना चाहिए जो मानसिक व्यायाम और ध्यान के महत्व पर जोर दे। उदाहरणरू 'खुशी पाठ्यक्रम' पर दिल्ली सरकार की पहल सही दिशा में एक कदम हो सकती है। तीसरा, उच्च शिक्षा के संबंध में जस्टिस रूपनवाल आयोग द्वारा 12 उपाय सुझाये गये थे। विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में भेदभाव–विरोधी अधिकारी के साथ समान अवसर कक्ष को क्रियाशील बनाना। रैगिंग की सबसे "अहानिकर" प्रथाओं से शुरू होकर "अत्यधिक उत्पीड़न" तक, ऐसा भेदभावपूर्ण व्यवहार वास्तव में हिंसा का गठन करता है और किसी व्यक्ति के मानवाधिकारों पर हमला है जो उन्हें सम्मान के साथ अपना जीवन जीने और शिक्षा प्राप्त करने से रोकता है। व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक सहायता और देखभाल दी जानी चाहिए। राज्य इस उद्देश्य के लिए गैर सरकारी संगठनों के साथ–साथ धार्मिक मिशनरियों से भी सहायता ले सकता है। मौजूदा राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम और जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम को मजबूत करने के साथ–साथ प्रशिक्षण संसाधनों पर ध्यान केंद्रित करना और धन को सुव्यवस्थित करना अवसाद और आत्महत्या से लड़ने के लिए कुछ अन्य सिफारिशें हैं।

अंत में, अब समय आ गया है कि हम अपने शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र को ऐसे तरीकों से पुनर्जीवित करें जो नए अर्थ, जीवन जीने के नए विचार और नई संभावनाओं को संजोए जो अनिश्चितता के जीवन को जीने लायक जीवन में बदल सके। आत्महत्या रोकी जा सकती है। जो युवा आत्महत्या के बारे में सोच रहे हैं वे अक्सर अपनी परेशानी के चेतावनी संकेत देते रहते हैं। माता–पिता, शिक्षक और मित्र इन संकेतों को पहचानने और सहायता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि इन चेतावनी संकेतों को कभी भी हल्के में न लें। मीडिया कभी–कभी "आत्महत्या समूहों" को गहन प्रचार देता है – आत्महत्याओं की एक श्रृंखला जो मुख्य रूप से एक छोटे से क्षेत्र में थोड़े समय के भीतर युवा लोगों के बीच होती है। इनका संक्रामक प्रभाव होता है, खासकर जब इन्हें ग्लैमराइज किया जाता है, नकल की जाती है, या "आत्महत्या की नकल" के लिए उकसाया जाता है। यह घटना भारत में कई मौकों पर देखी गई है, खासकर किसी सेलिब्रिटी, ज्यादातर फिल्म स्टार या राजनेता की मृत्यु के बाद। इन आत्महत्याओं को मीडिया द्वारा व्यापक प्रचार दिए जाने के कारण इसी तरह की आत्महत्याएँ हुई हैं। फिल्मों में दिखाए गए मुकाबला करने के तरीके भी असामान्य नहीं हैं। यह भारत में एक विशेष रूप से गंभीर समस्या है जहां फिल्म सितारों को एक प्रतिष्ठित दर्जा प्राप्त है और वे विशेष रूप से युवाओं पर बहुत प्रभाव डालते हैं जो अक्सर उन्हें रोल मॉडल के रूप में देखते हैं। ○

घरेलू नुस्खे

रोस्टेड टी रेसिपी : चाय प्रेमी एक बार जरूर करें ट्राई

अनन्या मिश्रा

सालों से न जाने कितने लोग सुबह की शुरुआत चाय की चुस्की के साथ करते हैं। अदरक, लेमन, इलायची और मसाला समेत लोग कई तरह की चाय का स्वाद लेते हैं। तो वहीं आज के दौर में सोशल मीडिया पर कुछ न कुछ ट्रेंड होता रहता है। जहां कुछ समय पहले कुल्हड़ चाय ने चाय प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करने का काम किया तो वहीं अब रोस्टेड टी की एक रेसिपी सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रही है।

आपको बता दें कि इस चाय की रेसिपी अन्य चाय की रेसिपी से काफी अलग होती है। ऐसे में अगर आप भी चाय प्रेमी हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको इस वायरल चाय की रेसिपी के बारे में बताने जा रहे हैं। ऐसे में आप भी सर्दियों के मौसम में वायरल चाय की चुस्की का मजा ले सकते हैं।

वायरल रोस्टेड टी सामग्री : चाय पत्ती, अदरक, चीनी, दूध, इलायची पाउडर।

ऐसे बनाकर करें तैयार : वायरल रोस्टेड टी बनाने के लिए एक पैन में चायपत्ती डालें और इसे थोड़ी देर तक पकने दें। फिर इस चायपत्ती में इलायची और चीनी डालें और चम्मच से चलाते इसे अच्छे से भून लें ताकि चीनी पिघल जाए। चीनी पिघलने के बाद इसमें अदरक और दूध डालकर अच्छे से उबाल लें। जब चाय अच्छे से पक जाए तो इसे गिलास, कुल्हड़ और कप में चाय सर्व कर सकते हैं।

रोस्टेड टी की खासियत : इस चाय को दूसरी चाय बनाने की विधि से अलग तरह से बनाया जाता है। रोस्टेड टी में चाय पत्ती और चीनी को बिना पानी के पिघलाकर पकाया जाता है। इस तरह से चाय में अलग और अनोखा स्वाद आता है। जब खाली पैन में चायपत्ती भुन जाती है और दूध के साथ पकती है, तो इसके स्वाद और कलर दोनों में बदलाव आता है। ऐसे में चीनी दूध या पानी के साथ पकने से पहले चायपत्ती धीमी आंत में पिघलती है। जिसके कारण भुनी हुई चायपत्ती का स्वाद अच्छे से मिल जाता है।

आपको बता दें कि चाय की यह वायरल रेसिपी सोशल मीडिया में जमकर ट्रेंड हो रही है। ऐसे में अगर आप चाय के प्रेमी हैं तो इस रेसिपी को ट्राई करें। आप भी इस रेसिपी को घर पर बनाकर ट्राई कर सकते हैं।

कहानी

शैतान की हार

जसविंदर शर्मा

पहले–पहल उसका नाम भोपाल सिंह पढ़कर मुझे हैरानी हुई थी।

मैंने सोचा था कि शायद वह भोपाल में पैदा हुआ। इतने बड़े ऑ6फिस में लोगों को उनके नाम से याद रखना लगभग मुश्किल ही होता है जब तक कि उनके नाम कुछ अजीब न हों। हम लोग उनके चेहरे–मोहरे या हाव–भाव से ज्यादा याद रख पाते हैं। एक–दूसरे से अन्य विवरण पूछकर काम चला लेते हैं मसलन, अच्छा वही जिसकी खिचड़ी दाढ़ी है, वह जो हॉकी का खिलाड़ी है या वह जिसकी मिसेज भी अपने ऑफिस में है।

भोपाल सिंह की मैंने आज तक शक्ल नहीं देखी थी। मन में एक उत्सुकता थी उससे मिलने की। इधर जब से मैं इस ब्रांच में आया था हर कोई उसके बारे में कुछ न कुछ अटपटा ही बता जाता।

भोपाल सिंह के अनुभाग अधिकारी से बात हुई तो उसने बताया कि साहब ऐसे लोगों से फासला बनाकर ही रखें तो ही ठीक है। सिरफिरा खड़ूस आदमी है, हर वक्त खुन्नस में रहता है क्या पता कब गाली बक दे। बहुत चंट–चालाक आदमी है। हर वक्त मोबाइल कान से सटाये रहता है। कोई काम बताओ तो सटीक बहाना बनाकर निकल जाएगा कि आज तो मिसेज को अस्पताल में दिखाना है या बेटे का जन्मदिन है या घर में लकड़ी का काम चल रहा है। मगर अगले दिन सबसे पहले आकर काम किसी तरह खत्म करके ये जा और वो जा।

पूरा दिन भोपाल सिंह कहां रहता है, लोगबाग कहने लगे कि सर, कोई न कोई प्राइवेट धंधा पीटता होगा।

दूसरा बोला, किसी लौंडिया के चक्कर में रहता है तभी तो हर वक्त मोबाइल से चिपका रहता है। बाप अफसर था, सही वक्त पर इस शहर में कोठी बना गया। भोपाल सिंह की बीवी बैंक में है। इससे ज्यादा पगार लेती है। न जाने कहां–कहां मुंह मारता फिरता है सांड की तरह खुला घूमता है सारे ऑफिस में। पन्द्रह सालों से बड़े–बड़े सख्त अफसर आए, मगर भोपाल सिंह की सजधज व शान वैसी ही है।

एक अन्य ने शक जाहिर किया, 'जनाब कोई नशे–वशे का चक्कर है। बचपन से इस लाइन में है। अफसर डरते हैं। सबको अपनी इज्जत प्यारी है। कोई पंगा नहीं लेता उससे। क्या फायदा, यह तो चुरुट चढ़ाकर मस्त हो जाएगा मगर शरीफ आदमी इसे ठीक करते–करते अपना मानसिक संतुलन खो बैठेगा।'

अब भोपाल सिंह मिले तो उससे पूछा जाए कि हर वक्त ऑफिस से भागने के पीछे क्या वजह है।

अगले दिन मैं जल्दी ऑफिस आ गया। ब्रांच अधिकारी होने के नाते मैंने भोपाल सिंह के अनुभाग का हाजिरी रजिस्टर अपने पास रखवा लिया। भोपाल सिंह मेरे केबिन में आया तो मैंने बिठा लिया।

सख्त लहजे में मैंने पूछा, 'तुम्हारी शिकायत मिली है कि तुम अपनी सीट पर पूरा दिन बैठते ही नहीं। हाजिरी लगाकर भाग जाते हो।'

'सर, मेरे काम की कोई शिकायत...।'

'काम के साथ सीट पर बैठना भी तो चाहिए।'

'मैं मानता हूं सर मगर मैं मजबूर हूं।'

'ऐसी क्या मजबूरी है तुम्हारी।'

'सर, बहुत लम्बी कहानी है।'

'कुछ तो पता चले।'

'सर, शायद आप नहीं जानते कि जवानी में मुझे नशा करने की आदत पड़ गई थी।'

'भोपाल, अब तो तुम परिवारवाले हो। अब यह सब क्यूं करते हो?'

'सर पूरी बात तो सुनिये, अब मैं यह सब छोड़ चुका हूं।'

'तो फिर क्या परेशानी है भाई।'

'आजकल मैं उन नौजवानों की मदद करता हूं जो इस भयानक लत से अपना पीछा छुड़ाना चाहते हैं। 'प्रयास' नाम की संस्था है हमारी, जो बिना किसी सरकारी मदद अपना काम करती है।'

फिर तो भोपाल सिंह ने ही बोलना जारी रखा, 'इस संस्था के प्रति मैं बहुत अहसानमंद हूं जिसने यह लत छुड़ाने में मेरी मदद की। वह दिन कितना खुशकिस्मत था जब मेरा एक दोस्त मुझे इस संस्था में लेकर आया था। शुरू में मुझे लगा था कि ये सब बेकार के चोंचले हैं मगर धीरे–धीरे उन्होंने मेरी इच्छाशक्ति को मजबूत बना ही दिया। अब मैं नार्मल जीवन जी रहा हूं।'

'उससे पहले, सर मुझमें और जानवर में कोई अन्तर नहीं था। बात बीस साल पुरानी है। मेरे पिता जी जिला खेल अधिकारी थे। शहर में अच्छी कोठी है हमारी। मेरा खेलों की तरफ अच्छा झुकाव था। गेम लगाकर हम यार–दोस्त कालेज की कैंटीन में नाश्ता लेते थे। एक सुबह मेरे पिताजी उस कैंटीन में तमतमाते हुए आए। मेरे हाथ में एक जलती हुई सिगरेट थी। न फेंकते बनता था और न ही पकड़े रखने की हिम्मत थी। पिता जी गुस्से में बोले, 'तो ये है तुम्हारी नेशनल लेवल की गेम्ज में जाने की तैयारी। मैंने गलती की जो तुम्हारी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दिया। तुम्हारी बात मानता रहा कि तुम खेल को ही करिअर बनाना चाहते हो। मुझे तो आज पता चला कि तुम गलत लोगों के साथ मिलकर क्या गुल खिला रहे हो।'

'सर, पिताजी ने सबके सामने मेरे बाल खींचकर बूटों और घूंसों से मेरी धुनाई की। बस वहीं सारी गड़बड़ हो गई। सब के सामने यूं मुझे अपमानित करके उन्होंने बगावत करने की गलत प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। मैंने अपना सारा गुस्सा कैंटीन की शीशे की खिड़की पर उतारा। ये हथेली पर निशान देख रहे हैं न

आप, यह उस दिन की निशानी है। घर नामक संस्था के खिलाफ यह मेरे गुस्से की पहली अभिव्यक्ति थी। उस दिन मैं संभल जाता तो आज अच्छी पोजीशन पर होता, मगर मैं आवारा लड़कों की सोहबत में चला गया। अब मैं शराब पीने लगा और उससे बड़े असरदार नशों की तरफ चलता गया।

घर में मैं चोरी करने लगा था। घर में पैसे मिल जाते मगर मेरी जरूरतें बढ़ती जा रही थीं। किसी तरह मैंने तीन साल लगाकर बारहवीं क्लास पास की, वह भी बहुत कम नम्बरों से। पिताजी का शहर में रसूख था। उन्होंने किसी तरह मुझे यहां बाबू लगवा दिया। उन्हें पता था कि अब मुझमें कोई सुधार नहीं हो सकता। कई केन्द्रों में उन्होंने मुझे रखकर देख लिया था। अब उनका रवैया नरम पड़ गया था। उन्होंने सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दिया था। अब उन्हें मुझ पर तरस आता था। उन्हें साफ दिख रहा था कि मैं नशे के हाथों कितना मजबूर हूं। उन्हें लगता था कि ज्यादा सख्ती करने पर मैं कहीं आत्महत्या न कर लूं। मैं दो–तीन बार ऐसी कोशिशें कर चुका था।

नौकरी लगी तो शादी भी हो गई मेरी। समय तो किसी के लिए नहीं रुकता। पिता ने इतनी समझदारी की थी कि मेरी लिए नौकरी वाली पत्नी ढूंढ़ी। मुझ पर उनका भरोसा उठ गया था क्योंकि मुझे तो अपने नशे के शौक पूरा करने के सिवा कुछ और सूझता नहीं था। एक बेटा भी पैदा हो गया, मगर उसकी ममता भी मुझे इस जानलेवा नशे की आदत से दूर न कर सकी। नशे के टीके लगा–लगाकर मेरी बांहें व टांगें गलने लगीं थी। ये देखिए मेरे निशान।

एक बार की बात है, पैसों का बहुत टोटा था। मुझे कहीं से पता चला कि आज ऑफिस में बोनस मिलना है। मैं लुंगी–कुर्ते में ही ऑफिस आ गया, बोनस लेने। सारा ऑफिस मुझ पर हंस रहा था मगर मेरी नजर मिलने वाले पैसे पर थी। सर, वह लुंगी आम लुंगी भी नहीं थी। वह एक मैली–कुचौली चादर थी जिसे रात को नीचे बिछाकर मैं बाजार के बरामदे में ही सो जाता था। पिताजी की तीन मंजिला कोठी थी मगर मैं लड़–झगड़कर कई–कई दिन बाहर ही पड़ा रहता था। घरवालों ने मुझे मरा हुआ समझ लिया था।

सर, मुझे लगता है यह सारा काम शैतान का है। अच्छे घरों के भोले बच्चों को गुमराह करना किसी देवता का काम नहीं हो सकता। हर कदम पर बीसियों बिगड़े हुए बच्चे मुझे नजर आते। कुछ मेरे चेले थे, कुछ मेरे उस्ताद। शैतान के कारोबार का मैं भी एक हिस्सेदार बन चुका था। कितने लड़कों को बुरे मार्ग पर चलने के लिए मैंने ही उकसाया था।

इतने सारे गलत लोगों के साथ रहते–रहते मुझे लगता था कि मैं गलत नहीं हूं मगर जब मैं अपने कई सहपाठियों को देखता जो अच्छे ओहदों पर हैं तो मेरा मन ग्लानि से भर जाता। अपने पिताजी की थकी–हारी निराश आंखें मुझसे देखी नहीं जाती थीं। उन्होंने मुझे ठीक रास्ते पर लाने में ही सारी उम्र लगा थी। मां तो कब की यह गम न सह सकने के कारण चल बसी थी।

फिर इस संस्था की तरफ मेरे कदम उठे। मैंने देखा कि किस तरह कुछ लोग समर्पित भाव से तन–मन–धन से हम जैसे नशेड़ी लोगों को मुख्यधारा में लाने के लिए दिन–रात मेहनत कर रहे हैं। ये वही लोग थे जिन्होंने नशे के हाथों अपनी जवानी और एम्बीशन को होम कर दिया था। आज जो बातें मैं आप से बोल रहा हूं यह सब मैंने वहीं से सीखा है। मैंने उन्हें सुना तो मुझे लगा कि उनकी बातों में दम है, यह सब उनका भोगा हुआ यथार्थ था।

आज जब मुझे पता चलता है कि फलां जगह कोई नशे का शिकार है और छोड़ने का इरादा रखता है तो मैं अपने सारे काम छोड़कर उसे अपने केन्द्र में लाता हूं और उसका इलाज शुरू करवाता हूं। हर कोई चाहता है कि वह इस नरक से बाहर निकले, मगर यह समाज उसकी मदद करने की बजाय उस पर ताने कसता है, उसकी उपेक्षा करता है। हम सब लोग शैतान को हराने में लगे हैं। सर, वह दिन कब आएगा जब हमारे केन्द्र में एक भी बच्चा नहीं होगा। वह दिन आएगा न सर। जरूर आएगा।'

भोपाल सिंह का चेहरा आंसुओं से तर था।

लघु कहानी

झुरमुट

रुचि श्रीवास्तव

आज रविवार है। मिसेस मुखर्जी के घर, रविवार का पता लगाना बहुत ही आसान है। सुबह मॉर्निंग वॉक से मिस्टर मुखर्जी का हाथ में थैला लेकर लौटना। गेट खुलने की आवाज से मिसेस मुखर्जी का हड़बड़ा कर उठना ,बालों को समेटते हुए, पैरों में नीली हवाई चप्पल डालना। कुर्सी पर रखे दुपट्टे को कंधे पर रखना और तेजी से बरामदे की ओर भागना। मेरे समीप दो मिनट रुक कर बिंदियों की झुरमुट से अपनी पसंदीदा लाल बिंदी लगाना नहीं भूलती मिसेस मुखर्जी। फिर क्या, मिस्टर मुखर्जी के हाथों से थैला लेकर सीधे रसोई घर में घुस जाना। लहसुन पीसने की आवाज, सरसों की तेल में मछलियों का तलना से, रविवार, रविवार हो जाता। रविवार का यह क्रम ऐसा ही चला रहा है। बरामदे की दीवार से ये सारा दृश्य मानो मुझ में सिमटा हुआ है।

मैं? मुझे तो एक ही बार में मिसेस मुखर्जी ने पसंद कर लिया था। दिल्ली हाट घूमाने ले गए थे मिस्टर मुखर्जी। सागवान से बनी, नुकीले नक्काशीदार किनारे, मुझे देखते ही मिसेस मुखर्जी ने अपनी लाल बिंदी ठीक की। मिस्टर मुखर्जी ने अपनी धीमी मुस्कान से अनुकृति दी। फिर क्या दिल्ली से कलकत्ता का सफर मैंने मिसेस मुखर्जी की गोद में ही तय किया,और तब से आज तक बरामदे की दीवार पर लटके हुए पूरे घर का नजारा देखती हूँ। मेरी निचले दायी कोने में मिसेस मुखर्जी की बिंदियों का झुरमुट सजा हुआ है। यह झुरमुठ ही तो इस घर में मेरी अस्तित्वता का प्रमाण देता है।

आज भी तो रविवार ही होना चाहिए। परन्तु आज मिस्टर मुखर्जी को आने में काफी देर हो गयी थी। मिसेस मुखर्जी तो अब तक पंखे की घरघराहट मैं चौन से सो रही थी। तभी अचानक लोगों की भीड़ आनी शुरू हो गई। धीरे धीरे भीड़ बढ़ने लगी। भीड़ क्या थी, सैलाब कहिये। बरामदे पर मानो आग लग गई हो। मिसेस मुखर्जी बिना बालों को समेटे, बिना हवाई चप्पलों के, बिना दुपट्टे के, बरामदे की ओर तेजी से दौड़ी और फिर चीखें ही चीखें। घंटों तक रोना चलाद्य कौतूहल मचा हुआ था।

दोपहर हुई। शाम होते भीड़ छटने लगी। दिन बीते। लोगों का आना जाना कम हुआ। मिसेस मुखर्जी की भी अब चीखें नहीं सुनाई देती। चीखें अब सिसकियों में जो बदल गयी थी।

आज बहुत दिनों बाद मिसेस मुखर्जी रसोईघर में जा रही थी। बेटे को भी वापस अमेरिका जाने का समय जो हो चुका था। बालों को समेटते हुए मेरे करीब आकर रुकी। अपनी बिंदियों के झुरमुठ में मानो कुछ ढूंढ रही हो, अपनी पसंदीदा लाल बिंदी या कुछ और? ○

कट्टरपंथी मुस्लिम शरणार्थियों से यूरोप में बढ़ी मुसीबतें

योगेंद्र योगी

यूरोपीय यूनियन के सदस्य देश लोकतांत्रिक, मानवाधिकारों की वकालत और उदारवादी चेहरा दिखाने के कारण मुस्लिम शरणार्थियों के कारण मुसीबत में फंस गए हैं। शरण लेने वाले मुस्लिम शरणार्थियों पर कट्टरपन हावी है। इन देशों के कानून मानने के बजाए शरणार्थी अपराधों में शामिल होने के साथ ही इस्लामी शासन की पैरवी कर रहे हैं। यही वजह है कि न सिर्फ युरोपीय यूनियन बल्कि उसके कुछ देशों ने साफ तौर पर मुसलमानों से देश छोड़ कर चले जाने को कहा है। इटली की प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी ने इस्लामिक संस्कृति को लेकर कहा कि यूरोप में इसके लिए कोई जगह नहीं है। उन्होंने कहा कि इस्लामी संस्कृति और हमारी सभ्यता के मूल्यों और अधिकारों के बीच कोई समानता नहीं है और यह एक बड़ी समस्या है। उन्होंने कहा कि इटली में इस्लामी सांस्कृतिक केंद्रों को सऊदी अरब फंड देता है, जहां शरिया लागू है। यूरोप में हमारी सभ्यता के मूल्यों से बहुत दूर इस्लामीकरण की एक प्रक्रिया चल रही है। इसी तरह ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने कहा कि वह शरणार्थी सिस्टम में ग्लोबर रिफॉर्म पर जोर देंगे। साथ ही उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि शरणार्थियों की बढ़ती संख्या का खतरा यूरोप के कुछ हिस्सों को प्रभावित कर सकता है।

मेलोनी की तरह ही नीदरलैंड का प्रधान मंत्री बनते ही इस्लाम विरोधी नेता गीर्ट विल्डर्स ने उन मुसलमानों से देश छोडने का आह्वान किया कि जो धर्मनिरपेक्ष कानूनों से अधिक कुरान को महत्व देते हैं। विल्डर्स ने तो यहां तक कह दिया कि हिन्दुओं का समर्थन करूंगा जिन पर केवल हिंदू होने के कारण बांग्लादेश, पाकिस्तान में हमला किया जाता है या मारने की धमकी दी जाती है या फिर मुकदमा चलाया जाता है। उन्होंने कहा कि मेरे पास नीदरलैंड के सभी मुसलमानों के लिए एक संदेश है जो हमारी स्वतंत्रता, हमारे लोकतंत्र और हमारे मूल मूल्यों का सम्मान नहीं करते हैं, जो कुरान के नियमों को हमारे धर्मनिरपेक्ष कानूनों से अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। विल्डर्स ने कहा कि मुसलमानों की संख्या 7 लाख हैं और मेरा उन्हें संदेश है, बाहर निकलो। किसी इस्लामिक देश के लिए निकल जाओ। फिर, आप इस्लामी नियमों का आनंद ले सकते हैं। ये उनके नियम हैं, लेकिन हमारे नहीं हैं। शरणार्थियों की समस्या से गले तक भर चुके यूरोपीय देशों ने अब इस समस्या के समाधान के लिए नया समझौता किया है।

यूरोपीय संघ और सदस्य देशों ने प्रवासन और प्रश्रय पर नए समझौते के जरिए अपनी प्रवासन नीति में सुधार करने का फैसला किया है। इसके तहत अनियमित रूप से आ रहे लोगों की त्वरित जाँच, सीमा पर डिटेंशन सेंटर बनाना और आवेदन अस्वीकृत होने पर शरणार्थियों को देश से बाहर करना आदि सुधार के रूप में शामिल है। हालाँकि अभी भी 27 सदस्य देशों का प्रतिनिधित्व करने वाली यूरोपीय परिषद और यूरोपीय संसद द्वारा औपचारिक रूप से समझौते को मंजूरी देने की आवश्यकता है। जिसके बाद ही यह संभवतरू वर्ष 2024 में ब्लॉक की कानूनी प्रक्रियाओं में शामिल हो पाएगा। गौरतलब है कि साल 2011 में सीरिया में शुरू हुए गृहयुद्ध के बाद लाखों सीरियाई और पड़ोसी मुल्कों से लोग भागकर यूरोप की शरण में आए थे। तभी यूरोपियन यूनियन ने वादा किया कि वो अपने देशों में लगभग 2 लाख रिफ्यूजियों को रखेगा। ग्रीस, इटली और फ्रांस में उस समय सबसे ज्यादा लोग भरे हुए थे। बाकी देश भी लोगों को स्वीकार करने लगे। इसके विपरीत पोलैंड की सरकार ने कहा था कि शरणार्थियों को रखना यानी अपनी ही तबाही के लिए बम फिट कर लेना है।

पोलैंड का यह दृष्टिकोण फ्रांस और दूसरे देशों में सही साबित हुआ। एक मुस्लिम की युवक की मौत के बाद फ्रांस में जबरदस्त दंगे भड़क उठे। ट्रैफिक पुलिस द्वारा पेरिस में चेकिंग के दौरान नाहेल को पुलिस ने गोली मार दी थी। इस घटना में नाहेल की मौत हो गई थी। पुलिसकर्मियों का इस मामले पर कहना था कि लड़के के पास गाड़ी चलाने का लाइसेंस नहीं था। चेकिंग के दौरान लड़के ने वाहन से ट्रैफिक पुलिस को कुचलने का प्रयास किया जिसके बचाव में लड़के को गोली मारी गई। इससे भड़की हिंसा की आग में फ्रांस कई दिनों तक जलता रहा। यूरोपियन इस्लामोफोबिया रिपोर्ट 2022 के मुताबिक पूरे यूरोप में इस्लाम के खिलाफ भावना तेजी से बढ़ रही है। यूरोपीय सरकारें इस्लाम और मुस्लिमों के खिलाफ क्रैकडाउन चला रहीं हैं। मस्जिदें बंद की जा रहीं हैं। इस्लामिक संगठनों पर नकेल कसी जा रही है। फ्रांस और ऑस्ट्रिया की सरकारों ने कट्टरवाद के खिलाफ अभियान के बहाने मस्जिदें बंद करवा दीं। स्विट्जरलैंड में नई मीनारों के निर्माण पर रोक लगा दी गई। डेनमार्क में अप्रवासी मुस्लिमों को हर हफ्ते 35 घंटे सिर्फ देश की संस्कृति और परंपराएं सिखाई जातीं हैं। ऑस्ट्रिया और फ्रांस में इस्लामिक अलगाववाद और पॉलिटिकल इस्लाम को परिभाषित किए बिना ही इन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बता दिया गया है। धार्मिक कट्टरपन और दूसरे देशों के कानून को नहीं मानने के कारण आने वाले वक्त में मुसलमानों को ज्यादा मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा।

विना वीजा के भारतीय इन जगहों को कर सकते हैं एक्सप्लोर
जानिए कैसे पूरा होगा विदेश जाने का सपना

अनन्या मिश्रा

विदेश जाने का सपना तो हर किसी का होता है, लेकिन अधिक बजट के चलते प्लान कैंसिल हो जाता है। ऐसे में अगर आप भी विदेश जाने के साथ ही कम बजट में ज्यादा दिनों की यात्रा करना चाहते हैं, तो अब आपका यह सपना जरूर पूरा होगा। बता दें कि न सिर्फ आप बल्कि फैमिली के साथ भी आप विदेश घूमने का सपना पूरा कर सकते हैं।

आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसी जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर जाने के लिए आपको वीजा पर 1 रुपए भी नहीं खर्च करना होगा। साथ ही आप बिना टेंशन के यहां पर फैमिली के साथ ट्रिप का आनंद उठा सकते हैं। इन जगहों पर रहना–खाना और घूमने–फिरना सब आपके बजट में फिट हो जाएगा। तो आइए जानते हैं इन जगहों के बारे में...

भूटान : अगर आपके पास इंडियन पासपोर्ट है, तो आपको भूटान जाने के लिए वीजा की जरूरत नहीं पड़ेगी। क्योंकि भूटान भारतीय यात्रियों के लिए वीजा फ्री सुविधा दे रहा है। भूटान को पूरी दुनिया में सबसे खुशहाल देश के तौर पर जाना जाता है। फैमिली के साथ घूमने के लिए यह जगह बेहद अच्छी है। वहीं भूटान भारत का सबसे करीबी पड़ोसी देश है। आप यहां पर पुराने मठों के अलावा आश्चर्यजनक किले भी देख सकते हैं, जिसके लिए यह जाना जाता है।

ऐसे में अगर आप भी भूटान जाने का प्लान कर रहे हैं, तो पुनाखा द्जोंग मठ, कुर्जे लखांग मठ और तख्तसांग मठ एक्सप्लोर करना न भूलें। अब फैमिली के साथ सस्ते टूर प्लान में आप भूटान घूमने जा सकते हैं। अगर आप परिवार के 5 सदस्यों के साथ भूटान जाते हैं, तो आपको इसके लिए 80 हजार से 1 लाख रुपए तक खर्च करना होगा।

मॉरीशस : वैसे तो मॉरीशस घूमना हर किसी का सपना होता है। बहुत से लोगों को लगता है कि मॉरीशस एक महंगी जगह है। यहां पर ट्रिप प्लान करने से पहले बजट की चिंता सताने लगती है। तो बता दें कि अब टेंशन करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि मॉरीशस जाने के लिए आपको वीजा पर खर्च नहीं करना होगा। मॉरीशस न सिर्फ दुनिया बल्कि विदेशी द्वीपों देशों में एक है। यहां के समुद्री नजारे आपको जीवन भर याद रहेंगे। ऐसे में सिर्फ 80 से 1 लाख रुपए खर्चकर आप अपनी फैमिली के साथ मॉरीशस घूमने के लिए जा सकते हैं।

श्रीलंका और थाईलैंड : जो लोग श्रीलंका और थाइलैंड को एक्सप्लोर करना चाहते हैं, उन पर्यटकों के लिए भी एक अच्छी खबर है। क्योंकि श्रीलंका और थाइलैंड दोनों ही देशों ने भारत के पर्यटकों के लिए वीजा फ्री की सुविधा मुहैया करवा दी है। ऐसे में आप बिना वीजा पर खर्च किए फैमिली के साथ इन दोनों देशों की यात्रा कर सकते हैं। अगर आप 5 मेंबर के साथ ट्रिप प्लान कर रहे हैं। तो आपको 1 से 2 लाख रुपए खर्च करने होंगे।

अब अन्य देशों की कम्पनियों का अधिग्रहण कर रही हैं भारतीय कम्पनियां

प्रह्लाद सबनानी

हाल ही के समय में कई भारतीय कम्पनियां बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का स्वरूप ग्रहण करती नजर आ रही हैं। कुछ भारतीय कम्पनियां अन्य देशों की कम्पनियों में न केवल अपना पूंजी निवेश बढ़ा रही हैं बल्कि कुछ कम्पनियां अन्य देशों की कम्पनियों का अधिग्रहण भी कर रही हैं। एक महत्वपूर्ण तथ्य उभरकर सामने आ रहा है कि भारत कई ऐसे देशों, जो आपस में शायद मित्र देश की भूमिका में नहीं हैं इसके बावजूद भारत दोनों देशों, के साथ अपने व्यापारिक रिश्तों को बढ़ाता नजर आ रहा है। उदाहरण के लिए, यूनाइटेड अरब अमीरात, कतर एवं सऊदी अरब आदि देश मिडल ईस्ट में भारत के महत्वपूर्ण व्यापार भागीदार हैं एवं ये देश भारत में भारी राशि का निवेश कर रहे हैं। सऊदी अरब तो भारत में 10,000 करोड़ अमेरिक डॉलर का निवेश करने जा रहा है। परंतु, हाल ही के कुछ वर्षों में मिडल ईस्ट के कुछ देशों के साथ ही, इजराईल के साथ भी भारत के मिलिटरी, राजनैतिक एवं व्यापारिक सम्बंध प्रगाढ़ हुए हैं। न केवल इजराईल की कंपनियां भारत में निवेश कर रही हैं बल्कि कई भारतीय कम्पनियां भी इजराईली कम्पनियों में निवेश कर रही हैं एवं कुछ कम्पनियों का अधिग्रहण कर रही हैं। इस प्रकार भारत के अरब देशों के साथ साथ इजराईल के साथ भी प्रगाढ़ व्यापारिक रिश्ते कायम हो गए हैं। कई भारतीय कम्पनियां इजराईल के स्टार्ट अप में भारी मात्रा में निवेश करती दिखाई दे रही हैं। चूंकि भारत का सकल घरेलू उत्पाद अब लगभग 4 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को छूने जा रहा है, अतः भारतीय कम्पनियां अब इस स्थिति में पहुंच गई हैं कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की तरह अन्य देशों में विभिन्न क्षेत्रों में कम्पनियों का अधिग्रहण कर सकें अथवा इन विदेशी कम्पनियों में अपना पूंजी निवेश बढ़ा सकें। इस दृष्टि से भारत की कुछ बड़ी कम्पनियां जैसे रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (मुकेश अम्बानी समूह), इनफोसिस, विप्रो, टाटा समूह, अडानी समूह आदि इजराईल की कम्पनियों का अधिग्रहण करने में सफलता हासिल कर रही हैं।

हाल ही में रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड, इजराईल में सेमीकंडक्टर चिप का निर्माण करने वाली एक कम्पनी टावर सेमीकंडक्टर नामक कम्पनी का अधिग्रहण करने का प्रयास कर रही है। सेमीकंडक्टर चिप के उपयोग हेतु भारत में बहुत बड़ा बाजार उपलब्ध है, इससे इस उत्पाद के लिए अन्य देशों पर भारत की निर्भरता कम होगी। इजराईल की उक्त कम्पनी पूर्व में ही भारी मात्रा में सेमीकंडक्टर चिप का निर्माण कर रही है। पूर्व में अमेरिकी कम्पनी इंटेल ने उक्त कम्पनी को 540 करोड़ अमेरिकी डॉलर में खरीदने का प्रयास किया था परंतु इंटेल को इस कार्य में सफलता नहीं मिल सकी थी। परंतु, अब भारत की रिलायंस इंडस्ट्रीज इस कम्पनी को खरीदने का प्रयास कर रही है। टावर सेमीकंडक्टर वर्ष 2009 में केवल 30 करोड़ अमेरिकी डॉलर का व्यापार करती थी परंतु यह वर्ष 2022 में इस कम्पनी का व्यापार बढ़कर 168 करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को पार कर गया है। अतः यह कम्पनी अत्यधिक तेज गति से प्रगति कर रही है।

भारत में दवाईयों का निर्माण करने वाली एक कम्पनी सन फार्मा ने भी इजराईल की टेरो फार्मा नामक एक कम्पनी को अपनी सहायक कम्पनी बना लिया है। इससे भारतीय सन फार्मा कम्पनी का विस्तार इजराईल में भी हुआ है। सन फार्मा को नई तकनीकी को विकसित करने में भी सहायता मिली है। इसी प्रकार, भारतीय कम्पनी अदानी पोर्ट्स एंड लाजिस्टिक्स ने इजराईल के सबसे बड़े हाईफा पोर्ट का विस्तार करने का कार्य हाथ में लिया है। इस विस्तार के कार्य पर 115 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि खर्च होगी। वर्ष 2021 में इजराईल के कुल विदेशी व्यापार का लगभग 56 प्रतिशत हिस्सा इसी पोर्ट के माध्यम से हो रहा था। टाटा समूह की टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) नामक सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनी भी इजराईल में अपने व्यापार का लगातार विस्तार कर रही है। भारत की इनफोसिस कम्पनी ने इजराईल की सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की पनाया नामक कम्पनी का 20 करोड़ अमेरिकी डॉलर में अधिग्रहण कर लिया है।

भारत का टाटा समूह इजराईल के एयर

स्पेस में कार्य कर रही कम्पनियों एवं सुरक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही कम्पनियों में अपना निवेश बढ़ा रहा है ताकि इन क्षेत्रों में इजराईल की कम्पनियों के साथ मिलकर कार्य किया जा सके। इजराईल के पास सुरक्षा उपकरण बनाने की नवीनतम तकनीक उपलब्ध है। भारत एवं इजराईल अब टैंक्स एवं राडार के निर्माण का कार्य साथ मिलकर करने जा रहे हैं। वैसे भी भारत एवं इजराईल के बीच मिलिटरी सैन्य समझौता पूर्व में ही किया जा चुका है। इसी प्रकार के समझौते, उद्योग के क्षेत्र में रिसर्च, आर्थिक विकास के लिए एक दूसरे के साथ भागीदारी, विशेष रूप से स्वास्थ्य, एयरो स्पेस एवं इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों में भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से भी किए जा रहे हैं। आरटीफिशियल इंटेलिजेन्स के क्षेत्र में निजी क्षेत्र द्वारा किए जा रहे निवेश के मामले में अमेरिका, चीन एवं यूनाइटेड किंगडम के बाद इजराईल, पूरे विश्व में, चौथे स्थान पर है। अतः भारत की इजराईल के साथ व्यापार के क्षेत्र में बढ़ती भागीदारी का लाभ भारत को भी मिलने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है।

इजराईल में भारतीय इंजीनीयरों की संख्या भी तेजी से बढ़ती जा रही है। आज इजराईल में सॉफ्टवेयर विकसित करने हेतु 18,000 से अधिक इंजीनियर कार्य कर रहे हैं और यह संख्या अमेरिका में कार्य कर रहे इंजीनियरों की तुलना में बहुत कम जरूर है परंतु अब तेजी से भारतीय इजनीयरों की मांग इजराईल में बढ़ रही है। सुरक्षा के क्षेत्र में भी इजराईल भारत का एक महत्वपूर्ण भागीदार है। भारत इजराईल से हाई क्वालिटी ड्रोन, मिसाईल, एवं अन्य उपकरण आदि खरीदता है। इजराईल–हम्मास युद्ध के बाद से इजराईल में कार्य कर रहे फिलिस्तिनियों को इजराईल से बाहर निकाल दिया गया है। अतः अब इजराईल ने एक लाख भारतीय कामगारों की मांग भारत सरकार से की है। उधर, ताईवान ने भी एक लाख भारतीय कामगारों की मांग की है। अब विभिन्न देशों में भारतीय कामगारों की मांग भी बढ़ती जा रही है।

भारतीय कम्पनियां इसी प्रकार ब्रिटेन की कम्पनियों में भी अपना निवेश बढ़ा रही हैं। टाटा समूह ने ब्रिटेन की कोरस नामक कम्पनी में 217 करोड़ यूरो का पूंजी निवेश किया है। रिलायंस समूह ने बैटरी का निर्माण करने वाली एक फरडीयन नामक कम्पनी में 10 करोड़ यूरो का पूंजी निवेश किया है। टाटा समूह ने टेटली नामक कम्पनी में 4 करोड़ से अधिक यूरो का पूंजी निवेश किया है। टाटा मोटर्स ने जगुआर लैंड रोवर्स नामक कम्पनी का अधिग्रहण कर लिया है एवं टाटा मोटर्स 400 करोड़ यूरो का अतिरिक्त पूंजी निवेश इस कम्पनी में करने जा रही है। इसी प्रकार के पूंजी निवेश करते हुए सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र की विभिन्न भारतीय कम्पनियां जैसे विप्रो एवं इनफोसिस आदि, भी ब्रिटेन की कम्पनियों का अधिग्रहण कर रही हैं। टाटा केमिकल्स लिमिटेड भी कुछ अन्य कम्पनियों में अपना पूंजी निवेश बढ़ा रही है। यूनाइटेड किंगडम के लिए, भारत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का दूसरा सबसे बड़ा स्त्रोत बन गया है। आज भारत की 954 कम्पनियां यूनाइटेड किंगडम में कार्य कर रही हैं एवं वहां 106,000 नागरिकों को रोजगार प्रदान कर रही हैं।

भारतीय कम्पनियों द्वारा इजराईल एवं ब्रिटेन की कम्पनियों के अधिग्रहण एवं इन कम्पनियों में किए जाने वाले पूंजी निवेश से भारतीय कम्पनियों की साख पूरे विश्व में बढ़ रही है एवं अब कुछ भारतीय कम्पनियां भी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की श्रेणी में गिनी जाने लगी हैं।

गूगल ड्राइव से गायब हो रहे डॉक्यूमेंट्स ने बढ़ाई यूजर्स की चिंता

अनिमेष शर्मा

गूगल ड्राइव का एक अचानक गायब हो जाना, जो लाखों यूजर्स को परेशानी में डाल दिया है, उसने इंटरनेट संचार की दुनिया में हलचल मचा दी है। यह खबर बड़ी ही चौंका देने वाली है क्योंकि गूगल ड्राइव ने लोगों को उनके महत्वपूर्ण डाटा और जानकारी को सुरक्षित रखने की विश्वासनीयता दी है।

जब गूगल ड्राइव पर पहली बार गड़बड़ी की खबर आई, तो लोगों में चिंता और उत्सुकता की भावना छाई। इंटरनेट पर इस तरह की सुरक्षा संबंधित समस्याओं को लेकर जब कोई अनियमितता आती है, तो यूजर्स खुद को सुरक्षित महसूस नहीं करते। गूगल ड्राइव के इस अनियमित गायब हो जाने से, यूजर्स के मानसिक स्थिति पर भी असर पड़ा है।

इस समस्या के चलते बहुत से यूजर्स अपनी व्यक्तिगत, पेशेवर और महत्वपूर्ण डेटा को लेकर चिंतित हो गए हैं। यह डेटा हमारे लिए अनमोल होता है, और जब ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है, तो हर कोई खोखला महसूस करता है। गूगल ड्राइव को लेकर ऐसी समस्याएं जोरदार होती हैं क्योंकि वहाँ संग्रहित जानकारी का होना हर यूजर के लिए महत्वपूर्ण होता है।

इसी बीच, गूगल की तरफ से इस मामले में स्पष्टीकरण और जानकारी नहीं आई है। लोगों में यह सवाल है कि ऐसा होता ही क्यों है और वे अपने डेटा को कैसे सुरक्षित रख सकते हैं।

इस तरह की स्थिति में, हमें जागरूक रहना जरूरी है। हमें अपने डेटा को सुरक्षित रखने के लिए नियमित रूप से बैकअप लेना चाहिए। अपने डेटा को सिक्योर और सुरक्षित स्थान पर स्टोर करने के लिए अलग–अलग विकल्प भी होते हैं जैसे कि अन्य क्लाउड स्टोरेज सर्विसेज और एक्स्टर्नल हार्ड ड्राइव्स।

साथ ही, यह भी आवश्यक है कि हम सुरक्षा संबंधित सुझावों का पालन करें, जैसे कि डेटा को एन्क्रिप्टेड रखना, स्ट्रांग पासवर्ड्स का इस्तेमाल करना और अपने एकाउंट को बार–बार चेक करना।

अब, यह समझना जरूरी है कि ऑनलाइन सुरक्षा का एक सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। हमें अपने डेटा की सुरक्षा को लेकर सचेत रहना चाहिए और अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी भी उठानी चाहिए। गूगल जैसी बड़ी कंपनियों के बावजूद भी हमें अपने डेटा को सुरक्षित रखने की सावधानी बरतनी चाहिए।

अब इस तरह की स्थिति में हमारा ध्यान अपने डेटा की सुरक्षा पर जाना चाहिए ताकि हम इस तरह के अनियमितताओं से बच सकें। सभी यूजर्स को सुरक्षित और अस्तित्व में अपने डेटा को रखने के लिए सजग रहना चाहिए।

आपकी डाक सुविधाओं को भी उपभोक्ता कानून का संरक्षण

यदि डाक विभाग की किसी सेवा में कोई विलंब, कमी या चूक पायी जाये अथवा सामान खराब हो जाये तो प्रभावित व्यक्ति उपभोक्ता आयोग का द्वार खटखटा सकता है। यानी राहत मांग सकता है। यदि डाक विभाग की किसी सेवा में कोई विलंब, कमी या चूक पायी जाये अथवा सामान खराब हो जाये तो प्रभावित व्यक्ति उपभोक्ता आयोग का द्वार खटखटा सकता है। यानी राहत मांग सकता है।

श्रीगोपाल नारसन

डाक विभाग की सेवाएं भी उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 के दायरे में आती हैं। उपभोक्ता की डाक का समय से गन्तव्य तक न पहुंचना, बचत या सावधि खाते में किसी अनियमितता का होना या फिर अन्य कोई निर्धारित मूल्य अदा करके ली गई सेवा में कोई कमी या लापरवाही पाया जाना आदि मामलों में प्रभावित उपभोक्ता न्याय के लिए उपभोक्ता आयोग का दरवाजा खटखटा सकता है। अगर किसी ने स्पीड पोस्ट से या फिर पंजीकृत डाक से कोई पत्र या कागजात भेजे हैं अथवा कोई पार्सल किया है और वह रास्ते में गुम हो जाता है या क्षतिग्रस्त हो जाता है या फिर देरी से पहुंचता है तो इसके लिए वाजिब राहत प्राप्त करने के लिए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत उक्त सेवाएं लेने वाले को एक उपभोक्ता माना जाएगा।

सेवा के लिए शुल्क भुगतान : भारतीय डाकघर अधिनियम, 1898 की धारा 6 के आधार पर भी डाक विभाग अपने दायित्व से बच नहीं सकता। उपभोक्ता राज्य आयोग ने राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग के विधिक निर्णयों के आधार पर, स्पीड पोस्ट के गन्तव्य तक पहुंचने में हुई 19 दिनों की देरी के लिए डाक विभाग को जिम्मेदार ठहराया है। डॉ. रवि अग्रवाल बनाम स्पीड पोस्ट, राजस्थान यूनिवर्सिटी, 2019 में भी राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग द्वारा इसी तरह का विधिक सिद्धांत प्रतिपादित किया गया था। कोई व्यक्ति जिसने स्पीड पोस्ट भेजी है, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 के अंतर्गत इसलिए आता है क्योंकि उसने इसके लिए शुल्क का भुगतान किया था।

स्पीड पोस्ट में देरी को लेकर जवाब

एक उपभोक्ता ने एमएससी में अपने प्रवेश के लिए आवेदन पत्र दिनांक 22 जून, 2012 को स्पीड पोस्ट के माध्यम से, जेएनयू, दिल्ली से भेजा था,उक्त पोस्ट को 27 जून, 2012 तक यूक्रेन तक पहुंचना था। डाक विभाग की लापरवाही के कारण, स्पीड पोस्ट पहुंचने में 19 दिनों की देरी हुई, और इसके परिणामस्वरूप, उसने उच्च पाठ्यक्रम में प्रवेश का अवसर खो दिया। उसने देरी का कारण जानने की कोशिश की, लेकिन डाक विभाग ने कोई कारण नहीं बताया। इसके विपरीत, डाक विभाग ने तर्क दिया कि वह भारतीय डाकघर एक्ट की धारा 6 के आधार पर डाक द्वारा प्रसारण के दौरान किसी भी डाक वस्तु के नुकसान, देरी, क्षति या गलत वितरण के लिए किसी भी दायित्व से मुक्त है।

मामले और विवाद पर गौर करते हुए, राज्य आयोग ने एनसीडीआरसी द्वारा तय किए गए मामलों पर भरोसा किया, जिसमें राष्ट्रीय आयोग ने स्पष्ट रूप से माना था कि स्पीड पोस्ट एंटरप्राइजेज उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम में निर्दिष्ट ग्राहक है और डाक विभाग अपने दायित्व से बच नहीं रहा है। पूर्वोक्त दस्तावेज और उदाहरणों पर पोर्टफोलियो के साथ, राज्य आयोग को जिला आयोग द्वारा जारी आदेश में कोई कमी नहीं मिली।

लापरवाही को लेकर शिकायत : इसी प्रकार के अन्य मामले में अभ्यर्थी ने डाक विभाग के कर्मियों के अलावा बेगूसराय के जिलाधिकारी से शिकायत की, जिलाधिकारी ने उक्त मामले में डाक विभाग से स्पष्टीकरण मांगा है। बेगूसराय के बरौनी मिर्जापुर चांद निवासी मिथुन कुमार पोद्दार का आरोप है कि डाक विभाग की लापरवाही की वजह से उनकी एक साल की मेहनत बेकार हो गई। 19 मार्च 2023 को उन्हें यूको बैंक की तरफ से आयोजित सहायक की परीक्षा में शामिल होना था, जिसके लिए विभाग की तरफ से एक मार्च को ही एडमिट कार्ड जारी कर दिया गया, लेकिन डाक विभाग के कर्मियों की लापरवाही की वजह से उन्हें इस परीक्षा का एडमिट कार्ड 5 अप्रैल को दिया गया। इस मामले में पीड़ित पक्ष उपभोक्ता आयोग में उक्त बाबत शिकायत दर्ज करा सकता है।

डॉक्यूमेंट फेंकने के मामले की जांच

इसी प्रकार सुल्तानपुर जिले में डाक विभाग के कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में आधार कार्डों को आवंटित करने के बजाय कूड़े में फेंक दिया। मामले की जानकारी होने पर सहायक डाक अधीक्षक ने जांच कराने की बात कही है। बिहार के मधुबनी जिले से भी डाक विभाग की भारी लापरवाही के कारण कई आधार कार्ड नदीं में तैरते हुए मिले हैं। सभी आधार कार्ड आसपास के ग्रामीणों के हैं। मौके पर पहुंची स्थानीय पुलिस की देखरेख में करीब 800 आधार कार्ड नदी से निकाले गए हैं।

डाक टिकट जारी करने में लापरवाही : ऐसे ही मामले के तहत कानपुर क्षेत्र के प्रधान डाकघर ने अंतर्राष्ट्रीय डॉन छोटा राजन और यूपी के कुख्यात मुजरिम मुन्ना बजरंगी का डाक टिकट जारी कर दिया। यह टिकट 'माइ स्टाम्प' स्कीम के तहत जारी किया गया। दोनों के नाम से जारी इन डाक टिकटों के पहले उनके बारे में कोई जानकारी नहीं जुटाई गई और न ही फोटो मैच किया गया। इसके लिए 600 रुपये की फीस भी ली गई है,जबकि पोस्ट मास्टर ने डाक टिकट जारी कराने के लिए व्यक्ति को खुद आना पड़ता है। वेबकैम के सामने फोटो खिंचवाई जाती है। इन मामलों में प्रभावित व्यक्ति या फिर कोई पंजीकृत संस्था उपभोक्ता आयोग जा सकती है और इस तरह की पुनरावृत्ति पर रोक लग सकती है। (लेखक उत्तराखंड राज्य उपभोक्ता आयोग के वरिष्ठ अधिवक्ता हैं।)

पुस्तक समीक्षा

बेहद गहरे अर्थ लिये विचारोत्तेजक कविताएं

सुरजीत सिंह

पुस्तक—दुश्चक्र में स्रष्टा, लेखक—वीरेन डंगवाल, प्रकाशक—राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ—142, मूल्य—रु. 199।

हिंदी कवि वीरेन डंगवाल का प्रस्तुत कविता संग्रह 'दुश्चक्र में स्रष्टा' साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित है। संग्रह में संकलित कविताएं जहां व्यवस्था पर गहरा कुठाराघात करती हैं वहीं आशावादी दृष्टिकोण से ओतप्रोत हैं।

गढ़वाल में जन्मे वीरेन डंगवाल ने आधुनिक हिंदी कविता के मिथकों और प्रतीकों पर वृहद अध्ययन किया है। इसके साथ ही वे हिंदी और अंग्रेजी की पत्रकारिता भी करते हुए विभिन्न अखबारों से संबद्ध रहे। विश्व के कुछ एक प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं का रूपांतरण भी उन्होंने किया। प्रस्तुत संग्रह की कविताएं बेशक गहरे अर्थों को लेकर चलती हैं, परंतु साधारण पाठक कविताओं में रसात्मकता की कमी महसूस करता है। फिर भी कविताएं आशावादी दृष्टिकोण रखती हैं। उनके आशावादी दृष्टिकोण की एक सशक्त झलक उनकी कविता 'शमशेर' में कुछ तरह से मिलती है—'रात आईना है मेरा, जिसके सख्त ठंडेपन में भी, छुपी है सुबह, चमकीली साफ।'

इसी तरह से 'रात की रानी' कविता में कवि ने रात का सुरम्य दृश्य इस प्रकार से प्रस्तुत किया है – 'एक सुरीली घंटी के साथ, जैसे एकदम खिल पड़ती है रात, एक भीनी महक जो बनी रहती है चौबीसों घंटे, जैसे एक चोर नशाः जैसे प्रेम सदा—सा गोपनीय।'

मनुष्य द्वारा प्रकृति के संहार को लेकर कवि अपनी कविता में उद्गार कुछ यों प्रस्तुत करता है – 'कहां से चले आए ये गमले सुसज्जित कमरों के भीतर तक, प्रकृति की छटा छिटकाते, जबकि काटे जा रहे थे जंगल के जंगल, आदिवासियों को बेदखल करते हुए?'

अपना घर जुटाने की फिराक में आम आदमी जीवनपर्यंत संघर्ष करता रहता है। तब कहीं जाकर उसे घर मयस्सर होता है। इसी पीड़ा को वीरेन डंगवाल ने अपनी कविता में इस तरह से उतारा है—'आखिरकार मुझे एक घर मयस्सर हुआ, यह घर सारा जीवन मेरे साथ चलेगा, बैंक की किश्तों की तरह।'

कंप्यूटर युग की शुरुआत का जहां आधुनिकता के पहरेदारों ने जी खोलकर स्वागत किया, वहीं कवि ने कंप्यूटर के प्रति अपनी वितृष्णा को कुछ इस तरह से व्यक्त किया—'वातानुकूलित, स्वच्छता, सुरीली कट्ट टक, जूते चप्पल बाहर, सिगरेट हरगिज नहीं, पान थूकना तो बाहर जाओ, ऐसी नक्शेबाज मशीन पर मैं लानत भेजता हूं।'

व्यवस्था पर तीखा कटाक्ष और असहाय जन की विवशता को कवि ने जोरदार शब्दों में कविता के माध्यम से व्यक्त किया है। जैसे—'बावर्दी बेवर्दी हत्यारे, रौंद रहे गांव—गांव, नगर—नगर, एक प्रेतलीला—सी जैसे चलती है लगातार, दिल को मुट्ठी में भींचे, घसीट लेता चला जाता है कोई।'

वैश्वीकरण के इस युग में जन—साधारण की व्यवस्था के प्रति खीझ की एक और बानगी कवि ने यहां प्रस्तुत की है—'उन खुशबुओं से कोई ऐतराज नहीं मुझे, जो वैश्वीकरण के इन दिनों इतनी भरपूर हैं, कि ठसाठस भरी बसों में भी, गला दबोच लेती हैं।' ठहरी हुई जिंदगी को कवि ने इन शब्दों में कविता के माध्यम से उकेरा है—'अजीब शख्स थे तुम, ताउम्र एक भोंडी हंसी हंसते रहे, जिंदा जले, मरे तो बहाए गए, ऐसे ही उटकर्मों से बना था तुम्हारा संक्षिप्त जीवन।' संग्रह में सभी कविताएं गहरे और व्यापक अर्थ रखती हैं।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक राहुल कुमार तिवारी द्वारा दिशेरा प्रेस, श्याम नगर, खम्भापुर, फतेहपुर से मुद्रित तथा ग्राम व पोस्ट : जमुई पंडित, मकान नं. 191, थाना—निचलौल, तहसील—निचलौल, जिला—महराजगंज पिन कोड—273207 (उ. प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक : राहुल कुमार तिवारी

अयोध्या के लता मंगेशकर चौक में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विमर्श करते हुए।

अयोध्या में महर्षि वाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का उद्‌घाटन करते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी। साथ में हैं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अयोध्या में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अभिनन्दन करते हुए। साथ में हैं उप्र के उप मुख्यमंत्री द्वय ब्रजेश पाठक और केशव प्रसाद मौर्य।